सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 28, नई दिल्ली । मंगलवार, 08 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एक चित भाव से समर्पित होना पड़ेगा।

03 सिंधी रॉयल क्लब सिंधी चेटी चंड मेला का पंजाबी बाग़ में करेगा आयोजन
06 बच्चे बचपन में अपनी माँ से बहुत कुछ सीखते हैं। विजय गर्ग
08 मारवाड़ी युवा मंच सिकंदराबाद शाखा द्वारा रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया

नंबर प्लेट पढ़कर एआइ कैमरे देंगे उम्र पूरी कर चुके वाहन की जानकारी....

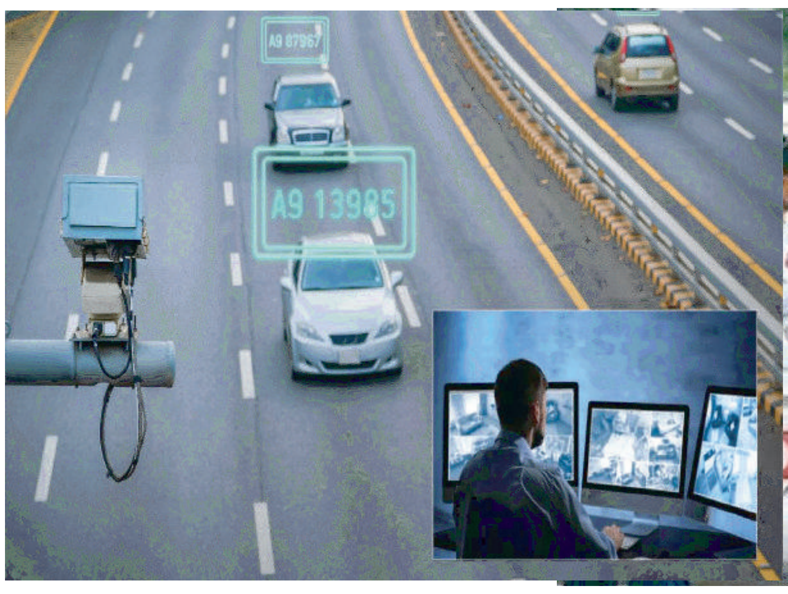

संजय बाटला

दिल्ली सरकार अब पुराने वाहनों को पेट्रोल पंपों पर ईंधन नहीं देने जा रही है। पेट्रोल पंपों पर लगे एआइ कैमरों की मदद से वाहनों की आयु की पहचान की जाएगी और अगर वाहन पुराना है तो उसे ईंधन नहीं दिया जाएगा। यह व्यवस्था 15 से 20 अप्रैल के बीच शुरू होने की उम्मीद है। इनमें 10 साल पुराने डीजल और 15 साल पुराने पेट्रोल वाहन शामिल हैं।

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार पेट्रोल पंपों पर ऐसी व्यवस्था स्थापित करने जा रही है कि ऐसे वाहन जो अपनी आयु पूरी कर चुके हैं, उन्हें पेट्रोल पंप पर ईंधन नहीं दिया जाएगा। वहां लगे एआइ कैमरों की मदद से वाहनों की आयु की पहचान की जाएगी।

इसका मतलब यह है कि पेट्रोल पंप पर मौजूद कर्मचारियों समेत सभी को यह जानकारी मिल जाएगी कि वहां कोई पुराना वाहन आया है। अगर वाहन पुराना है तो लाउडस्पीकर पर घोषणा होने पर वाहन मालिकों को पेट्रोल-डीजल नहीं दिया जाएगा। यह सुविधा पहले एक अप्रैल से शुरू होने वाली थी, लेकिन तैयारियां पूरी न होने के कारण अब इसके 15 से 20 अप्रैल के बीच शुरू होने की उम्मीद है।

इस तरह कैमरे से होगी पहचान

ये एआइ कैमरे वाहन पोर्टल से जुड़े रहेंगे। ये वाहन के प्रदूषण प्रमाण पत्र, वाहन पुराना है या नहीं और इंश्योरेंस की भी जानकारी देंगे। प्रदूषण प्रमाण पत्र न होने पर वाहन मालिक के मोबाइल नंबर पर मैसेज भेजा जाएगा। सूत्रों का कहना है कि ट्रायल के तौर पर कुछ पेट्रोल पंपों पर प्रदूषण प्रमाण पत्र न होने का मैसेज भेजने की व्यवस्था शुरू की गई है, जो सफल रही है।

सूत्रों ने बताया कि पहले कहा जा रहा था कि दो घंटे की चेतावनी के बाद पेट्रोल पंपों पर पहुंचने वाले बिना पीयूसीसी वाले वाहनों का 10 हजार रुपये का चालान काटा जाएगा, लेकिन नई सरकार ने इस संबंध में कोई निर्णय नहीं लिया है।

इस सिस्टम के तहत पेट्रोल पंपों पर लगाए जा रहे स्पीकर ऑटोमेटिक अनाउंसमेंट करके अपनी उम्र पूरी कर चुके वाहनों की जानकारी देंगे। सिस्टम के तहत एआई कैमरा वाहन के पुराने होने के बारे में अलर्ट देगा जो पेट्रोल पंप के डैशबोर्ड पर फ्लैश होगा और फिर स्पीकर वाहन की उम्र बताने की घोषणा करने लगेगा।

वाहन की उम्र पूरी होने की पता लगाएगी सिस्टम

दरअसल, ये एआई कैमरे सरकार के वाहन पोर्टल से जुड़े होंगे, जिसके जरिए सिस्टम वाहन की उम्र पूरी होने की जानकारी हासिल कर सकेगा।

दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में मौजूद लगभग सभी 400 पेट्रोल पंपों पर यह व्यवस्था की जा रही है। पिछले साल तक दिल्ली में 59 लाख वाहनों का पंजीकरण रद्द किया जा चुका है। इनमें 10 साल पुराने डीजल और 15 साल पुराने पेट्रोल वाहन शामिल हैं।

इनमें से कितने वाहन सड़कों पर दौड़ रहे हैं, इसका कोई सटीक आंकड़ा नहीं है। लेकिन, कुछ वाहन स्क्रैप हो चुके हैं और कुछ ने एनओसी लेकर दूसरे राज्यों में अपने वाहनों का पंजीकरण करा लिया है। दिल्ली पेट्रोल डीलर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष निश्चल सिंघानिया ने कहा कि दिल्ली के पेट्रोल पंप मालिक प्रदूषण रोकने में सरकार के साथ हैं।

पैसा बहुत कुछ है, लेकिन सब कुछ नही है

जीवन आनन्द के लिए है, चाहे जो हो, बस मुस्कुराते रहो। यदि आप चिंतित हो, तो खुद को थोड़ा आराम दो, हो सके तो ज़रूरत मंदो की सहायता करो।

यह अंग्रेजी वर्ण, हमें सिखाते हैं :-

A B C ?
Avoid Boring Company.
मायूस संगत से, दूरी बनाए रखना।

_D E F...?
Dont Entertain Fools.
मूर्खो पर, समय व्यर्थ मत करो।

_G H I...?
Go For High Ideas.
ऊँचे विचार रखो।

_J K L M...?
Just Keep A Friend Like Me.
मेरे जैसा, मित्र रखो।

_N O P...?
Never Overlook The Poor n Suffering.
गरीब व पीड़ित को ,कभी भी, अनदेखा मत करो!

Q R S...?
Quit Reacting To Silly Tales.
मूर्खो को , भूलकर भी प्रतिक्रिया मत दो !

T U V...?
Tune Urself For Ur Victory.
खुद की जीत, सुनिश्चित करो!

W X Y Z...?
We Xpect You To Zoom Ahead In Life
इसलिये, हम आपसे, जीवन में, आगे देखने की, आशा करते हैं।

1. यदि आपने चाँद को देखा, तो आपने ईश्वर की सुन्दरता देखी!
2. यदि आपने सूर्य को देखा, तो आपने ,ईश्वर का बल देखा!
3. और यदि आपने आईना देखा, तो आपने ईश्वर की, सबसे सुंदर रचना देखी!

इसलिए, स्वयं पर विश्वास रखो. जीवन में हमारा उद्देश्य होना चाहिए :-

9, 8, 7, 6, 5, 4, 3, 2, 1, 0
9 - गिलास पानी
8 - घण्टे नींद
7 - यात्रायें परिवार के साथ
6 - अंकों की आय
5 - दिन हफ्ते में काम
4 - चक्का वाहन
3 - बेडरूम वाला फ्लैट
2 - अच्छे बच्चे।
1 - जीवन साथी
0 - चिन्ता...?

- संजय बाटला

देश की पहली तीन कोच की मेट्रो दिल्ली में, क्या होगा रूट और कितने होंगे स्टेशन...

दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (डीएमआरसी) का लाजपत नगर-साकेत जी ब्लॉक रूट पर तीन कोच वाली ट्रेन चलेगी। यह कॉरिडोर आठ किलोमीटर लंबा होगा। यह देश में पहली तीन कोच वाली मेट्रो लाइन होगी और इसके प्लेटफार्म भी छोटे होंगे। इसमें लगभग 80 हजार लोग रोजाना सफर कर सकेंगे। आइए जानते हैं इस कॉरिडोर पर कौन से 8 स्टेशन होंगे और उसके क्या फायदे होंगे।

नई दिल्ली। फेज चार की लाजपत नगर-साकेत जी ब्लॉक मेट्रो लाइन देश की पहली ऐसी मेट्रो लाइन होगी जिस पर तीन कोच की मेट्रो ट्रेनें चलेंगी। इस कॉरिडोर पर पहला और आखिरी दोनों स्टेशन वर्तमान दो इंटरचेंज स्टेशन से जुड़े होंगे और कॉरिडोर लाजपत नगर मार्केट व सलेक्ट सिटी वॉक मॉल को मेट्रो नेटवर्क से जोड़ेगा।

कितनी होगी मेट्रो कॉरिडोर की लंबाई?

दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) का कहना है कि व्यस्त समय में इस कॉरिडोर पर जितने यात्रियों के सफर करने का अनुमान है उसे तीन कोच की मेट्रो से आसानी से पूरा किया जा सकता है।

करीब आठ किलोमीटर लंबे इस एलिवेटेड मेट्रो कॉरिडोर पर आठ स्टेशन होंगे। यह वर्तमान ग्रे लाइन (द्वारका-ढांसा बस स्टैंड) दिल्ली मेट्रो का दूसरा सबसे छोटा कॉरिडोर होगा।

इन स्टेशनों के प्लेटफार्म सामान्य मेट्रो स्टेशनों की तुलना में छोटे होंगे। देश में चार, छह व आठ कोच की मेट्रो का परिचालन हो रहा है। स्टैंडर्ड गेज के वर्तमान कॉरिडोर के मेट्रो स्टेशनों के प्लेटफार्म की लंबाई सामान्य तौर पर 140 मीटर है। स्टेंडर्ड गेज के कॉरिडोर पर अभी छह कोच की मेट्रो का परिचालन हो रहा है।

कब से शुरू होगा काम?

वहीं लाजपत नगर-साकेज जी ब्लॉक कॉरिडोर के प्लेटफार्म की लंबाई 74 मीटर होगी। डीएमआरसी ने इस कॉरिडोर के निर्माण के लिए जनवरी में टेंडर प्रक्रिया शुरू थी।

टेंडर आवंटन के बाद जल्द ही इसका निर्माण शुरू हो जाएगा और करीब तीन वर्ष में बनकर तैयार होगा। प्लेटफार्म छोटे व तीन कोच की मेट्रो का परिचालन होने से इस कॉरिडोर के निर्माण व संचालन शुरू करने में लागत कम आएगी।

रोजाना कितने यात्रियों को होगी सुविधा?

योजना के अनुसार यह कॉरिडोर वर्ष 2025 से पहले बनकर तैयार होनी थी, लेकिन इस कॉरिडोर को पिछले वर्ष ही निर्माण के लिए सरकार से स्वीकृति मिली। यदि यह कॉरिडोर बनकर अब तक तैयार हुआ होता तो इस वर्ष प्रतिदिन 60,000-80,000 यात्रियों के सफर करने का अनुमान था।

इस कॉरिडोर पर होंगे ये स्टेशन और उसके फायदे

लाजपत नगर - पिंक और वायलेट लाइनों के साथ इंटरचेंज, लाजपत नगर मार्केट जुड़ने वाला यह तीसरा कॉरिडोर होगा।

एंड्रयूज गंज - आवासीय और संस्थागत इलाके को फायदा।

ग्रेटर कैलाश एक - ग्रेटर कैलाश और आसपास के इलाकों की सेवा।

चिराग दिल्ली - मैजेंटा लाइन के साथ इंटरचेंज।

पुष्पा भवन - सरकारी कार्यालयों और आवासीय कॉलोनियां मेट्रो से जुड़ेंगी।

साकेत कोर्ट - साकेत जिला न्यायालय परिसर, सलेक्ट सिटी वॉक मॉल पहुंचा जा सकेगा।

पुष्प विहार - पुष्प विहार सेक्टर एक, तीन, चार और सात के निवासियों को फायदा।

साकेत जी ब्लॉक - गोल्डन लाइन (तुगलकाबाद-एरोसिटी) के साथ इंटरचेंज स्टेशन। इस स्टेशन पर मेट्रो बदलकर पहुंचा जा सकेगा एयरपोर्ट।

मेट्रो के एक कोच में कितने यात्री करेंगे सफर?

वर्ष 2041 तक इस कॉरिडोर की मेट्रो में प्रतिदिन करीब एक लाख 20 हजार यात्रियों के सफर करने का अनुमान है। मेट्रो ट्रेन के एक कोच में 300 यात्री सफर कर सकेंगे। इस लिहाजा से तीन कोच की मेट्रो में एक बार में करीब 900 यात्री सफर करेंगे। यात्रियों की संख्या बढ़ने के साथ मेट्रो की फ्रिक्वेंसी भी बढ़ेगी।

डीएमआरसी का कहना है कि इस कॉरिडोर पर तीन कोच के मेट्रो का परिचालन होने से बिजली की खपत भी कम होगी और पर्यावरण के लिए भी बेहतर होगा। यह कॉरिडोर बनकर तैयार होने पर दक्षिण और मध्य दिल्ली के बीच मेट्रो से आवागमन की सुविधा बेहतर होगी।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय:- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

अब वन टाइम पेमेंट के साथ पाएं नमो भारत और दिल्ली मेट्रो के यात्रियों की सबसे बड़ी टेंशन खत्म

परिवहन विशेष न्यूज

नमो भारत कनेक्ट एप में अब यात्रा की संयुक्त योजना बनाने का फीचर शुरू हो गया है। इस फीचर से यात्री एक ही डिजिटल प्लेटफॉर्म पर नमो भारत ट्रेन और मेट्रो ट्रेन की टिकट अलग-अलग ले सकते हैं। यात्री चाहें तो एक भुगतान पर नमो भारत और मेट्रो ट्रेन का अलग-अलग क्यूआर कोड आधारित टिकट उनको मिल जाएगा।

दिल्ली। नमो भारत ट्रेन और मेट्रो ट्रेन रूट पर यात्रा की संयुक्त योजना बनाने के लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने नमो भारत कनेक्ट एप में जर्नी प्लानर की शुरुआत की है।

इस फीचर के साथ यात्री एक ही डिजिटल प्लेटफार्म पर एक भुगतान पर दोनों की ट्रेन माध्यमों की टिकट अलग-अलग टिकट ले सकते हैं। उदाहरण के तौर पर किसी को मेरठ साउथ से दिल्ली के राजीव चौक तक जाना है, तो एप के जर्नी प्लानर फीचर में यात्री को शुरुआती और गंतव्य स्टेशन का नाम डालना होगा।

यात्रियों के लिए शुरू हुई ये सुविधा

ऐसा करने पर एप बता देगी कि आपको नमो भारत ट्रेन से आनंद विहार उतरना होगा, वहां से मेट्रो की ब्लू लाइन पकड़ कर आप राजीव चौक पहुंच जाएंगे। यात्री चाहेंगे तो एक भुगतान पर नमो भारत और मेट्रो ट्रेन का अलग-अलग क्यूआर कोड आधारित टिकट उनको मिल जाएगा। अभी तक टिकट खरीदने के लिए भुगतान भी अलग-अलग करना होता था। यात्रा की योजना बनाने के लिए रूट भी अलग-अलग देखना होता था।

एनसीआरटीसी अधिकारियों ने बताया कि यह फीचर एक स्टेशन से दूसरे के बीच के यात्रा के लिए स्मार्ट रूट का सुझाव देता है। यात्री इससे सबसे तेज और सबसे कुशल रूट की जानकारी लेने के साथ-साथ अनुमानित यात्रा समय और सुझाए गए इंटरचेंज भी देख सकते हैं।

भुगतान के लिए दिए ये ऑप्शन

इस फीचर से एक ही प्लेटफार्म पर नमो भारत और मेट्रो दोनों के टिकट एक साथ बुक करने की सुविधा है। इससे यात्रियों को दो अलग-अलग एप पर जाकर दोनों माध्यमों के लिए अलग-अलग टिकट बुक करने की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। नमो भारत एप पर ही पूरी यात्रा का अनुमानित किराया देखकर यूपीआइ, डेबिट या क्रेडिट कार्ड या इंटरनेट बैंकिंग से भुगतान कर सकते हैं।

कामदा एकादशी

हिंदू धर्म में एकादशी की विशेष धार्मिक मान्यता होती है। चैत्र माह में कामदा एकादशी का व्रत रखा जाता है। माना जाता है कि कामदा एकादशी पर व्रत रखने पर साधक को मनचाहे फल की प्राप्ति होती है। इसीलिए मनोवांछित फल पाने के लिए कामदा एकादशी का व्रत रखा जाता है। एकादशी पर जगत के पालनहार भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। साथ ही, मां लक्ष्मी का पूजन किया जाता है।

कब है कामदा एकादशी पंचांग के अनुसार, चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि 7 अप्रैल की शाम 4 बजकर 30 मिनट पर शुरू हो जाएगी और इस तिथि का समापन अगले दिन यानी 8 अप्रैल को 5 बजकर 42 मिनट पर होगा। ऐसे में कामदा एकादशी का व्रत 8 अप्रैल, मंगलवार के दिन रखा जाएगा।

कब किया जाएगा कामदा एकादशी का पारण कामदा एकादशी का पारण द्वादशी तिथि पर होता है। ऐसे में 9 अप्रैल बुधवार के दिन कामदा एकादशी व्रत का पारण किया जाएगा। व्रत पारण करने यानी व्रत समाप्त करने का शुभ मुहूर्त 9 अप्रैल सुबह 7 बजकर 12 मिनट पर शुरू होगा और 9 बजकर 52 मिनट तक रहेगा। इस समयावधि में एकादशी व्रत का पारण करना शुभ होगा।

कामदा एकादशी की पूजा विधि कामदा एकादशी के दिन सुबह-सवेरे उठकर स्नान पश्चात व्रत का प्रण लिया जाता है। इस दिन भगवान विष्णु की पूरे मनोभाव से पूजा की जाती है। पूजा में पीले रंग का विशेष महत्व होता है क्योंकि इस रंग को श्रीहरि का प्रिय रंग कहा जाता है। पीले रंग के वस्त्र पहनना, चौकी पर पीले रंग का कपड़ा बिछाना, पीले फूल, पीले फल और पीले फल को पूजा में शामिल करना बेहद शुभ होता है। एकादशी की पूजा में भगवान विष्णु के मंत्रों का जाप किया जाता है। पूजा करते हुए एकादशी की व्रत कथा पढ़ी जाती है, आरती होती है, भोग लगाने के बाद पूजा संपन्न की जाती है। और भगवान विष्णु के आशीर्वाद की कामना की जाती है।

कामदा एकादशी व्रत कथा

श्रीकृष्ण के प्रिय सखा अर्जुन ने कहा - ₹हे कमलनयन! मैं आपको कोटि-कोटि नमन करता हूँ। हे जगदीश्वर! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप कृपा कर चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी कथा का भी वर्णन सुनाइये। इस एकादशी का क्या नाम है? इस व्रत को पहले किसने किया और इसके करने से किस फल की प्राप्ति होती है?'

श्रीकृष्ण ने कहा - 'हे अर्जुन! एक बार यही प्रश्न राजा दिलीप ने गुरु वशिष्ठ से किया था, वह वृत्तान्त मैं तुम्हें सुनाता हूँ। राजा दिलीप ने गुरु वशिष्ठ से पूँछा - 'हे गुरुदेव! चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? उसमें किस देवता का पूजन होता है तथा उसका क्या विधान है? वह आप कृपापूर्वक बताइये।'

मुनि वशिष्ठ ने कहा - 'हे राजन! चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम कामदा एकादशी है। यह समस्त पापों को नष्ट करने वाली है। जैसे अग्नि काष्ठ को जलाकर राख कर देती है, वैसे ही कामदा एकादशी के पुण्य के प्रभाव से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति होती है। इसके उपवास से मनुष्य निकृष्ट योनि से मुक्त हो जाता है और अन्ततः उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। अब मैं इस एकादशी का माहात्म्य सुनाता हूँ, ध्यानपूर्वक श्रवण करो- प्राचीन समय में भागीपुर नामक एक नगर था। जिस पर पुण्डरीक नाम का राजा राज्य करता था। राजा पुण्डरीक अनेक ऐश्वर्यों से युक्त था। उसके राज्य में अनेक अप्सराएँ, गन्धर्व, किन्नर आदि वास करते थे। उसी नगर में ललित और ललिता नाम के गायन विद्या में पारन्गत गन्धर्व स्त्री-पुरुष अति सम्पन्न घर में निवास करते हुए विहार किया करते थे। उन दोनों में इतना प्रेम था कि वे अलग हो जाने की कल्पना मात्र से ही व्यथित हो उठते थे। एक बार राजा पुण्डरीक गन्धर्वों सहित सभा में विराजमान थे। वहाँ गन्धर्वों के साथ ललित भी गायन कर रहा था। उस समय उसकी प्रियतमा ललिता वहाँ उपस्थित नहीं थी। गायन करते-करते अचानक उसे उसका ख्याल आ गया, जिसके कारण वह अशुद्ध गायन करने लगा। नागराज कर्कोटक ने राजा पुण्डरीक से उसकी शिकायत की। इस पर राजा को भयंकर क्रोध आया और उन्होंने क्रोधवश ललित को शाप (श्राप) दे दिया - 'अरे नीच! तू मेरे सम्मुख गायन करते हुए भी अपनी स्त्री का स्मरण कर रहा है, इससे तू नरभक्षी दैत्य बनकर अपने कर्म का फल भोग।'

ललित गन्धर्व उसी समय राजा पुण्डरीक के शाप (श्राप) से एक भयंकर दैत्य में बदल गया। उसका मुख विकराल हो गया। उसके नेत्र सूर्य, चन्द्र के समान प्रदीप्त होने लगे। मुँह से आग की भयंकर ज्वालाएँ निकलने लगीं, उसकी नाक पर्वत की कन्दरा के समान विशाल हो गई और गर्दन पहाड़ के समान दिखायी देने लगी। उसकी भुजाएँ दो-दो योजन लम्बी हो गईं। इस प्रकार उसका शरीर आठ योजन का हो गया। इस तरह राक्षस बन जाने पर वह अनेक दुःख भोगने लगा। अपने प्रियतम ललित का ऐसा हाल होने पर ललिता अथाह दुःख से व्यथित हो उठी। वह अपने पति के उद्धार के लिए विचार करने लगी कि मैं कहाँ जाऊँ और क्या करूँ? किस जतन से अपने पति को इस नरक तुल्य कष्ट से मुक्त कराऊँ?

राक्षस बना ललित घोर वनों में रहते हुए अनेक प्रकार के पाप करने लगा। उसकी स्त्री ललिता भी उसके पीछे-पीछे जाती और उसकी हालत देखकर विलाप करने लगती।

एक बार वह अपने पति के पीछे-पीछे चलते हुए विन्ध्याचल पर्वत पर पहुँच गई। उस स्थान पर उसने श्रृंगी मुनि का आश्रम देखा। वह शीघ्रता से उस आश्रम में गई और मुनि के सामने पहुँचकर दण्डवत्प्रणाम कर विनीत भाव से प्रार्थना करने लगी - 'हे महर्षि! मैं वीरधन्वा नामक गन्धर्व की पुत्री ललिता हूँ, मेरा पति राजा पुण्डरीक के शाप (श्राप) से एक भयंकर दैत्य बन गया है। उससे मुझे अपार दुःख हो रहा है। अपने पति के कष्ट के कारण मैं बहुत दुखी हूँ। हे मुनिश्रेष्ठ! कृपा करके आप उसे राक्षस योनि से मुक्ति का कोई उत्तम उपाय बताएँ।'

समस्त वृत्तान्त सुनकर मुनि श्रृंगी ने कहा - 'हे पुत्री! चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम कामदा एकादशी है। उसके व्रत करने से प्राणी के सभी मनोरथ शीघ्र ही पूर्ण हो जाते हैं।

यदि तू उसके व्रत के पुण्य को अपने पति को देगी तो वह सहज ही राक्षस योनि से मुक्त हो जाएगा और राजा का शाप (श्राप) शान्त हो जाएगा।'

ऋषि के कहे अनुसार ललिता ने श्रद्धापूर्वक व्रत किया और द्वादशी के दिन ब्राह्मणों के समक्ष अपने व्रत का फल अपने पति को दे दिया और ईश्वर से प्रार्थना करने लगी - 'हे प्रभु! मैंने जो यह उपवास किया है, उसका फल मेरे पतिदेव को मिले, जिससे उनकी राक्षस योनि से शीघ्र ही मुक्ति हो।'

एकादशी का फल देते ही उसका पति राक्षस योनि से मुक्त हो गया और अपने दिव्य स्वरूप को प्राप्त हुआ। वह अनेक सुन्दर वस्त्रों तथा आभूषणों से अलंकृत होकर पहले की भाँति ललिता के साथ विहार करने लगा।

कामदा एकादशी के प्रभाव से वह पहले की भाँति सुन्दर हो गया और मृत्यु के बाद दोनों पुष्पक विमान पर बैठकर विष्णुलोक को चले गये।

हे अर्जुन! इस उपवास को विधानपूर्वक करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इस व्रत के पुण्य से मनुष्य ब्रह्महत्यादि के पाप और राक्षस आदि योनि से मुक्त हो जाते हैं। संसार में इससे उत्तम दूसरा कोई व्रत नहीं है। इसकी कथा व माहात्म्य के श्रवण व पठन से अनन्त फलों की प्राप्ति होती है।

कथा-सार

प्राणी अपने सुखों का चिन्तन करे, यह बुरा नहीं है, किन्तु समय-असमय ऐसा चिन्तन प्राणी को उसके दायित्वों से विमुख कर देता है, जिससे उसे भयंकर कष्ट भोगने पड़ते हैं। गन्धर्व ललित ने भी राक्षस होकर निन्दित कर्म किये और कष्ट भोगे, परन्तु भगवान श्रीहरि की अनुकम्पा का कोई अन्त नहीं है।

रहस्यमयी है यह कुआं, इसमें नहीं दिखे परछाईं तो 6 महीने में मौत पक्की!

मणिकर्णिका घाट और काशी विश्वनाथ बाबा के मंदिर के अलावा यूपी के बनारस में हिंदू धर्म के कई और रहस्य भी छुपे हैं। इसी शहर में धर्मराज यमराज से जुड़ी जानकारियां और निशानियां मिलती हैं।

गंगा के धरती पर आने से पहले बना था ये मंदिर

- मीरघाट के ऊपर बना है धर्मेश्वर महादेव मंदिर और एक धर्मकूप। मंदिर के पुजारी मनोज उपाध्याय बताते हैं, ₹इस कूप का इतिहास गंगा के धरती पर आने से पहले का है। इसे कभी सूर्यपुत्र यम ने बनवाया था। गंगा अवतरण के पूर्व यहां सूर्य पुत्र धर्मराज यम ने 16 चौकड़ी (एक चौकड़ी एक युग के बराबर मानी जाती है) तपस्या किया था।₹

- ₹भगवान शिव के वरदान से यमराज का नामकरण संस्कार यहीं हुआ था। महाभारत काल में धर्मराज युधिष्ठिर ने भी अज्ञात वास के दौरान यहीं आकर यमराज की तपस्या की थी।₹

कैसे पड़ा यमराज का नाम गंगा अवतरण के पहले भगवान शंकर पृथ्वी पर मरने वाले मनुष्यों को स्वर्ग में जगह मिले या नर्क में, इस बात को लेकर काफी चिंतित थे। पृथ्वी लोक से उन्हें लेकर कौन

आएगा। दूसरी तरफ यम ने काशी आकर तपस्या की, लेकिन शिव ने दर्शन नहीं दिए। तब विष्णु ने उनको यहां कुंड बनाकर, उसमें स्नान के पश्चात सोलह चौकड़ी अराधना करने के लिए कहा। यम के तप से महादेव प्रसन्न हुए तो और वरदान दिया कि आज से देवगण से लेकर मनुष्य लोक तक सभी तुम्हें यमराज कह कर पुकारेंगे।₹

- ₹ऐसी मान्यता है कि शिव ने यमराज को मोक्ष पाने वालों का हिसाब रखने की जिम्मेदारी सौंपी थी। तभी से वे यह फैसला करते हैं कि मरणोप्रांत किसे स्वर्ग देना है और किसे नर्क।"

धर्मकूप को लेकर भी है मान्यता

धर्म पुराण में इस पूरी घटना का वर्णन है। यमराज का नामकरण यहां होने की वजह से इस मंदिर का नाम धर्मेश्वर महादेव मंदिर पड़ गया। यहां मान्यता है कि यमराज स्वयं शिव के साथ विराजते हैं। कुंड को लेकर मान्यता है कि इस कूप में झांकने पर यदि जल में प्रतिबिम्ब नहीं दिखाई दे, तो उस व्यक्ति का मृत्यु 6 महीने के अंदर निश्चित है। साथ ही इस कूप के जल से किया गया तर्पण और श्राद्ध 'गया लाभ' के बराबर होता है"

क्या आपकी नाक हमेशा बंद रहती हैं?

जानिये बंद नाक खोलने के परम्परागत, प्राकृतिक एवं घरेलू उपचार

1. यदि आपको अकसर नाक बंद रहने की समस्या रहती है तो कोशिश करें कि गुनगुने पानी से स्नान करें।गुनगुने पानी से स्नान करने से आपको बंद नाक में आराम मिलेगा।

2. इस तरह की समस्या में प्याज भी फायदेमंद होती है, कच्ची प्याज खाने से बंद नाक खुल जाती है।

3. यदि आप चटपटा खाने के शौकीन है तो यह आपके लिए बंद नाक में बहुत ही फायदेमंद साबित होगा।चटपटी चीजें नाक बंद होने पर आपकी नाक को खोल देती हैं।

4. घर पर गरम-गरम टमाटर जूस बनाकर पीने से भी बंद नाक में राहत मिलेगी।टमाटर जूस में लहसुन, नींबू रस और नमक मिलाकर पिएं, आराम मिलेगा

नाक बंद रहने की समस्या कई बार जुखाम या एलर्जी होने पर भी हो जाती है।

ज्यादा लंबे समय तक नाक बंद रहने से आपके लिए समस्या भी पैदा हो सकती है इसलिए जब कभी भी आपके साथ ऐसा हो तो घरेलू उपचार के जरिए इसे सही करने की कोशिश करें।

1. नाक खोलने के लिए आप गर्म चाय ट्राई कर सकते हैं।ज्यादा मात्रा में गर्म चाय पीने से आपकी बंद नाक को राहत मिलेगी। यदि आप ग्रीन टी, पिपरमिंट या फिर अदरक की चाय पीते हैं तो यह और ज्यादा फायदेमंद होगी।

2. यदि इससे आपको राहत नहीं मिल रही तो गर्म पानी में विक्स या बाम आदि मिलाकर स्टीम लेने से राहत मिलेगी। याद रहे कि भाप लेने के दौरान आपके घर का पंखा बंद होना चाहिए।

3. भाप लेने के लिए आप गर्म पानी में सिरका भी डाल सकते हैं।

ज्योतिष एवं वास्तु शास्त्र में गौ (गाय) की महिमा

1. ज्योतिष में गोधूलिका समय विवाह के लिये सर्वोत्तम माना गया है।

2. यदि यात्रा के प्रारम्भ में गाय सामने पड़ जाय अथवा अपने बछड़े को दूध पिलाती हुई सामने पड़ जाय तो यात्रा सफल होती है।

3. जिस घर में गाय होती है, उसमें वास्तुदोष स्वतः ही समाप्त हो जाता है।

4. जन्मपत्री में यदि शुक्र अपनी नीचराशि कन्या पर हो, शुक्र की दशा चल रही हो या शुक्र अशुभ भाव (6,8,12)-में स्थित हो तो प्रातःकाल के भोजन में से एक रोटी सफेद रंग की गाय को खिलाने से शुक्र का नीचत्व एवं शुक्र सम्बन्धी कुदोष स्वतः ही समाप्त हो जाता है।

5. पितृदोष से मुक्तिः- सूर्य, चन्द्र, मंगल या शुक्र की युति राहु से हो तो पितृदोष होता है। यह भी मान्यता है कि सूर्य का सम्बन्ध पिता से एवं मंगल का सम्बन्ध रक्त से होने के कारण सूर्य यदि शनि, राहु या केतु के साथ स्थित हो या दृष्टि सम्बन्ध हो तथा मंगल की युति राहु या केतु से हो तो पितृदोष होता है। इस दोष से जीवन संघर्षमय बन जाता है। यदि पितृदोष हो तो गाय को प्रतिदिन या अमावस्या को रोटी, गुड़, चारा आदि खिलाने से पितृदोष समाप्त हो जाता है।

6. किसी की जन्मपत्री में सूर्य नीचराशि तुला पर हो या अशुभ स्थिति में हो अथवा केतु के द्वारा परेशानियाँ आ रही हों तो गाय में सूर्य-केतु नाडी में होने के फलस्वरूप गाय की पूजा करनी चाहिये, दोष समाप्त होंगे।

7. यदि रास्ते में जाते समय गोमाता आती हुई दिखायी दें तो उन्हें अपने दाहिने से जाने देना चाहिये, यात्रा सफल होगी।

8. यदि बुरे स्वप्न दिखायी दें तो मनुष्य गो माता का नाम ले, बुरे स्वप्न दिखने बन्द हो जायेंगे।

9. गाय के घी का एक नाम आयु भी है- 'आयुर्वै घृतम्'। अतः गाय के दूध-घी से व्यक्ति दीर्घायु होता है। हस्तरेखा में आयु रेखा टूटी हुई हो तो गायका घी काम में लें तथा गाय की पूजा करें।

10. देशी गाय की पीठ पर जो ककुद् (कूबड़) होता है, वह 'बृहस्पति' है। अतः जन्मपत्रिका में यदि बृहस्पति अपनी नीच राशि मकर में हों या अशुभ स्थिति हों तो देशी गाय के इस बृहस्पति भाग एवं शिवलिंग रूपी ककुद् के दर्शन करने चाहिये। गुड़ तथा चने की दाल रखकर गाय को रोटी भी दें।

11. गोमाता के नेत्रों में प्रकाश स्वरूप भगवान् सुर्य तथा ज्योत्स्ना के अधिष्ठाता चन्द्रदेव का निवास होता है। जन्म पत्री में सूर्य-चन्द्र कमजोर हो तो गोनेत्र के दर्शन करें, लाभ होगा।

वास्तुदोषों का निवारण भी करती है गाय

जिस स्थान पर भवन, घर का निर्माण करना हो, यदि वहाँ पर बछड़े वाली गाय को लाकर बाँधा जाय तो वहाँ सम्भावित वास्तु दोषों का स्वतः निवारण हो जाता है, कार्य निर्विघ्न पूरा होता है और समापन तक आर्थिक बाधाएँ नहीं आतीं। गाय के प्रति भारतीय आस्था को अभिव्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि गाय सहज रूप से भारतीय जनमानस में रची-बसी है। गोसेवा को एक कर्तव्य के रूप में माना गया है। गाय सृष्टि मातृका कही जाती है। गाय के रूप में पृथ्वी की करुण पुकार और विष्णु से अवतार के लिये निवेदन के प्रसंग पुराणों में बहुत प्रसिद्ध हैं। 'समरांगणसूत्रधार' -जैसा प्रसिद्ध बृहद्वास्तुग्रन्थ गोरूप में पृथ्वी-ब्रह्मादि के समागम-संवाद से ही आरम्भ होता है।

वास्तुग्रन्थ 'मयमतम्' में कहा गया है कि भवन निर्माणका शुभारम्भ करनेसे पूर्व उस भूमि पर ऐसी गाय को लाकर बाँधना चाहिये, जो सवत्सा (बछड़ेवाली) हो। नवजात बछडे को जब गाय दुलारकर चाटती है तो उसका फेन भूमिपर गिरकर उसे पवित्र बनाता है और वो समस्त दोषों का निवारण हो जाता है। यही वास्तुप्रदीप, अपराजितपृच्छा आदि ग्रन्थों में का महाभारत के अनुशासन पर्व में कहा गया है कि गाय जहां बैठकर निर्भयता पूर्वक सांस लेती है तो उस स्थान के सारे पापों को खींच लेती है।

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति ।।

यह भी कहा गया है कि जिस घर में गाय की सेवा होती है, वहाँ पुत्र-पौत्र, धन, विद्या आदि सुख जो भी चाहिये, मिल जाता है। यही मान्यता अत्रिसंहिता में भी आयी है। महर्षि अत्रि ने तो यह भी कहा है कि जिस घर में सवत्सा धेनु नहीं हो, उसका मंगल-मांगल्य कैसे होगा?

गाय का घर में पालन करना बहुत लाभकारी है। इससे घरों में सर्वबाधाओं और विघ्नों का निवारण हो जाता है। बच्चों में भय नहीं रहता। विष्णुपुराण में कहा गया है कि जब श्रीकृष्ण पूतना के दुग्धपान से डर गये तो नन्द-दम्पती ने गाय की पूँछ घुमाकर उनकी नजर उतारी और भयका निवारण किया। सवत्सा गाय के शकुन लेकर यात्रा में जाने से कार्य सिद्ध होता है।

पद्मपुराण और कूर्मपुराण में कहा गया है कि कभी गाय को लाँघकर नहीं जाना चाहिये। किसी भी साक्षात्कार, उच्च अधिकारी से भेंट आदि के लिये जाते समय गाय के रँभाने की ध्वनि कान में पड़ना शुभ है। संतान-लाभ के लिये गाय की सेवा अच्छा उपाय कहा गया है। शिवपुराण एवं स्कन्दपुराण में कहा गया है कि गो सेवा और गोदान से यम का भय नहीं रहता। गाय के पाँवकी धूलिका भी अपना महत्त्व है। यह पापविनाशक है, ऐसा गरुडपुराण और पद्मपुराण का मत है।

ज्योतिष एवं धर्मशास्त्रों में बताया गया है कि गोधूलि वेला विवाहादि मंगलकार्यों के लिये सर्वोत्तम मुहूर्त है। जब गायें जंगल से चरकर वापस घर को आती हैं, उस समयको गोधूलि वेला कहा जाता है। गायके खुरों से उठने

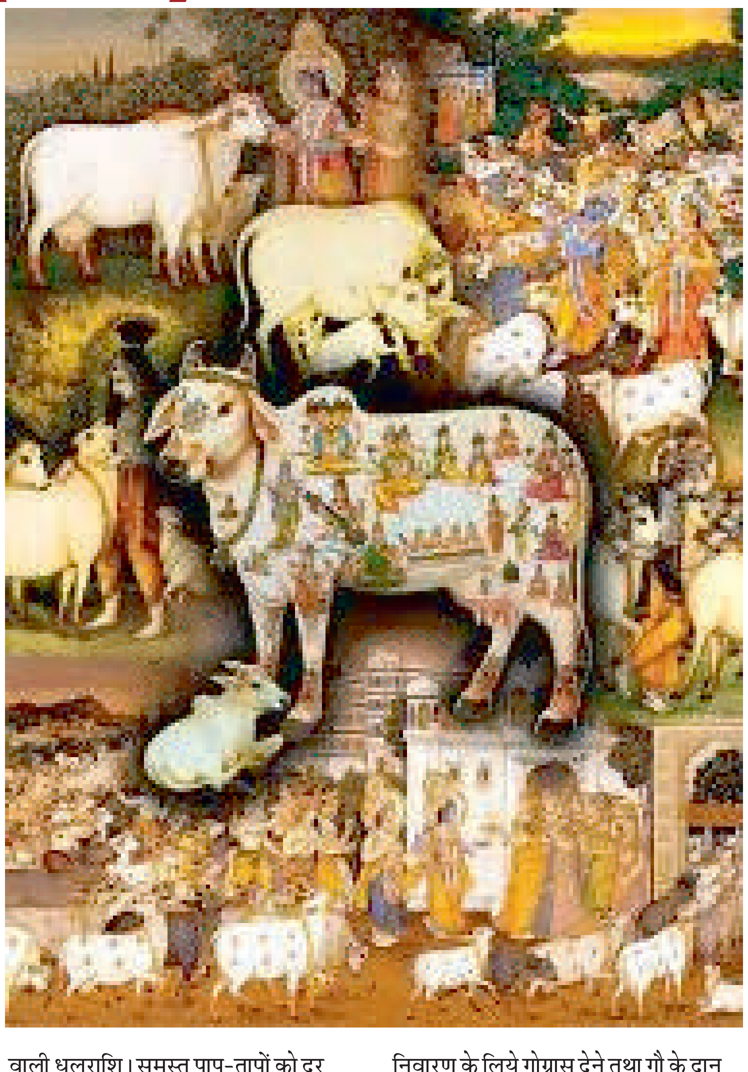

वाली धूलराशि। समस्त पाप-तापों को दूर करनेवाली है। पंचगव्य एवं पंचामृत की महिमा तो सर्वविदित है ही। गोदान की महिमा से कौन अपरिचित है! ग्रहों के अरिष्ट-निवारण के लिये गोग्रास देने तथा गौ के दान की विधि ज्योतिष-ग्रन्थों में विस्तार से निरूपित है। इस प्रकार गाय सर्वविध कल्याणकारी ही है।

श्री शिवमहापुराण के अनुसार श्री भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग की कथा

भीम उपद्रव का वर्णन सूत जी बोले हे ऋषियो! पूर्वकाल में भीम नाम का एक बलशाली राक्षस हुआ था, जो कि रावण के भाई कुंभकरण और कर्कटी राक्षसी का पुत्र था। वह कर्कटी अपने पुत्र भीम के साथ सह्य पर्वत पर रहती थी। एक बार भीम ने अपनी माता से पूछा- माताजी! मेरे पिताजी) कौन हैं और कहां हैं? हम इस प्रकार यहां अकेले क्यों रह रहे हैं? अपने पुत्र के प्रश्न का उत्तर देते हुए कर्कटी बोली- पुत्र भीम! तुम्हारे पिता रावण के छोटे भाई कुंभकर्ण थे। पूर्व में मैं विराध राक्षस की पत्नी थी, जिसे श्रीराम ने मार डाला था। फिर मैं अपने माता-पिता के साथ रहने लगी। एक दिन जब मेरे माता-पिता अगस्त्य ऋषि के आश्रम में एक मुनि का भोजन खा रहे थे, तब मुनि ने शाप द्वारा उन्हें भस्म कर दिया था। मैं पुनः अकेली रह गई। तब मैं इस पर्वत पर आकर रहने लगी। यहीं पर मेरी कुंभकर्ण से भेंट हुई थी और हमने विवाह कर लिया। उसी समय श्रीराम ने लंका पर आक्रमण कर दिया और तुम्हारे पिता को वापस जाना पड़ा। तब श्रीराम ने युद्ध में उनका वध कर दिया। अपनी माता के वचन सुनकर भीम को भगवान विष्णु से द्वेष उत्पन्न हो गया और उसने बदला लेने की ठान ली। वह ब्रह्माजी को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या करने लगा। उसकी घोर तपस्या से अग्नि प्रज्वलित हो गई, जिससे सभी जीव दग्ध होने लगे। तब ब्रह्माजी उसे वर देने के लिए गए। ब्रह्माजी ने उसके सामने प्रकट होकर वरदान मांगने के लिए कहा। तब भीम बोला- हे पितामह! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे महाबली होने का वर प्रदान करें। तब तथास्तु कहकर ब्रह्माजी वहां से अंतर्धान हो गए। वर प्राप्त करने के बाद प्रसन्न होकर भीम अपनी माता के पास आया और बोला माता! मैं शीघ्र ही विष्णु से अपने पिता कुंभकर्ण के वध का बदला ले लूंगा। यह कहकर भीम वहां से चला गया। उसने देवताओं से भयानक युद्ध किया और उन्हें हराकर स्वर्ग पर अधिकार स्थापित कर लिया। फिर उसने कामरूप देश के राजा से युद्ध करना आरंभ कर दिया। उसे जीतकर कैद कर लिया और उसके खजाने पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। राजा दुखी था। उसने जेल में ही पार्थिव लिंग बनाकर शिवजी का पूजन करना शुरू कर दिया और विधिपूर्वक 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जाप करने लगा। दूसरी ओर, राजा की पत्नी भी अपने पति को पुनः वापस पाने के लिए भगवान शिव की आराधना करने लगी। इधर, भीम नामक राक्षस से दुखी सभी देवता भगवान विष्णु की शरण में पहुंचे। तब विष्णुजी ने सब देवताओं को साथ लेकर महाकेशी नदी के तट पर शिवजी के पार्थिव लिंग की विधि-विधान से स्थापना कर उसकी स्तुति

आराधना की। भगवान शिव उनकी उत्तम आराधना से प्रसन्न होकर वहां प्रकट हुए। शिवजी बोले- हे देवताओ! मैं तुम्हारी स्तुति से प्रसन्न हूं। मांगो, क्या मांगना चाहते हो? शिवजी के वचन सुनकर देवता सहर्ष बोले कि - भगवन्! भीम नामक उस असुर ने सभी देवताओं को दुखी कर रखा है। आप उसका वध करके हमें उसकी दुष्टता से मुक्ति दिलाएं। देवताओं को इच्छित वर प्रदान कर शिवजी वहां से अंतर्धान हो गए। देवता बहुत प्रसन्न हुए और जाकर राजा को भी सूचना दी कि भगवान जल्दी ही तुम्हारे शत्रु भीम का नाश कर तुम्हें मुक्त करेंगे।

भीमशंकर ज्योतिर्लिंग का माहात्म्य सूत जी बोले – हे ऋषिगणो! अब मैं आपको भीमशंकर ज्योतिर्लिंग के माहात्म्य के बारे में बताता हूं। इधर, जब दानव भीम को यह ज्ञात हुआ कि राजा कैदखाने में कोई अनुष्ठान कर रहा है तब वह क्रोधित होकर जेलखाने में पहुंचा। भीम राजा से बोला- हे दुष्ट! तू मुझे मारने के लिए कैसा अनुष्ठान कर रहा है। बता, अन्यथा मैं अपनी इस तलवार से तेरे टुकड़े टुकड़े कर दूंगा। इस प्रकार भीम और उसके अन्य राक्षस सैनिक राजा को धमकाने लगे। राजा भयभीत होकर मन ही मन भगवान शिव से प्रार्थना करने लगा। वह बोला- हे देवाधिदेव! कल्याणकारी भक्तवत्सल भगवान शिव। मैं आपकी शरण में आया हूं। आप मेरी इस राक्षस से रक्षा करें। इधर, जब राजा ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया तो वह क्रोधित होकर तलवार हाथ में लिए उस पर झपटा। एकाएक वह तलवार शिवजी के पार्थिव लिंग पर पड़ी और उसमें से भगवान शिव प्रकट हो गए। उन्होंने अपने त्रिशूल से उस तलवार के दो टुकड़े कर दिए। फिर उनके गणों का दैत्य सेना के साथ महायुद्ध हुआ। उस भयानक युद्ध से धरती और आकाश डोलने लगा। ऋषि तथा देवतागण आश्चर्यचकित रह गए। तब भगवान ने अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से भीम को भस्म कर दिया, जिससे वन में भी आग लग गई और अनेक औषधियां नष्ट हो गईं, जो अनेकों रोगों का नाश करने वाली थीं। तब अपने भक्तों का कल्याण करने के लिए कल्याणकारी भगवान शिव सदा के लिए राजा द्वारा स्थापित उस पार्थिव लिंग में विराजमान हो गए और संसार में भीमशंकर नाम से प्रसिद्ध हुए। भगवान शिव का यह लिंग सदैव पूजनीय और सभी आपत्तियों का निवारण करने वाला है।

अब दिल्लीवासियों के नहीं रुकेंगे काम, मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सभी डीएम को दे दिए सख्त निर्देश; आश्वासन भी दिया

सीएम रेखा गुप्ता ने जनता से जुड़े मामलों में तेजी लाने के निर्देश दिए हैं। डीएम हर हफ्ते जनसुनवाई शिविर लगाएंगे और डीएम कार्यालय में तकनीकी पदों पर नियुक्तियां होंगी। ईडब्ल्यूएस सर्टिफिकेट जारी करने में गड़बड़ी पर सख्त कार्रवाई होगी। उन्होंने कहा कि पटवारी से लेकर सर्वेयर तक की नियुक्तियां होंगी। मुख्यमंत्री ने सभी जिलाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की।

नई दिल्ली। जनता से जुड़े मामलों पर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता सख्त हो गई हैं। सीएम ने निर्देश दिया है कि जनता की शिकायतों का हो त्वरित समाधान हो, डीएम हर हफ्ते जनसुनवाई शिविर लगाएं। इसके साथ ही उन्होंने कहा है कि डीएम कार्यालय में तकनीकी पद बढ़ाए जाएंगे। पटवारी से लेकर सर्वेयर तक की नियुक्तियां होंगी।

सीएम ने कहा है कि ईडब्ल्यूएस सर्टिफिकेट जारी करने में गड़बड़ी पर सख्त कार्रवाई होगी। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने ये निर्देश सोमवार को दिल्ली सरकार के सभी 11 जिलाधिकारियों के साथ एक महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक के दौरान दिये।

बैठक के दौरान सीएम ने साफ कर दिया कि किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस उच्च स्तरीय बैठक का मुख्य उद्देश्य राजस्व जिलों में प्रशासनिक और विकासात्मक प्रगति की समीक्षा करना, स्थानीय मुद्दों का समाधान करना तथा विभागों के बीच समन्वय को सुदृढ़ बनाना था।

मुख्यमंत्री ने बैठक में प्रशासनिक कार्यों की प्रगति, जनसेवा के कार्य, भूमि संबंधी विवादों, अतिक्रमण की स्थिति, भू-स्वामित्व रिकार्ड के डिजिटलीकरण, आपदा प्रबंधन तैयारियों और राजस्व कार्यालयों में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की। साथ ही सभी जिलाधिकारियों को क्षेत्र में नियमित निरीक्षण और जनता से संवाद करने के निर्देश दिए।

सभी जिलाधिकारी 15 दिन के भीतर प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे

सीएम ने कहा कि राजस्व विभाग आम जनता से सीधे जुड़ा हुआ है ।दिल्ली की जनता को एक ऐसी प्रणाली चाहिए जो सुने, समझे और त्वरित कार्रवाई करे। साथ ही अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि ईडब्ल्यूएस प्रमाणपत्रों को जारी करने में पाई जाने वाली अनियमितताओं की त्वरित जांच की जाए और दोषियों पर कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। सीएम ने सभी जिलाधिकारियों को निर्देशित किया है कि वे अपने-अपने विकास कार्यों की 15 दिन के भीतर प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करें। नागरिक सेवाओं को अधिक प्रभावी और यूजर फ्रेंडली बनाने के लिए ई-डिस्ट्रिक्ट पोर्टल को अपग्रेड किया जाए।

अवैध बैनर और पोस्टर हटाने का अभियान जारी रहेगा

सीएम ने बताया कि दिल्ली की सुंदरता और शांति व्यवस्था बनाए रखने हेतु अवैध बैनर और पोस्टर हटाने का अभियान जारी रहेगा। उल्लंघनकर्ताओं के खिलाफ प्रापर्टी डिफिसमेंट एक्ट के तहत सख्त कार्रवाई की जा रही है। साथ ही नागरिकों को आनलाइन सेवाओं का अधिकतम लाभ मिले, इसके लिए नागरिक सेवाओं को अधिक प्रभावी और यूजर फ्रेंडली बनाने के लिए ई-डिस्ट्रिक्ट पोर्टल को अपग्रेड किया जाएगा।

अब संपत्ति का पंजीकरण होगा पूरी तरह पेपरलेस

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि संपत्ति सेल डीड रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया को सरल, डिजिटल और पारदर्शी बनाया जाए, ताकि आम लोगों को कागजों के ढेर और दफ्तरों के चक्कर से राहत मिल सके। उन्होंने कहा कि संपत्ति पंजीकरण प्रक्रिया को पूरी तरह डिजिटल करने से न केवल समय और श्रम की बचत होगी, बल्कि इससे बिचौलियों और भ्रष्टाचार पर भी रोक लगेगी। साथ ही सरकार एक लिस्ट भी जारी करेगी, जिसमें उन संपत्तियों का नाम होगा जिन्हें बेचा नहीं जा सकता। इस कदम से संपत्ति लेन-देन में होने वाली धोखाधड़ी पर भी प्रभावी रोक लगेगी।

गर्मी ने बीते 15 साल में दूसरी बार बनाया रिकॉर्ड, अप्रैल में 'लू' ने मचाया तांडव

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में लू का कहर जारी है और तापमान 41 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। यह इस सीजन का अब तक का सबसे अधिक तापमान है। सोमवार को सुबह से ही मौसम में खासी गर्मी का एहसास हो रहा था। धूप दिन चढ़ने के साथ साथ और तीखी होती गई। मौसम विभाग ने अगले दो दिनों तक लू चलने का पूर्वानुमान जताया है।

नई दिल्ली। लगातार बढ़ रही गर्मी के बीच दिल्ली लू की चपेट में आ गई है। यलो अलर्ट के बीच सोमवार को दिनभर तेज धूप से लोग बेहाल रहे। दिन का ही नहीं, सुबह का तापमान भी इस सीजन का सर्वाधिक रहा। आलम यह हो चला है कि बिना एसी कहीं राहत नहीं मिल रही। न घर-दफ्तर में और न ही वाहन में।

अप्रैल में लू चलने के हालात 15 साल (वर्ष 2011 से 2025) में दूसरी बार बने हैं। इससे पहले 2022 में लगातार चार दिन लू वाली स्थिति रही थी। मौसम विभाग की मानें तो अभी अगले दो दिन और 'लू' का सितम बना रहेगा। इसके बाद तापमान में आंशिक गिरावट आने का पूर्वानुमान है।

सोमवार को सुबह से ही मौसम में खासी गर्मी का एहसास हो रहा था। धूप भी सुबह ही निकल गई थी, जो दिन चढ़ने के साथ साथ और तीखी होती गई। आठ से 14 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से बीच बीच में चली गर्म हवा ने भी हालत खराब की। इसी स्थिति के बीच तापमान में भी वृद्धि देखी गई।

हवा में नमी का स्तर 80 से 24 प्रतिशत रहा

सोमवार को अधिकतम तापमान सामान्य से 5.1 डिग्री अधिक 40.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। इस सीजन में पहली बार अधिकतम तापमान 40 डिग्री के पार हुआ है। रिज और आयानगर में तो यह 41 डिग्री तक पहुंच गया। वहीं न्यूनतम तापमान 0.2 डिग्री अधिक 20.2 डिग्री दर्ज किया गया। न्यूनतम तापमान भी इस सीजन में पहली बार 20 से ऊपर गया है। पीतमपुरा में यह 24.3 डिग्री तक पहुंच

गया। हवा में नमी का स्तर 80 से 24 प्रतिशत रहा।

मौसम विभाग का पूर्वानुमान है कि मंगलवार को भी दिन भर आसमान साफ रहेगा। ज्यादातर जगहों पर लू चलने वाली स्थिति बनी रहेगी। अधिकतम व न्यूनतम तापमान क्रमशः 41 और 22 डिग्री रहने की संभावना है।

इसलिए पड़ रही इतनी गर्मी

मौसम विज्ञानियों का कहना है कि अप्रैल में ही इस साल इतनी अधिक गर्मी पड़ने की वजह जलवायु परिवर्तन एवं ग्लोबल वार्मिंग का असर तो है ही। पश्चिमी विक्षोभों का अभाव भी है। मार्च में 90 प्रतिशत तक कम वर्षा दर्ज हुई तो अप्रैल में अभी तक एक बूंद भी नहीं बरसी है। इस पर भी हवा की दिशा अब दक्षिणी पूर्वी हो गई है। राजस्थान की ओर से आ रही गर्म हवाएं और ज्यादा गर्मी बढ़ा रही हैं।

तब बनती है लू वाली स्थिति

मौसम विभाग के मुताबिक जब अधिकतम तापमान 40 डिग्री से ऊपर और सामान्य से साढ़े चार से साढ़े छह डिग्री सेल्सियस ऊपर रहता है तो ऐसी स्थिति को लू की स्थिति माना जाता है। मंगलवार और बुधवार को भी अधिकतम तापमान 40 से 42 डिग्री सेल्सियस के बीच ही रहने के आसार हैं।

वायु गुणवत्ता खराब श्रेणी में बरकरार

दिल्ली की वायु गुणवत्ता फिलहाल खराब ही चल रही है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के मुताबिक सोमवार को दिल्ली का एक्यूआई 261 यानी खराब श्रेणी में दर्ज किया गया। एक दिन पहले रविवार को यह 209 रहा था। यानी 24 घंटे के भीतर इसमें 52 अंकों की वृद्धि हुई है। हाल फिलहाल एक्यूआई इसी श्रेणी में बने रहने की संभावना है। एनसीआर के शहरों में भी यह मध्यम से खराब श्रेणी में ही चल रहा है।

एक्शन मोड में दिल्ली सरकार, इस वजह से प्राइवेट स्कूलों पर होगी कार्रवाई

दिल्ली के शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने आम आदमी पार्टी (आप) पर निजी स्कूलों में भ्रष्टाचार करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि पिछली आप सरकार के दौरान 1677 निजी स्कूलों में से सिर्फ 75 स्कूलों का ही हर साल ऑडिट हुआ है जबकि दिल्ली शिक्षा अधिनियम के तहत हर साल सभी स्कूलों का ऑडिट होना अनिवार्य है। स्कूल ने ऑडिट रिपोर्ट शिक्षा निदेशालय को नहीं सौंपी है।

नई दिल्ली। राजधानी में निजी स्कूलों द्वारा की जा रही फीस बढ़ोतरी को लेकर आम आदमी पार्टी लगातार भाजपा पर निशाना साध रही है। आप का आरोप है कि दिल्ली सरकार स्कूलों को फीस बढ़ाने से रोकने में विफल रही है। सोमवार को शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने आप पर पलटवार किया। उन्होंने कहा कि पिछली सरकार के नेताओं ने निजी स्कूलों में भ्रष्टाचार किया है।

हर साल सभी स्कूलों का ऑडिट होना अनिवार्य

आप सरकार के 10 साल के कार्यकाल में 1677 निजी स्कूलों में से सिर्फ 75 स्कूलों का ही हर साल ऑडिट हुआ है। जबकि दिल्ली शिक्षा अधिनियम के तहत हर साल सभी स्कूलों का ऑडिट होना अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी तरह का व्यवसायीकरण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

सूद ने आप नेता मनीष सिसोदिया को चुनौती देते हुए कहा कि अगर उनके पास भ्रष्टाचार को लेकर कोई सबूत है तो वह थाने में जाकर रिपोर्ट दर्ज कराएं। वह टीवी पर आकर भाजपा सरकार पर झूठे आरोप न लगाएं कि हम निजी स्कूलों में फीस बढ़ाने की साजिश कर रहे हैं। जबकि पिछले 10 साल की ऑडिट रिपोर्ट शिक्षा विभाग के पास उपलब्ध नहीं है। किसी भी स्कूल ने ऑडिट रिपोर्ट शिक्षा निदेशालय को नहीं सौंपी है।

1,677 निजी स्कूलों की ऑडिट रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए सभी एसडीएम के नेतृत्व में एक कमेटी बनाने के निर्देश दिए गए हैं। प्रत्येक निजी स्कूल को 1973 के एक्ट में सभी नियम और कानून का पालन करना होगा। एसडीएम की जांच रिपोर्ट आने के बाद सख्त कार्रवाई की जाएगी।

जांच के घेरे में ये अधिकारी

जांच कमेटी में एसडीएम के साथ तहसीलदार और लेखा विभाग के लोग भी शामिल हैं। उन्होंने कहा कि जिन स्कूलों ने 2024-25 तक फीस बढ़ाई है। उनके ऑडिट रिकॉर्ड जांच के लिए मंगवाए गए हैं। जांच के बाद दोषी पाए गए स्कूलों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

हम अगले 10 दिनों के भीतर दिल्ली की जनता को बताएंगे कि किस स्कूल ने पिछले वर्षों में कितनी फीस बढ़ाई है। सूद ने कहा कि निजी स्कूलों में फीस बढ़ोतरी से जुड़े मामले को लेकर एक ईमेल आईडी जारी की गई है। जिन अभिभावकों को स्कूलों में फीस बढ़ोतरी को लेकर कोई शिकायत है, वे ddeact1@gmail.com पर मेल कर सकते हैं या शिक्षा निदेशालय पहुंचकर भी शिकायत कर सकते हैं।

डीपीएस, द्वारका सहित कई स्कूल जांच के घेरे में

सूद ने कहा कि डीपीएस, द्वारका स्कूल ने 2020 से 2025 के बीच फीस में सात से 20 प्रतिशत की बढ़ोतरी की है। इसकी जांच के लिए डीएम के आदेश पर जांच कमेटी गठित की गई है। स्कूल की ऑडिट रिपोर्ट की जांच की जा रही है। सृजन स्कूल में 35 प्रतिशत तक फीस बढ़ाई गई।

एल्कन इंटरनेशनल ने 15 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की थी, फिर भी उस स्कूल को 2022-23 में 15 प्रतिशत फीस बढ़ाने की अनुमति दी गई। वर्ष 2024-25 में उसी स्कूल ने 13 प्रतिशत फीस बढ़ा दी, फिर भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। एंजल पब्लिक स्कूल को अनियमितताओं के लिए 42 लाख रुपये का नोटिस दिया गया था। फिर भी 2022-23 में 14 प्रतिशत फीस बढ़ा दी गई।

रुक्मिणी देवी पब्लिक स्कूल ने 11 प्रतिशत फीस बढ़ाई। लांसर कॉन्वेंट ने 2024-25 में 34 प्रतिशत फीस बढ़ाई थी। सलवान पब्लिक स्कूल का एक करोड़ रुपये से अधिक का फर्जीवाड़ा पकड़ा गया। फिर भी स्कूल ने 2023-24 में 23.84 प्रतिशत और 2024-25 में 14.68 प्रतिशत फीस बढ़ा दी। लेकिन आप सरकार ने तब कोई कार्रवाई नहीं की।

वक्फ संशोधन अधिनियम अल्पसंख्यक अधिकारों के लिए एक काला अध्याय: सैयद सआदतुल्लाह हुसैनी

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। जमाअत-ए-इस्लामी हिंद के अध्यक्ष सैयद सआदतुल्लाह हुसैनी ने संसद में वक्फ संशोधन अधिनियम, 2025 के पारित होने की कड़ी निंदा करते हुए इसे देश में अल्पसंख्यक अधिकारों के लिए एक काला अध्याय बताया।

जमाअत-ए-इस्लामी हिंद के मुख्यालय में आयोजित मासिक प्रेस कांफ्रेंस को सम्बोधित करते हुए जमाअत के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि जमाअत-ए-इस्लामी हिंद संसद में पारित वक्फ संशोधन विधेयक 2025 की कड़ी निंदा करती है। यह देश में अल्पसंख्यक अधिकारों के लिए एक काला अध्याय है। हम समझते हैं कि यह धार्मिक स्वतंत्रता और संवैधानिक अधिकारों पर सीधा हमला है। यह कानून इसलिए भेदभावपूर्ण है क्योंकि यह मुसलमानों के धर्मदान प्रबंधन में स्वायत्तता को खत्म करता है, जबकि अन्य समुदायों के धार्मिक ट्रस्ट स्वायत्त हैं। यह विधेयक वक्फ विधेयक-1995 में व्यापक परिवर्तन लाता है, जिससे वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन में सरकारी हस्तक्षेप काफी बढ़ जाएगा। यह विधेयक संविधान के अनुच्छेद 14, 25, 26 और 29 का स्पष्ट उल्लंघन है तथा मुस्लिम समुदाय के धार्मिक मामलों में राज्य के अनुचित हस्तक्षेप का मार्ग प्रशस्त करेगा। संसदीय बहस के दौरान सत्ता पक्ष के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत भ्रामक तर्कों पर हम गहरी चिंता व्यक्त करते हैं। वक्फ बोर्ड, चैरिटी कमिश्नर के समकक्ष नहीं हैं, जैसा कि लोकसभा में झूठा दावा किया गया है। कई राज्यों में हिंदू और सिखों के लिए विशेष कानून हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि विनियामक और पर्यवेक्षी प्राधिकरण विशेष रूप से संबंधित धार्मिक समुदायों के पास हों। सरकार ने इस संशोधन के लिए बार-बार कुप्रबंधन, कानूनी विवाद और वक्फ संपत्तियों के दुरुपयोग का हवाला दिया है। हालाँकि, विधेयक में इन मुद्दों के समाधान के लिए कोई ठोस उपाय नहीं

हैं। गैर-मुस्लिम सदस्यों को जोड़ने और सरकार द्वारा नामित अधिकारियों को नियंत्रण सौंपने से समस्या का कोई समाधान नहीं होगा। वास्तव में, अनुचित राजनीतिक और नौकरशाही हस्तक्षेप ऐतिहासिक रूप से वक्फ मामलों में भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन का प्राथमिक स्रोत रहा है। जमाअत का मानना है कि 'वक्फ बाय यूजर' में बदलाव और नए वक्फ पर प्रतिबंधात्मक शर्तें लागू करना मुस्लिम संस्थाओं को कमजोर करने का जानबूझकर किया गया प्रयास है।

संसद में वक्फ विधेयक को कितनी आसानी से पारित किया गया, इसका उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि विधेयक की पक्षपातपूर्ण प्रकृति इस तथ्य से देखी जा सकती है कि लोकसभा में इसके पक्ष में केवल 288 वोट ही प्राप्त हो सके, जबकि 232 सांसदों ने इसके खिलाफ मतदान किया। राज्यसभा में इस बिल के पक्ष में 128 वोट पड़े और विपक्ष में 95 वोट। यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि सत्तारूढ़ पार्टी के पास लोकसभा में एक भी मुस्लिम सांसद नहीं है और वक्फ पर बहस में बिल के पक्ष में बोलने के लिए सत्तारूढ़ पार्टी से एक भी निर्वाचित मुस्लिम सांसद नहीं था। इससे पता चलता है कि संसद में मुसलमानों की ओर से पक्ष रखने वालों की संख्या बहुत कम थी। हम उन सभी सांसदों और राजनीतिक दलों को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस विधेयक का विरोध किया। हमें उम्मीद है कि वे इस विधेयक के खिलाफ देशव्यापी विरोध प्रदर्शनों को अपना पूर्ण समर्थन देना जारी रखेंगे और इस अन्यायपूर्ण और असंवैधानिक कानून को खत्म करने के लिए सभी कानूनी, संवैधानिक और लोकतांत्रिक तरीकों का इस्तेमाल करेंगे। जहां तक उन राजनीतिक दलों का सवाल है जो धर्मनिरपेक्षता को कायम रखने का दावा करते हैं, फिर भी इस असंवैधानिक कानून का समर्थन करते हैं, हमारा मानना है कि उनका पाखंड राजनीतिक अवसरवाद और धोखे का सबसे खराब उदाहरण है। उन्हें इस अल्पकालिक राजनीतिक अवसरवाद की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी और हो सकता है कि वे अपने निर्वाचन क्षेत्रों में दोबारा सत्ता का स्वाद न चख पाएं।

गाजा की स्थिति पर टिप्पणी करते हुए, सैयद सआदतुल्लाह हुसैनी ने कहा कि हम गजा में इज़रायल के तीव्र हवाई हमलों की कड़ी निंदा करते हैं , विशेष रूप से राफा में, जहां विस्थापित फिलिस्तीनी शरण लिए हुए हैं। हमलों में निर्दिष्ट ₹सुरक्षित क्षेत्रों₹ में स्थित शिविरों को निशाना बनाया गया, जिसमें महिलाओं और बच्चों सहित निहत्थे नागरिक मारे गए। इजरायल ने इस्लाम के सबसे पवित्र महीने रमजान के सेहरी के समय बार-बार और जानबूझकर नागरिकों को निशाना बनाया। उन्होंने विस्थापित परिवारों को आश्रय देने वाले गाजा सिटी स्कूल पर बमबारी की। यह सब इजरायल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कानून, मानवाधिकारों और मानव जीवन के प्रति घोर अवमानना को दर्शाता है। संयुक्त राष्ट्र ने बताया है कि उत्तरी गाजा में भोजन, पानी और चिकित्सा आपूर्ति की भारी कमी है तथा अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई है। अक्टूबर 2023 से अब तक 50,000 से अधिक और गाजा की 7% आबादी मृत या घायल हो चुकी है, फिलिस्तीनियों का यह व्यवस्थित विनाश विशुद्ध रूप से नरसंहार है जिसके लिए इज़रायली शासन को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। हालांकि, अमेरिका के नेतृत्व में पश्चिमी देश इजरायल को जवाबदेही से बचाने में लगा हुआ है, जिससे मानव अधिकारों की वकालत करने में उसका पाखंड उजागर है। वह बर्बर इजरायली शासन को बिना शर्त समर्थन देकर युद्ध अपराधों को बढ़ावा दे रहा है। मुस्लिम बहुल देशों सहित अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की चुप्पी और निष्क्रियता यह उजागर करती है कि न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता केवल खोखली बयानबाजी है। फिलिस्तीनी संघर्ष एक दमनकारी और उपनिवेशवादी शासन के खिलाफ अस्तित्व, सम्मान और स्वतंत्रता की लड़ाई है। उनका संघर्ष उत्पीड़ितों के लचीलेपन और उपनिवेशवादी हिंसा के खिलाफ मुक्ति की मांग करने वाले लोगों की अटूट इच्छाशक्ति का प्रतीक है ।जमात-ए-इस्लामी हिंद गाजा में नागरिक हत्याओं पर भारतीय विदेश मंत्रालय की चिंता का स्वागत करती है और कुछ राजनीतिक नेताओं द्वारा फिलिस्तीन समर्थक बयानों की सराहना करती है। हम सरकार से आग्रह करते हैं कि वह अकारण इज़रायली हिंसा को रोकने के लिए ठोस और निर्णायक कार्रवाई करे और फिर से युद्धविराम को सुनिश्चित करे। हमें अपनी आवाज उठानी होगी, न्याय की मांग करनी होगी और एक ऐसे भविष्य की दिशा में काम करना होगा जहां फिलिस्तीनी लोग सम्मान, शांति और सुरक्षा के साथ जीने के लिए स्वतंत्र हों।

सिंधी रॉयल क्लब सिंधी चेटी चंड मेला का पंजाबी बाग़ में करेगा आयोजन

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। सिंधी चेटी चंड मेला का आयोजन रविवार 13 अप्रैल 2025 को पंजाबी बाग पार्क, रिंग रोड, पंजाबी बाग, नई दिल्ली में सिंधी रॉयल क्लब अपने सहयोगी सिंधी जागृत सभा के सहयोग से आयोजन करेगा। इसकी जानकारी कार्यक्रम के आयोजक सिंधी रॉयल क्लब के अध्यक्ष विनोद नयनवानी ने पत्रकार वार्ता में दिया उन्होंने आगे बताया इस सिंधी चेटी चंड मेला में सिंधी व्यंजन सहित सिंधी सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा जिसमें मुंबई, अहमदाबाद, अजमेर, दिल्ली के सिंधी मशहूर कलाकारों द्वारा कार्यक्रम होगा। आगे विनोद नयनवानी ने कहा ऐसे कार्यक्रम होने से समाज के लोगों के अंदर हुनर और अपनी कला दिखाने का जोश आता है और साथ ही साथ सिंधी समाज की संस्कृति और कला की विरासत को अगली पीढ़ी को पहुंचाया जा सकता है।

इस अवसर पर सिंधी चेटी चंड मेला के आयोजक के सहयोगी सिंधी जागृत सभा के अध्यक्ष मनोहर बलवानी ने कहा इस कार्यक्रम में सिंधी व्यंजन के साथ साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम में सिंधियत की रंग सिंधी ढोल एवं शहनाई, सिंधी गायक और बहुत सारे सिंधी व्यंजन पर प्रतियोगिता होंगे जिसपर। मनोहर बलवानी ने आगे बताया कार्यक्रम शाम 5:30 बजे आरंभ होगा जो रात्रि 11 बजे तक चलेगा। इसमें दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता, लोकसभा के सांसद माननीय श्री शंकर लालवानी सहित अनेकों अतिथि पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगे। इस अवसर पर मनोहर बलवानी ने बताया इस कार्यक्रम में सिंधी समाज के हास्य कलाकार पृथ्वी एलानी एवं जय एलानी सतना से सिंधियत के रंग बिखरने के लिए आ रहे हैं।

इस अवसर पर सिंधु समाज दिल्ली (पंजीकृत) के महासचिव नरेश कुमार बेलानी ने कहा इस कार्यक्रम में सिंधी काउंसिल ऑफ इंडिया, इस अवसर पर सिंधु समाज दिल्ली (पंजीकृत) सहित सभी सिंधी समाज बढ़चढ़ कर भाग ले रही है इसलिए कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी सिंधी संस्थाएं अपने अपने क्षेत्र के पंचायतों के साथ मिलकर वहां के लोगों को कार्यक्रम में लाने की जिम्मेदारी लिया है इसलिए इस कार्यक्रम में जो लोग भी आना चाहें उनके लिए प्रवेश फ्री है किसी भी जानकारी के लिए अपने नजदीकी सिंधी पंचायत से संपर्क कर सकते हैं। नरेश बेलानी ने आगे कहा इस मेले में पार्किंग और मेले में प्रवेश निशुल्क है। मेले का आनंद पुरे परिवार सहित कोई भी ले सकता है।

इस अवसर पर सिंधु समाज दिल्ली (पंजीकृत) के अध्यक्ष जगदीश नागरानी ने कहा इस मेले से समाज के सभी वर्गों को सिंधी समाज का खान पान, व्यंजन, भाषा, संस्कृति, इत्यादि जानने का अवसर प्रदान करेगा।

संसद द्वारा पारित वक्फ संशोधन बिल को सुप्रीम कोर्ट रद्द कर सकता है!

रामस्वरूप रावतसरे

वक्फ संशोधन बिल आखिरकार जोरदार हंगामे के बाद संसद के दोनों सदनों यानी लोकसभा और राज्यसभा से बहुमत के साथ पारित हो गया है। इसे लेकर कांग्रेस समेत कई पार्टियों ने विरोध जताया था मगर सरकार ने सदनों में चर्चा करने के बाद इस पर वोटिंग करा ली, जिसमें यह कानून पास हो गया। अब कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने ऐलान किया है कि उनकी पार्टी इस मुद्दे को लेकर सुप्रीम कोर्ट जाएगी और इस बिल की वैधता को चुनौती देगी। कुछ मुस्लिम संगठनों ने भी सुप्रीम कोर्ट में इस बिल को चुनौती देने की बात कही है। अब सवाल उठता है कि क्या संसद के बनाए कानूनों की समीक्षा करने का अधिकार सुप्रीम कोर्ट को है। क्या न्यायपालिका संसद के बनाए कानून को रद्द कर सकती है?

कानून के जानकारों की माने तो सुप्रीम कोर्ट को संविधान का संरक्षक माना जाता है। ऐसे में वह यह सुनिश्चित करने के लिए संसद के बनाए गए कानूनों की समीक्षा करता है कि वे संविधान के अनुरूप हों। यदि सुप्रीम कोर्ट को लगता है कि कोई कानून संविधान के खिलाफ है, तो वह उसे रद्द कर सकता है। हालांकि संसद को संविधान में संशोधन करने की शक्ति प्राप्त है लेकिन वह संविधान के मूल ढांचे को नहीं बदल सकती है। आमतौर पर संसद से किसी भी पारित कानून को सुप्रीम कोर्ट रद्द नहीं कर सकता है।

कानून के जानकारों का यह भी कहना है कि संविधान के अनुसार, संसद केवल संविधान को बदलने या संविधान में संशोधन करने के लिए उत्तरदायी है। संसद के पास केवल नए कानूनों का पारित करने का अधिकार है। संविधान के अनुच्छेद 13 के अनुसार यदि कोई कानून संविधान के विरुद्ध होता है तो उसे सुप्रीम कोर्ट रद्द कर सकता है। ऐसे में संसद के अलावा किसी भी संस्था या व्यक्ति को किसी पारित कानून को रद्द करने का अधिकार नहीं है। संविधान के जरिए स्थापित संस्थाओं जैसे कि सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्टों के पास केवल विशेष विधि और न्याय अधिकार होते हैं जो कि उन्हें किसी कानून को रद्द करने का अधिकार देते हैं।

कानून विशेषज्ञों के अनुसार संसद सभी विषयों पर कानून बना सकती है मगर वह संविधान के मूल ढांचे में बदलाव नहीं कर सकती है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 368 (1) संसद को संविधान में निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार किसी भी प्रावधान को जोड़कर, बदलकर या हटाकर संविधान में संशोधन करने की शक्ति प्रदान करता है।

1973 के ऐतिहासिक केशवानंद भारती मामले में संविधान के बुनियादी ढांचे के सिद्धांत पर व्यापक रूप से चर्चा हुई। इसमें यह निष्कर्ष निकला कि एक संवैधानिक संशोधन भी भारतीय संविधान के मूल ढांचे को संशोधित नहीं कर सकता है। बुनियादी संरचना सिद्धांत का मानना है कि भारतीय संसद के पास भारतीय संविधान को संशोधित करने या समाप्त करने का अधिकार नहीं है। कानून के तहत व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा इस सिद्धांत के अभिन्न अंगों में से एक है।

भारतीय संविधान का भाग ।।। (अनुच्छेद 12-35) कुछ स्वतंत्रताओं की रक्षा करता है। वहीं, अनुच्छेद 13 किसी भी नए कानून को लागू करने पर रोक लगाता है जो इन स्वतंत्रताओं का उल्लंघन कर सकता है। यह प्रावधान न्यायालयों को संविधान के अनुसमर्थन से पहले और बाद में बनाए गए कानूनों की संवैधानिकता का पता लगाने का अधिकार देता है। मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए सुप्रीम कोर्ट हैबियस कॉर्पस, परमादेश, उत्प्रेषण और क्वो वारंटो जैसे रिट जारी कर सकता है। विधायिका और कार्यपालिका पर न्यायपालिका का अधिकार संविधान के शक्तियों के पृथक्करण के प्रावधान को कायम रखता है।

इस संबंध में कानून विशेषज्ञ अनिल सिंह के अनुसार फरवरी, 2023 में एक मामले की सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा था- कानून बनाना संसद की संप्रभुता है, हम इसमें दखल नहीं देंगे। इस टिप्पणी के साथ शीर्ष अदालत ने एक उम्मीदवार को दो विधानसभा या संसदीय क्षेत्र से एकसाथ चुनाव लड़ने से रोकने की मांग पर विचार करने से इनकार कर दिया था। ऐसे में वक्फ संशोधन विधेयक के मामले में अगर चुनौती दी गई तो सुप्रीम कोर्ट कुछ ऐसा ही कह सकता है। उस वक्त चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया यानी सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस जेबी पारदीवाला की पीठ ने कहा कि कई कारणों से उम्मीदवार अलग-अलग सीटों से चुनाव लड़ सकते हैं। यह संसद की संप्रभुता के दायरे में आने वाली विधायी नीति का प्रश्न है। आखिर यह संसद की इच्छा है कि राजनीतिक लोकतंत्र को इस तरह का विकल्प देकर आगे बढ़ाया जाए या नहीं। उसे ही तय करने दिया जाए।

सुप्रीम कोर्ट में इन संवैधानिक आधार पर विपक्ष चुनौती दे सकता है कि यह विधेयक संविधान के अनुच्छेद 25 यानी धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन करता है। अनुच्छेद 25 भारतीय नागरिकों को अपनी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार संपत्ति और संस्थानों का प्रबंधन करने का अधिकार देता है। ऐसे में अगर वक्फ संपत्तियों का प्रशासन बदलता है या इसमें गैर-मुस्लिमों को शामिल किया जाता है, तो यह धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन हो सकता है। संविधान के अनुच्छेद 26 यानी धार्मिक संस्थाओं के प्रशासन का उल्लंघन। यह अनुच्छेद धार्मिक समुदायों को अपनी धार्मिक संस्थाओं को प्रबंधित करने का अधिकार देता है। इस विधेयक से वक्फ बोर्ड के अधिकारों में कमी आ सकती है जिससे यह प्रावधान प्रभावित हो सकता है। संविधान के अनुच्छेद 29 और 30 यानी अल्पसंख्यकों के अधिकारों की सुरक्षा का उल्लंघन। मुस्लिम संगठनों का दावा है कि यह विधेयक अल्पसंख्यकों को कमजोर कर सकता है और उनकी संपत्तियों को सरकारी नियंत्रण में ले सकता है।

कानून विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि कई बार संसदीय कानूनों को कोर्ट में चुनौती दी गई है। पिछले साल सुप्रीम कोर्ट ने राजनीतिक पार्टियों को चंदे के लिए लाई गई चुनावी बॉन्ड योजना को रद्द कर दिया था। 2023 में सुप्रीम कोर्ट ने जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद-370 हटाने के फैसले को बरकरार रखा था। अनुच्छेद-370 को केंद्र सरकार ने 2019 में निरस्त कर दिया था जिसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई थी। ऐसे में ज्यादा संभावना है कि सुप्रीम कोर्ट वक्फ विधेयक की याचिका ही मंजूर न करे। वह ज्यादा से ज्यादा यह देख सकता है कि वक्फ का मसला धार्मिक मामले से जुड़ा है या नहीं और यह संविधान का उल्लंघन तो नहीं करता है।

डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर के बताए रास्ते पर चलकर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की जा सकती हैं : उपेंद्र सिंह

आगरा, संजय साग़र सिंह। पूज्य डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर के जन्मदिवस संविधान पर वरिष्ठ भाजपा नेता उपेंद्र सिंह ने डॉ. अंबेडकर जी के बलिदान एवं योगदान और उनके विचारों पर प्रकाश डाला और कहा कि डॉ. अंबेडकर जी ने भारतीय संविधान के निर्माण के साथ-साथ समाज में व्याप्त धार्मिक और सामाजिक असमानताओं के खिलाफ भी संघर्ष किया। उनका जीवन शोषितों, वंचितों, और महिलाओं के अधिकारों के लिए समर्पित था। डॉ. अंबेडकर जी का दृष्टिकोण यह था कि समाज में आर्थिक सामाजिक समानता और स्वतंत्रता होनी चाहिए, और इसके लिए नैतिक शिक्षा और वैचारिक संघर्ष की आवश्यकता है। उनका प्रसिद्ध उद्घोष ₹शिक्षित बनो, राष्ट्रहित में संगठित रहो, वैचारिक संघर्ष करो₹ आज भी युवाओं को प्रेरित करता है।

श्री सिंह ने डॉ. बाबा साहब के संविधान को सुरक्षा कवच बताते हुए कहा कि यह हम सभी के लिए न्याय, एकता, और आर्थिक सामाजिक समानता के अधिकार की गारंटी है। उन्होंने संविधान दिए कर्तव्यों और अधिकारों की रक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया और यह भी बताया कि संविधान केवल कानूनी दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह देशहित में, नैतिक और मौलिक अधिकारों का स्रोत है। डॉ. बाबा साहब मानते थे कि राष्ट्रहित में सर्व समाज की एकता को मजबूत किया जाना चाहिए और हर व्यक्ति को समाज में समान आर्थिक एवं सामाजिक सम्मान और अधिकार मिलने चाहिए।

वरिष्ठ भाजपा नेता उपेंद्र सिंह ने डॉ. अंबेडकर के योगदान और बलिदान को याद करते हुए कहा कि उनका उद्देश्य समाज में आर्थिक एवं सामाजिक असमानता और अशिक्षा को समाप्त करना था, और उन्होंने महिलाओं के अधिकारों पर भी विशेष ध्यान दिया। वे चाहते थे कि हर नागरिक को समान अधिकार मिलें और यही उनके जीवन का उद्देश्य था। राष्ट्रहित में, उन्होंने अपने विचारों के माध्यम से न केवल दलितों बल्कि सभी वर्गों को सम्मान और अधिकार देने की महत्वपूर्ण बात की हैं।

आखिरकार, वरिष्ठ भाजपा नेता उपेंद्र सिंह ने कहा कि डॉ. अंबेडकर जी के बताए रास्ते पर चलकर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की जा सकती है, और हम सभी को उनके विचारों को आत्मसात कर संविधान में दिए कर्तव्यों और अधिकारों की रक्षा के लिए संकल्पित होना चाहिए।

कानपुर में 30 फीट गहरी खाई में गिरा ट्रक, ड्राइवर की जलकर मौत

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां जिले में तेज रफ्तार से मौतों का सिलसिला लगातार जारी है, जिसके क्रम में बिधनू में एक दर्दनाक सड़क हादसे में डंपर चालक की जलकर मौत हो गई। बीती देर रात यह हादसा शंभुआ दक्षिणांचल विद्युत उपकेंद्र के पास हुआ। जानकारी के मुताबिक हमीरपुर से लखनऊ जा रहे मौरंग लदे डंपर के चालक श्यामजी द्विवेदी (35) की दुर्घटना में मौत हो गई। रात करीब 2 बजे डंपर अनियंत्रित होकर पहले पेड़ से टकराया। फिर 30 फीट गहरी खाई में जा गिरा। इस दौरान डंपर की केबिन में शॉर्ट सर्किट से आग लग गई जिसमें उन्नाव के हसनगंज मुहान ग्राम पिलखना के रहने वाले चालक श्यामजी की मौत हो गई। इस बीच सूचना मिलने पर घाटमपुर से पहुंची दमकल ने आग पर काबू पाया। बिधनू थाना प्रभारी जितेंद्र प्रताप सिंह के अनुसार, सोमवार सुबह चालक के शव के अवशेष बाहर निकाले गए। केबिन में सीट के नीचे मिले मोबाइल फोन से चालक की पहचान की गई। पुलिस ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

रिश्तों की चिता..

कभी एक आँगन था...
जहाँ माँ की साड़ी की ओट में
दुनिया छुप जाया करती थी।
अब उसी आँगन में,
"सीमा रेखा" खींची गई है...
जमीनी नक्शे से रिश्तों का नापा
जा रहा है!

कभी जो थाली में एक साथ
खाते थे—
अब "हिस्से" गिने जाते हैं...
और थाली से ज़्यादा "बयान"
महत्त्वपूर्ण हो गए हैं।
भाई नहीं बोलते अब— वो
वकील से बात करते हैं।

माँ की रुलाई अब दीवार के
उस पार नहीं सुनाई देती,
क्योंकि कानों पर कानूनी
हेडफ़ोन चढ़ा है...
और दिल... दिल तो अब
स्टाम्प पेपर से ज्यादा मुलायम
नहीं रहा।

जायदादें क्या बाँटी यारों...
बँट तो हम गए थे उस दिन,
जब पहली बार "मेरा" और
"तेरा"
घर के भीतर बोला गया था।
वो पहला शब्द ही अंतिम वार
था — भाईचारे पर।

कभी जिस ज़मीन पर
हमारे पाँवों के निशान थे,
अब उस पर जूते चलते हैं...
और दस्तख़तों से तय होता है,
कौन किसका, कितना अपना
है।

अब भी अगर पूछो —
₹क्या मिला इस जायदाद से?
तो जवाब बस इतना है:
₹एक दीवार, चार हिस्से,
और अनगिनत रिश्तों की
चिता...₹

जायदादें कहाँ बँटी थीं...
जायदादों में बँट गए भाई।

-प्रियंका सौरभ

मैं विषपान करता हूं

हर मुस्कान के पीछे,
छिपा होता है एक चीखता हुआ सच।
हर शब्द जो तुम पढ़ते हो,
वो मैंने आँसुओं से लिखा है — स्याही
से नहीं।

मैं रोज़ अपने ही अंदर उतरता हूं,
जहाँ उम्मीदें दम तोड़ चुकी हैं,
और फिर वहां से निकालता हूं
एक टुकड़ा कविता का —
जिसे तुम 'रचना' कहते हो।

ये कोई कल्पना नहीं,
ये कोई सजावटी गुलदान नहीं,
ये वो काँटा है
जो मैंने हर दिन सीने में चुभोया है —
सिर्फ़ इसलिए कि तुम समझ सको
कि दर्द भी सुंदर हो सकता है।

मैं पुरस्कारों के लिए नहीं लिखता,
मंच की तालियों के लिए नहीं।
मैं लिखता हूं
क्योंकि नहीं लिखूं तो मर जाऊं।
क्योंकि लिखना —
मेरे विषपान का प्रतिकार है।

-डॉ.सत्यवान सौरभ

भारत ने विभिन्न देशों से मुक्त व्यापार समझौते करने में बढ़ाई दिलचस्पी

कमलेश पांडेय

भारत ने दो देशों के बीच मुक्त व्यापार समझौते करने में दिलचस्पी दिखाई है ताकि उसके कारोबारियों को भी द्विपक्षीय व्यापार के फायदे मिल सकें। जानकारों का कहना है कि भारत अमेरिका समेत ब्रिटेन, यूरोपीय संघ, ओमान, कतर, न्यूजीलैंड, पेरू, श्रीलंका आदि देशों के साथ मुक्त व्यापार और द्विपक्षीय कारोबार समझौतों पर वार्ता कर रहा है जो यदि सफल हुआ तो इससे हासिल नए बाजार में भारत के छोटे उद्योगों को लगभग डेढ़ दर्जन से ज्यादा करार मिलेंगे। समझा जाता है कि इससे अमेरिका द्वारा भारत पर लगाये गए जवाबी आयात शुल्क भी बेअसर हो जाएंगे।

इस बारे में आर्थिक मामलों के जानकारों का कहना है कि यदि लक्षित देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों को करने में भारत सफल हो जाता है तो न केवल सीमा शुल्क में कमी आएगी बल्कि उन्हें खत्म भी किया जा सकता है। इससे वहां के बाजारों तक भारतीय मालों की पहुंच भी आसान हो जाएगी। इसके अलावा सम्बन्धित देशों के बीच व्यापार की गति तेज होगी और वहां होने वाले निवेश की सुरक्षा भी सुनिश्चित होगी। साथ ही, बौद्धिक संपदा की रक्षा संभव हो सकेगी। विभिन्न सेवाओं का व्यापार भी बढ़ेगा। इससे जहां उन देशों के साथ लॉजिस्टिक लागत कम आएगी, वहीं छोटे व्यवसायों को बम्पर मौके मिलेंगे।

यही वजह है कि अमेरिका द्वारा भारत पर लगाए गए जवाबी टैरिफ यानी आयात शुल्क के बीच भारत ने दुनिया के बाकी देशों के साथ जारी व्यापार समझौतों की गति तेज कर दी है। बहरहाल भारत सरकार की कोशिश है कि न केवल अमेरिका के साथ द्विपक्षीय समझौता तेजी से पूरा हो बल्कि यूरोपीय संघ, न्यूजीलैंड, ओमान, ब्रिटेन जैसे अन्य देशों के साथ भी मुक्त व्यापार (एफटीए) और द्विपक्षीय समझौतों को जल्द से जल्द पूरा किया जाए। इसके दृष्टिगत भारत सरकार ने अपनी ओर से ततपरता बढ़ा दी है ताकि भारतीय मालों पर अमेरिका द्वारा लगाए गए 26 प्रतिशत आयात शुल्क (अमेरिकी रेसिप्रोकल टैक्स) का न्यूनतम असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़े। समझा जाता है कि भारत सरकार की इस विषयक सफलता से भारत के उद्यमियों को अन्य देशों के साथ मिलकर कारोबार करने का मौका मिलेगा।

उल्लेखनीय है कि मौजूदा वक्त में अमेरिकी व्यापार नीतियों के परिवर्तित स्वरूप को देखते हुए अन्य देशों ने भी भारत के साथ चल रहे व्यापार समझौतों को लेकर जारी वार्ता में तेजी लाने की इच्छा जताई है जिसे भारतीय प्रशासन ने भी हरी झंडी दे दी है। उल्लेखनीय है कि फिलवक्त भारत द्वारा न्यूजीलैंड, अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोपीय संघ (ईयू), ओमान, पेरू, कतर, और श्रीलंका जैसे 20 से अधिक देशों के साथ भी व्यापार समझौतों पर वार्ता की जा रही है जिसके सार्थक परिणाम शीघ्र मिलने की उम्मीद है। इनमें अमेरिका, कतर, ओमान, ब्रिटेन और यूरोपीय संघ के साथ जारी वार्ता को अच्छी खासी प्राथमिकता दी जा रही है ताकि इसके सार्थक परिणाम भी बहुत जल्द ही सामने आएं। वहीं, इस बात के प्रबल आसार हैं कि जल्द से जल्द ही इन समझौतों को अंतिम रूप दे दिया जाएगा क्योंकि अब इन्हीं के जरिए भारत बाकी देशों के साथ मिलकर व्यापार के नए अवसर तलाशने की कोशिश कर रहा है।

जानकार बताते हैं कि भारत ऑस्ट्रेलिया समेत 13 देशों से इस बाबत पहले ही समझौते कर चुका है। भारत ने विभिन्न देशों/क्षेत्रों अर्थात् जापान, दक्षिण कोरिया, आसियान क्षेत्र के देशों और दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) मॉरीशस, संयुक्त अरब अमीरात, ऑस्ट्रेलिया के साथ 13 क्षेत्रीय व्यापार समझौते (आरटीए)/मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर हस्ताक्षर किए हैं। हालांकि जानकारों का कहना है कि व्यापार समझौतों के जरिए आगे बढ़ने के अवसर हैं लेकिन इसी के साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं जिन्हें समझे जाने की जरूरत है। विशेषज्ञ बताते हैं कि भले ही भारत ने कुछ दक्षिण एशियाई देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते किये हैं लेकिन अब चीन उन देशों में अपनी इकाई लगाकर भारत को माल भेज रहा है जिसे रोके जाने के कूटनीतिक प्रयास करने होंगे, या फिर ऐसे मुक्त व्यापार समझौतों को लेकर भी सजग रहना होगा अन्यथा भारत के राष्ट्रीय हितों को नुकसान तय है।

बता दें कि अमेरिका द्वारा भारत पर 26 प्रतिशत अतिरिक्त आयात शुल्क लगाने से कपड़ा और परिधान, खनिज पेट्रोलियम, कृषि, मांस, प्रसंस्कृत पैकेट, प्लास्टिक सामान, मेडिकल, चमड़ा, कागज, हीरे, सोना, स्वर्ण उत्पाद, स्टील और धातु, मशीन, कम्प्यूटर, रसायन, फार्मा, इलेक्ट्रिक उत्पाद और टेलिकॉम आदि क्षेत्रों पर सर्वाधिक असर पड़ेगा, इसलिए भारत सरकार इनकी वैकल्पिक राह आसान बनाने में जुटी हुई है। उल्लेखनीय है कि दो देशों के बीच होने वाले द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते के जरिए व्यापार को सुगम बनाया जाता है क्योंकि समझौते के बाद दोनों पक्षों के बीच व्यापार करना आसान हो जाता है। इस तरह के समझौते के दृष्टिगत दोनों देश मिलकर अपने कारोबारियों व कम्पनियों को आयात शुल्क मुक्त या फिर एक निर्धारित न्यूनतम शुल्क के जरिए वस्तुओं एवं सेवाओं की पहुंच को सुनिश्चित कराते हैं। इसके साथ ही लॉजिस्टिक, भुगतान गारंटी व व्यापार से जुड़ी अन्य सुविधाएं मिलती हैं।

आंकड़े बताते हैं कि भारत और ब्रिटेन के बीच एफटीए को लेकर साल 2022 से लेकर अबतक 14 दौर की चर्चा संपन्न हो चुकी है जिसके बाद अब वार्ता में पुनः तेजी दृष्टिगोचर हुई है। वहीं, भारत और यूरोपीय संघ (ईयू) के बीच जल्द ही एफटीए वार्ता को अंतिम रूप देने की तैयारी चल रही है। वहीं भारत और ओमान के बीच सीईपीए को लेकर आधिकारिक तौर पर वार्ता नवंबर 2023 में शुरू हुई थी, जिसके मद्देनजर अब समझौता जल्द करने की तैयारी है और उसे अंतिम रूप देने की कोशिशें परवान चढ़ रही हैं। वहीं भारत और यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार संघ के बीच यानी भारत, आइसलैंड, नार्वे, स्विट्जरलैंड, लिकटेंस्टीन के बीच एक टीईपीए समझौता हुआ है जिसे और व्यापक बनाने की पहल जारी है। वहीं, भारत और कतर के बीच एफटीए करने की बात चल रही है जिसके तहत दोनों देश अगले पांच वर्षों में अपने व्यापार को दुगुना यानी 28 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्धता जता चुके हैं। वहीं, भारत और न्यूजीलैंड के बीच एफटीए प्रस्तावित है जिसको लेकर 10 वर्षों बाद फिर से बातचीत शुरू हुई है क्योंकि दोनों देश अब जल्द से जल्द इस समझौता को पूरे करने के पक्ष में हैं। वहीं, भारत और अमेरिका के बीच भी द्विपक्षीय व्यापार समझौता को लेकर बातचीत चल रही है जिसके तहत वर्ष 2030 तक व्यापार को दुगुना करके 500 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है।

दरअसल, उपर्युक्त देशों के साथ चल रही एफटीए, सीईपीए, टीईपीए वार्ता को यदि जल्दी ही लक्षित मुकाम मिल जाता है तो दोनों देशों के बीच आयात कर (टैरिफ) कम किया जाएगा या पूरी तरह से हटा दिया जाएगा, इससे व्यापार सस्ता हो जाएगा। यही नहीं, आयात की सीमाएं यानी कोटा लाइसेंस और तकनीकी नियमों को कम कर वस्तुओं और सेवाओं को सम्बन्धित दूसरे देशों में बेचना आसान हो जाएगा। इसके अलावा, दोनों देशों के बीच सीमा शुल्क की प्रक्रियाएं आसान हो जाएंगी, कागजी काम कम होंगे और सामान को एक देश से दूसरे देश में ले जाने में समय और लागत दोनों घट जाएगी। इसके अतिरिक्त विदेशी कम्पनियों का पैसा सुरक्षित रहता है और यदि कोई विवाद होता है तो उसे सुलझाने के लिए कानूनी तरीके उपलब्ध होते हैं। वहीं, पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क जैसी चीज़ों को संरक्षण मिलता है ताकि नए आविष्कार करने वालों और रचनाकारों के अधिकार सुरक्षित रहें। जबकि बैंकिंग, टेलीकॉम और पेशेवर सेवाओं जैसे क्षेत्रों में नियम आसान करके इनका व्यापार बढ़ाया जाता है।

सरकार उद्योगों को लॉजिस्टिक सेवाएं भी उपलब्ध कराती हैं, जिससे उनके लिए यह लागत कम हो जाती है। इससे छोटी कम्पनियों और व्यापारियों को भी विदेश में सामान बेचने का मौका मिलता है, जो पहले सिर्फ बड़ी कम्पनियों तक सीमित था। यही वजह है कि सभी सरकारें दिलचस्पी वाले देशों में मुक्त व्यापार समझौतों को बढ़ावा देती हैं और द्विपक्षीय व्यापार समझौते करती हैं। इस प्रकार दुनियावी अर्थव्यवस्था में तेजी से अपनी जगह बनाते जा रहे भारत के व्यापार के लिए विभिन्न दरवाजे स्वतः खुल जाएंगे जिससे हमारे उद्यमियों को भी ढेर सारे फायदे होंगे।

वरिष्ठ पत्रकार व स्तम्भकार

हिंदुस्तान में बढ़ती हुई तलाक की महामारी चिंतनीय

अशोक कुमार झा

हमारा देश का इतिहास, हमारी संस्कृति, हमारी परंपरा, हमारा धर्म, हमारा सोच हमेशा से पूरी दुनिया से कुछ अलग और विशेष रहा है।

हमारी सनातन संस्कृति में कई ऐसी खास चीजें रही है जो हमेशा से हमें पूरी दुनिया में अलग पहचान हमें दिलाती रही है।

वैश्वीकरण के साथ जैसे जैसे हमारा जुड़ाव हमारी संस्कृति के बाहर के लोगों के साथ होता गया और हमने अपनी संस्कृति से बाहर के लोगों की संस्कृति को करीब से समझना शुरू किया तो हमें अपनी संस्कृति की कई ऐसी चीजें जो हम परंपरा से निभाते आ रहे, वह हमें कुरीति सी लगने लगी और हमें दूसरे की संस्कृति में आकर्षण होने लगा।

जैसा कि हमारी संस्कृति में सती प्रथा या सिर्फ एक बार शादी की प्रथा या फिर वैदिक रीति रिवाज से शादी करने जैसी प्रथा हमें कुरीति जैसा प्रतीत होने लगी और हमने धीरे धीरे इस कुप्रथा को कम करने की दिशा में सोचना शुरू कर दिया।

धीरे धीरे हम अपनी मूल संस्कृति और संस्कार से दूर होने लगे और बाहर की संस्कृति हमारे अंदर प्रविष्ट होनी शुरू हो गई।

अपनी सोच में इस बदलाव का असर हमारी पीढ़ियों पर होने लगा और हमारी नीचे की पीढ़ी यानी नई पीढ़ी को बाहर की कुछ प्रथाएं अधिक भानें लगी।

उन्हीं में से एक प्रथा जो हमारी संस्कृति में प्रवेश कर चुकी है वह है तलाक नाम की प्रथा। यह प्रथा आज हमारी संस्कृति में एक बहुत बड़ी महामारी का रूप ले चुकी है।

हमारी संस्कृति में शादी का मतलब होता है जन्म जन्म यानी सात जन्म का रिश्ता, जो एक बार जुड़ जाने के बाद हमारी मृत्यु के बाद भी खत्म नहीं होती। साथ ही परिवार का मतलब होता है हमारा अपना जिसके साथ हमारा आत्मीय मिलन हो जाता है जिसके खिलाफ सोचना भी परमात्मा के फैसले पर अंगुली उठाने के समान माना जाता था।

परंतु आज की हमारी नई पीढ़ी की सोच में शादी जैसी पवित्र बंधन को सिर्फ एक रस्म और समझौते की तरह माना जाने लगा है। पहले हम हमेशा रिश्ते को भगवान की देन समझ कर उसे टूटने से बचाने और हर हाल में निभाने के बारे में सोचा करते थे पर हमारी आज की नई पीढ़ी अब बात बात में रिश्ते को तोड़ने की एक दूसरे को धमकियां दिया करते हैं और कई मामले में छोटी छोटी बातों को लेकर शादी जैसे जन्म जन्मांतर के लिए बनाए गए पवित्र रिश्ते एक झटके में टूटते हुए नजर आने लगे हैं जो हमारी संस्कृति के लिए बहुत बड़ी चिंता का विषय है।

आज हम दूसरे धर्मों यानी मुस्लिम महिलाओं में तीन तलाक जैसी प्रथा को कुप्रथा मानकर उसको दूर करने की दिशा में कदम उठाना शुरू किया है जिसका लाभ भी इस देश की कई मुस्लिम महिलाओं को अब तक मिल चुका है परंतु इसके विपरीत हमारी संस्कृति में प्रवेश कर रही इस कुप्रथा के बारे में हमने अभी तक सोचना शुरू नहीं किया है जो हमारी सोच और संस्कृति में जहर की तरह घुलती जा रही है जिस पर समय रहते गंभीरतापूर्वक विचार करने की जरूरत है।

आज इस तलाक जैसी महामारी का दुष्परिणाम हमने अपने कुछ करीबियों को झेलते देखा है। हमारे समाज में बच्चों की खुशहाल जिन्दगी के लिए समय रहते उनके योग्य लड़के या लड़की से शादी कराना और अपने सामने में अपने वंश परंपरा को आगे बढ़ते हुए देखना एक सपना होता है और अपने इस सपने को पूरे करने के लिए अपना मान सम्मान, इज्जत और प्रतिष्ठा सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार हो जाते हैं परंतु हमारी रिश्तों में समझौतावादी प्रवृत्ति की कमी के कारण हमारे आजकल के बच्चे पति पत्नी में एक दूसरे की खूबियां देखने की जगह कमियां ढूंढने में लग जाते हैं जिस कारण शादी के बावजूद हमारा मन का मिलन नहीं हो पाता है और धीरे धीरे वह तलाक जैसी भयावह स्थिति का रूप ले लेती है।

हमारी नई पीढ़ी यह बिल्कुल नहीं सोच पाती है कि इसके बाद उसके माता पिता का क्या होगा ? जब अचानक से उसे अपने बेटे या बेटी की तलाक की खबर मिलेगी, तब उसे कितना चोट पहुंचेगा और उस चोट को वह कैसे संभाल पाएगा ?

हाल ही हमारे एक करीबी जो कुछ दिन पहले तक अपने दोनों बेटियों की शादी करने के बाद काफी स्वस्थ और प्रसन्न रहा करते थे परंतु अचानक से उन्हें जब अपनी एक बेटी का तलाक होने का समाचार प्राप्त होता है, उसके बाद वह कई बीमारियों से ग्रसित होने के साथ साथ काफी कमजोर हो जाते हैं और आज वह अपनी जिंदगी और मौत के बीच से गुजार रहे हैं।

ऐसे कई उदाहरण हमारे देश में हैं जहां बच्चों के तलाक के बाद माता पिता की अचानक कई बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं और बांकी की जिंदगी तड़प तड़प कर घूंट घूंट कर जीने को विवश हो रहे हैं क्योंकि उसके बाद उन्हें लगने लगता हैं अब अपने बच्चों गलती के कारण अब वह अपने समाज में मुंह दिखाने लायक नहीं रह गए हैं।

पेट्रोल-डीजल पर दो रुपये बढ़ी एक साइज ड्यूटी, जानें क्या है असली कीमत, एक लीटर पर कितना लगता है टैक्स

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्र सरकार की ओर से पेट्रोल और डीजल पर एक्साइज ड्यूटी को बढ़ा दिया गया है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि पेट्रोल और डीजल पर सरकार की ओर से कितना टैक्स वसूला जाता है। एक लीटर पेट्रोल की असली कीमत क्या है और आप तक पहुंचते हुए इसमें कितने रुपये तक बढ़ जाते हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में आम आदमी के लिए पेट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहनों को चलाना पहले ही महंगा है। अब सरकार की ओर से इस पर एक्साइज ड्यूटी को भी बढ़ा दिया गया है। लेकिन क्या आपको पता है कि एक लीटर पेट्रोल -डीजल की असली कीमत क्या है? सरकार की ओर से इस पर कितना टैक्स वसूल किया जाता है। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं।

100 रुपये से ज्यादा है तेल की कीमत

भारत के कई राज्यों में एक लीटर पेट्रोल की कीमत 100 रुपये से भी ज्यादा है। वहीं दिल्ली में इसकी कीमत 94-95 रुपये प्रति लीटर के बीच है। हाल में ही केंद्र सरकार की ओर से एक्साइज ड्यूटी को दो रुपये प्रति लीटर तक बढ़ाया गया है। जिसके बाद यह साफ नहीं है कि एक्साइज ड्यूटी का यह भार भी आम आदमी के ऊपर पड़ेगा या नहीं।

एक्साइज ड्यूटी में बढ़ोतरी के बाद क्या हुई कीमत

एक्साइज ड्यूटी में दो रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी के बाद अब पेट्रोल पर 13 और डीजल पर 10 रुपये प्रति लीटर की दर से एक्साइज ड्यूटी लगाई जाएगी।

कितनी तरह का टैक्स

रिपोर्ट्स के मुताबिक भारत में एक लीटर पेट्रोल पर कई तरह से टैक्स लगाया जाता है। कच्चे तेल के बेस प्राइस पर एक्साइज ड्यूटी के अलावा डीलर कमीशन और चार्ज के साथ ही वैट को भी वसूला जाता है। यह केंद्र के साथ ही राज्यों की सरकारों की ओर से भी लगाया जाता है। देशभर में कच्चे तेल की कीमत और डीलर शुल्क और एक्साइज ड्यूटी एक समान रहती हैं, लेकिन वैट की दर राज्यों के मुताबिक होती है। जिस कारण अलग अलग राज्यों में पेट्रोल की कीमत में अंतर होता है।

क्या है असली कीमत

देश में केंद्र और राज्यों की ओर से लगाए जाने वाले टैक्स से पहले एक लीटर पेट्रोल की कीमत 75.01 रुपये है। इसके बाद इस पर डीलर कमीशन के तौर पर 4.40 रुपये लगाए जाते हैं। अब इस पर दिल्ली में 19.4 फीसदी की दर से वैट लगाया जाता है, जो करीब 15.40 रुपये होता है। इसके बाद दिल्ली में एक लीटर पेट्रोल की कीमत 94.81 रुपये हो जाती है।

टाटा कर्व वर्सेज ग्रांड विटारा भारतीय बाजार में एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को काफी ज्यादा पसंद किया जाता है

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को काफी ज्यादा पसंद किया जाता है। चार मीटर से ज्यादा बड़ी एसयूवी में टाटा की ओर से कर्व को ऑफर किया जाता है। वहीं इस सेगमेंट में मारुति की ओर से ग्रैंड विटारा की बिक्री की जाती है। फीचर्स कीमत और पावर के मामले में किस एसयूवी को खरीदने में समझदारी होगी। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में किसी भी अन्य सेगमेंट के मुकाबले में एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली कारों को सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। इस सेगमेंट में मारुति की ओर से ग्रैंड विटारा और टाटा की ओर से कर्व की बिक्री की जाती है। फीचर्स, कीमत और पावर के मामले में दोनों में से किस एसयूवी को खरीदना आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Tata Curvv vs Maruti Grand Vitara फीचर्स

Tata Curvv में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें शॉर्क फिन एंटीना के साथ जीपीएस, ड्यूल टोन रूफ, ऑटो हैडलैंप, इंटीग्रेटिड रियर स्पॉयलर, एलईडी डीआरएल, सीक्वेंशनल टर्न इंडीकेटर्स, वॉयस असिस्ट पैनोरमिक सनरूफ, कनेक्टिड टेल लैंप, 18 इंच अलॉय व्हील्स, 10.25 इंच का डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, मूड लाइटिंग, फुली ऑटोमैटिक टेंपरेचर कंट्रोल, क्रूज कंट्रोल, जेस्टर पावर्ड टेलगेट, कूल्ड ग्लोव बॉक्स, रेन सेंसिंग वाइपर्स, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, 12.3 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, हरमन ऑडियो सिस्टम, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो जैसे फीचर्स मिलते हैं।

वहीं मारुति की ओर से ग्रैंड विटारा में कई बेहतरीन फीचर्स को दिया जाता है। इसमें एलईडी लाइट्स, फॉलो मी हैडलैंप, शॉर्क फिन एंटीना, एंबिएंट लाइट, पैनोरमिक सनरूफ, वेंटिलेटिड सीट, हेड-अप डिस्प्ले, वायरलैस चार्जर, पैडल शिफ्टर, क्रूज कंट्रोल, पुश बटन स्टार्ट/स्टॉप, रियर एसी वेंट, आर्किमिस साउंड सिस्टम, सुजुकी कनेक्ट जैसे फीचर्स मिलते हैं।

Tata Curvv vs Maruti Grand Vitara सेफ्टी फीचर्स

Tata की ओर से Curvv एसयूवी में कई बेहतरीन सेफ्टी फीचर्स को दिया जाता है। इसमें स्टैंडर्ड तौर पर छह एयरबैग को दिया गया है। जबकि सेफ्टी के लिए आई-टीपीएमएस, ट्रैक्शन कंट्रोल, थ्री पाइंट सीटबेल्ट, सीट बेल्ट रिमाइंडर, 360 डिग्री कैमरा, रियर पार्किंग सेंसर, रियर डिफॉगर, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, इमोबिलाइजर, हिल होल्ड कंट्रोल, हिल डीसेंट कंट्रोल, ईपीबी, एबीएस, ईबीडी, Level-2 ADAS जैसे सेफ्टी फीचर्स दिए गए हैं। वहीं मारुति ग्रैंड विटारा में सुरक्षा का भी काफी ध्यान रखा गया है। इसमें फ्रंट और कर्टेन एयरबैग, 360 डिग्री व्यू कैमरा, रिवर्स पार्किंग कैमरा, रियर पार्किंग सेंसर, टीपीएमएस, हिल होल्ड असिस्ट, इंजन इमोबिलाइजर जैसे कई फीचर्स मिलते हैं।

Tata Curvv Vs Maruti Grand Vitara इंजन

टाटा कर्व के पेट्रोल वेरिएंट में कंपनी की ओर से 1.2 लीटर का रेवोट्रॉन इंजन दिया जाता है। जिससे इसे 120 पीएस की पावर और 170 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसमें 6स्पीड मैनुअल और 7डीसीए ट्रांसमिशन का विकल्प दिया जाता है।

वहीं मारुति ग्रैंड विटारा एसयूवी में कंपनी की ओर से पेट्रोल, सीएनजी और हाइब्रिड तकनीक के विकल्प के साथ इंजन को दिया जाता है। इसमें 1.5 लीटर की क्षमता का नेचुरल एस्पिरेटिड इंजन दिया जाता है। जिससे इसे 92.45 पीएस से लेकर 103.06 पीएस की पावर और 122 से 136.08 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसमें मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ लाया जाता है और इसे एक लीटर में 19.38 किलोमीटर से 27.97 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है।

Tata Curvv Vs Maruti Grand Vitara कीमत

Tata Curvv ICE की शुरुआती एक्स शोरूम कीमत 10 लाख रुपये से शुरू होकर 19.20 लाख रुपये तक जाती है। वहीं मारुति की ओर से ग्रैंड विटारा की शुरुआती एक्स शोरूम कीमत 11.19 लाख रुपये है। वहीं इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 19.99 लाख रुपये है।

हुंडई एक्स्टर Hy CNG का नया वेरिएंट EX हुआ लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री करने वाली निर्माता Hyundai की ओर से एंट्री लेवल एसयूवी के तौर पर Exter की बिक्री की जाती है। एसयूवी के नए वेरिएंट को हुंडई की ओर से लॉन्च किया गया है। नए वेरिएंट के तौर पर आए EX में किस तरह के फीचर्स को दिया जाएगा। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। साउथ कोरियाई की वाहन निर्माता Hyundai की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से हाल में ही एंट्री लेवल एसयूवी के तौर पर ऑफर की जाने वाली Exter Hy CNG को नए वेरिएंट के साथ लॉन्च किया गया है। नए वेरिएंट में किस तरह के फीचर्स को दिया गया है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

हुंडई एक्सटर का नया वेरिएंट हुआ लॉन्च

हुंडई एक्सटर Hy CNG के नए वेरिएंट को भारतीय बाजार में लॉन्च कर दिया गया है। निर्माता की ओर से एसयूवी के नए वेरिएंट के तौर पर EX को लॉन्च किया गया है। जिसमें कई फीचर्स को ऑफर किया गया है। इस वेरिएंट को खासतौर पर युवाओं को आकर्षिक करने के लिए लॉन्च किया गया है। नए वेरिएंट को सीएनजी में बेस वेरिएंट के तौर पर ऑफर किया गया है।

कैसे होंगे फीचर्स

निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक एसयूवी में कुछ फीचर्स को ऑफर किया जा रहा है। जिसमें स्टैंडर्ड तौर पर छह एयरबैग, 4.2 इंच कलर्ड डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लटर, एच-शेप एलईडी टेल लैंप, ड्राइवर सीट हाइट एडजस्टमेंट, की-लैस एंट्री जैसे फीचर्स (Hyundai Exter EX Variant features) को शामिल किया गया है।

कितना दमदार इंजन

निर्माता की ओर से एसयूवी के इंजन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया गया है। इसमें 1.2 लीटर की क्षमता का Kappa इंजन दिया गया है। इस इंजन से एसयूवी को 69 पीएस की पावर और 95.2 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसके साथ 5स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन को दिया गया है।

अधिकारियों ने कही यह बात

हुंडई मोटर इंडिया के डायरेक्टर और सीओओ तरुण गर्ग ने कहा कि हुंडई एक्सटर हाई-सीएनजी डुओ लाइनअप में ईएक्स वेरिएंट की शुरूआत हमारे ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण का प्रमाण है, जो यह सुनिश्चित करता है कि स्मार्ट मोबिलिटी व्यापक दर्शकों तक पहुँच सके। अपनी कुशल बाई-फ्यूल तकनीक, बेहतर सुरक्षा सुविधाओं और हुंडई की विश्वसनीयता के साथ, एक्सटर हाई-सीएनजी डुओ ईएक्स वेरिएंट किफ़ायती और दक्षता का एक संतुलन प्रदान करता है।

कितनी है कीमत

हुंडई एक्सटर के नए वेरिएंट EX को भारतीय बाजार में 7.50 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च (Hyundai Exter Hy CNG EX Variant Price) किया गया है।

किनसे है मुकाबला

हुंडई की ओर से एक्सटर को एंट्री लेवल एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Tata Punch, Renault Kiger, Nissan Magnite जैसी एसयूवी के साथ होता है। इसके अलावा कीमत के मामले में इसे कई हैचबैक और प्रीमियम हैचबैक कारों से भी चुनौती मिलती है।

मारुति की प्रीमियम कारों पर अप्रैल 2025 में मिल रहा लाखों रुपये की बचत का मौका, इन्वीक्टो से लेकर जिम्नी तक पर क्या है ऑफर

रिवहन विशेष न्यूज

भारत की प्रमुख वाहन निर्माता मारुति सुजुकी की ओर से Nexa डीलरशिप पर कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। इन कारों पर April 2025 में लाखों रुपये के डिस्काउंट ऑफर दिए जा रहे हैं। किस कार को खरीदने पर इस महीने कितना डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल मारुति की ओर से प्रीमियम डीलरशिप Nexa के जरिए कई कारों की बिक्री की जाती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक April 2025 के दौरान निर्माता की ओर से अपनी प्रीमियम कारों पर लाखों रुपये के डिस्काउंट ऑफर्स दिए जा रहे हैं। निर्माता किस कार पर इस महीने कितना ऑफर (Maruti Nexa Cars Offers) दे रही है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Ignis पर 62100 की होगी बचत

मारुति की ओर से नेक्सा डीलरशिप पर ऑफर की जाने वाली सबसे सस्ती गाड़ी Ignis पर इस महीने में 62100 रुपये के ऑफर मिल रहे हैं। यह ऑफर इसके एएमटी वेरिएंट्स पर मिल रहे हैं।

Maruti Baleno पर 50 हजार रुपये तक की बचत का मौका

मारुति अपनी की प्रीमियम हैचबैक सेगमेंट में बलेनो की बिक्री की जाती है। April 2025 में इस कार पर हजारों रुपये के Discount Offers दिए जा रहे हैं। कंपनी की ओर से इस महीने में बलेनो को खरीदने पर अधिकतम 50 हजार रुपये तक का फायदा उठाया जा सकता है। यह ऑफर इसके सिग्मा और एएमटी वेरिएंट्स पर दिया जा रहा है। अन्य वेरिएंट्स पर कंपनी इस महीने कई ऑफर्स दे रही है।

Maruti Ciaz पर भी होगी बचत

मारुति की ओर से मिड साइज सेडान कार के तौर पर सियाज को ऑफर किया जाता है। इस कार को April 2025 में खरीदने पर अधिकतम 40 हजार रुपये के ऑफर मिल रहे हैं। यह ऑफर इसके सभी वेरिएंट्स पर मिल रहा है।

Maruti Fronx पर 45 हजार रुपये के ऑफर्स

मारुति की एसयूवी Fronx को April 2025 में खरीदना फायदे का सौदा साबित हो सकता है। इस एसयूवी की पर इस महीने 45 हजार रुपये तक के ऑफर्स दिए जा रहे हैं। एसयूवी के टर्बो वेरिएंट पर इस महीने सबसे ज्यादा बचत की जा सकती है। वहीं एसयूवी के सीएनजी वर्जन पर कैश डिस्काउंट नहीं दिया जा रहा है, लेकिन इस पर स्क्रैपेज और एक्सचेंज बोनस मिल रहे हैं।

Maruti Jimny पर एक लाख रुपये बचेंगे

मारुति की ऑफ रोडिंग एसयूवी के तौर पर आने वाली जिम्नी पर भी April 2025 में लाखों रुपये के ऑफर्स दे रही है। कंपनी की ओर से इस महीने के दौरान जिम्नी पर एक लाख रुपये तक के ऑफर्स दिए जा रहे हैं। यह ऑफर इसके टॉप वेरिएंट एल्फा पर मिल रहा है। इस महीने इसके बेस वेरिएंट जेटा पर डिस्काउंट नहीं मिल रहा है।

Maruti Grand Vitara पर 1.35 लाख रुपये तक की बचत

मारुति की ओर से ग्रैंड विटारा एसयूवी को भी नेक्सा के जरिए ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी को इस महीने खरीदने पर अधिकतम 1.35 लाख रुपये तक की बचत की जा सकती है। एसयूवी के स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड वेरिएंट्स पर यह ऑफर मिल रहा है। इसके अलावा इसके डेल्टा, जेटा और एल्फा वेरिएंट्स पर कुछ कम ऑफर्स दिए जा रहे हैं। एसयूवी के सिग्मा और सीएनजी वेरिएंट्स पर इस महीने कैश डिस्काउंट नहीं मिलेगा, लेकिन स्क्रैपेज और एक्सचेंज डिस्काउंट्स के ऑफर मिल रहे हैं।

Maruti X16 पर 25 हजार रुपये की बचत का मौका

कंपनी की ओर से एमपीवी के तौर पर आने वाली X16 पर April 2025 में 25 हजार रुपये की छूट मिल रही है। इस गाड़ी को इस महीने खरीदने पर सिर्फ स्क्रैपेज बोनस दिया जा रहा है।

Maruti Invicto पर सबसे ज्यादा होगी बचत

मारुति की ओर से नेक्सा डीलरशिप पर सबसे प्रीमियम गाड़ी के तौर पर Maruti Invicto को ऑफर किया जाता है। इस एमपीवी पर इस महीने स्क्रैपेज बोनस और कैश डिस्काउंट के साथ 1.40 लाख रुपये तक बचाए जा सकते हैं। लेकिन इसके जेटा वेरिएंट पर कैश डिस्काउंट नहीं दिया जा रहा है।

शोरूम से मिलेगी पूरी जानकारी

अगर आपको इस महीने मारुति की किसी कार को नेक्सा डीलरशिप के जरिए खरीदना है तो डिस्काउंट ऑफर्स की पूरी जानकारी शोरूम से ही मिलेगी। अलग अलग शहर में डीलरशिप और वेरिएंट के साथ उपलब्धता के मुताबिक ही ऑफर्स को दिया जाता है।

बच्चे बचपन में अपनी माँ से बहुत कुछ सीखते हैं

विजय गर्ग

बचपन में बच्चा राजा होता है। मासूमियत और बेफिक्री, कोमलता, मस्ती, मुस्कुराते चेहरे, आजादी, अनोखी जिद, थोड़ा रोना-धोना, गुस्सा और नाराजगी का भोलापन आदि बचपन की खूबसूरती है। विद्वान पैट्रिक रोथफस लिखते हैं, "जब हम बच्चे होते हैं, तो हम शायद ही कभी अपने भविष्य के बारे में सोचते हैं।" यह भोलापन हमें आनंद लेने के लिए स्वतंत्र करता है, लेकिन जब हम भविष्य के बारे में चिंता करने लगते हैं, तो हम अपना बचपन पीछे छोड़ देते हैं।

मानव जीवन प्रकृति के अमूल्य आशीर्वाद के खजाने से भरा पड़ा है। एक वयस्क मनुष्य सबसे पहले माँ के गर्भ में विकसित होता है और फलता-फूलता है। जन्म के बाद बच्चा अपने आस-पास के वातावरण से जीवन के नियम सीखना शुरू कर देता है। इससे वह सभ्य बनता है। बचपन में यह प्रक्रिया बहुत महत्वपूर्ण है। इससे पहले कि एक बच्चा सभ्य और परिपक्व इंसान बन सके, उसे जीवन के तीन चरणों से गुजरना पड़ता है - बचपन, युवावस्था और बुढ़ापा। इनमें से बचपन मानव जीवन की सबसे अनमोल अवस्था है। बच्चा इस चरण को घर पर ही पूरा करना शुरू करता है, अपनी मां की गोद की गर्माहट और अपने पिता के कंधों से मिलने वाले आलिंगन के साथ। इस प्रकार, बच्चे की संस्कृति घर से ही शुरू होती है। उसे संस्कृति के प्रथम अक्षर और पाठ घर से ही सीखने पड़ते हैं।

शाही बचपन

बचपन में बच्चा राजा होता है। मासूमियत और बेफिक्री, कोमलता, मस्ती, मुस्कुराते चेहरे, आजादी, अनोखी जिद, थोड़ा रोना-धोना, गुस्सा और नाराजगी का भोलापन आदि बचपन की खूबसूरती है। विद्वान पैट्रिक रोथफस लिखते हैं, "जब हम बच्चे होते हैं, तो हम शायद ही कभी अपने भविष्य के बारे में सोचते हैं।" यह भोलापन हमें आनंद लेने के लिए स्वतंत्र करता है, लेकिन जब हम भविष्य के बारे में चिंता करने लगते हैं, तो हम अपना बचपन पीछे छोड़ देते हैं।

जीवन जैसी किताब

मानव जीवन एक प्रकार की पुस्तक है, जिसका पहला पाठ बचपन है। बचपन को जीवन-रूपी पुस्तक का नियम भी कहा जाता है। यदि बचपन सभ्य और सुसंस्कारित होगा तो जीवन की किताब भी सुन्दर होगी। प्रश्न यह है कि इन बचपन के वर्षों में बच्चे का मार्गदर्शन किसने और कैसे किया? उन्हें किस प्रकार के सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्य दिये गये? बड़ा होने पर वह किस तरह का व्यक्ति बना? अपनी मातृभाषा से उनका कितना लगाव था, विरासत और विरासत यानी संस्कृति उससे कितनी जुड़ी थी? इस प्रकार बचपन और संस्कृति एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। जन्म के बाद, बच्चे का पहला रोना, किलकारी मारना, मुस्कुराना और पहली प्रतिक्रिया उसे उसकी मातृभाषा और संस्कृति का परिचय देती है। वह अपने घर, परिवेश और सामाजिक व्यवस्था से जीवन की सम्पूर्ण सांस्कृतिक पद्धति, जिसमें बैठना-खड़ा होना, बोलना-चलना, खाना-पीना, वेश-भूषा, लोक खेल, लोक कथाएँ, लोक गीत, लोक रीति-रिवाज, त्यौहार आदि शामिल हैं, सीखता है। हमारा सरोकार आज के बच्चों को पंजाबी संस्कृति और पंजाबी विरासत तथा सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ना है, ताकि हमारे बच्चे आज के प्रौद्योगिकी और कम्प्यूटरीकरण के डिजिटल युग में सभ्य और स्वस्थ मानव जीवन के धारक बन सकें। माँ से मातृभाषा सीखना

एक बच्चा अपनी मातृभाषा अपनी माँ से सीखता है। इसके माध्यम से वह बड़ा होता है और अपनी सांस्कृतिक घटनाओं से जुड़ता है। संस्कृति को मानव व्यवहार का सीखा हुआ भाग कहा जाता है। मानव जीवन के विनियमित चरित्र को संस्कृति कहा जाता है। ये नियम और सिद्धांत समुदाय द्वारा स्वीकार किये जाते हैं। टीएस इलियट के अनुसार, संस्कृति जीवन जीने का एक तरीका है।

प्यारे, अच्छे व्यवहार वाले बच्चे

संस्कृति बच्चे के व्यवहार को आकार देती है और उसे निखारती भी है। सभ्य आचरण और अच्छे आचरण वाले बच्चे सभी को प्रिय होते हैं। हर माता-पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा प्रतिभाशाली, स्पष्टवक्ता, मधुरभाषी, मेहनती, लोगों द्वारा प्रशंसित हो तथा

जिसका अच्छा आचरण समाज के लिए उदाहरण बने। यह तभी संभव है जब माता-पिता स्वयं आगे आएं। अब यह आम बात हो गई है कि आजकल के बच्चे पंजाबी संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं। वे अपने सांस्कृतिक मूल्यों को भूल रहे हैं। आज की तेज-रफ्तार जीवनशैली में बचपन तेजी से उलझता जा रहा है। कुछ हद तक यह बात सच है। क्या इसके लिए कई कारण जिम्मेदार हैं? आज तकनीक की सुविधा के साथ मानवीय आवश्यकताएं और इच्छाएं भी बदल गई हैं। आधुनिक बचपन कंप्यूटर और मोबाइल गेम्स के दलदल में सिमट कर रह गया है। माता-पिता अपने बच्चों को पूरा समय नहीं दे रहे हैं। माता-पिता स्वयं भी टीवी सीरियलों और मोबाइल स्क्रीन में व्यस्त रहते हैं। दादी, चाची, चाचा, दादा, चचेरे भाई, चाचा और लोकगीत, कहानियां, वार्तालाप और मुहावरे कहने वाले लोगों के बीच के सभी रिश्तों को अंग्रेजी शब्द अंकल-आंटी में संक्षिप्त कर दिया गया है। आज बच्चों से बात करने वाला कोई नहीं है।

माता-पिता को नेतृत्व करना चाहिए।

बच्चों को पंजाबी संस्कृति से जोड़ने में माता-पिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। माता-पिता जैसा व्यवहार करेंगे, बच्चे वैसा ही सीखेंगे। बच्चे की सीखने की प्रक्रिया में पहला स्कूल उसका घर है। घर पर माता-पिता बच्चों के शिक्षक होते हैं। जब बच्चे मोबाइल फोन पर गेम खेल रहे हों तो माता-पिता को उन पर निगरानी रखनी चाहिए। बच्चे को पीटने की बजाय उसे मनोवैज्ञानिक तरीके से समझाकर मोबाइल फोन के अच्छे-बुरे प्रभावों से अवगत कराया जाना चाहिए। लोक कथाओं और साहित्य के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए। स्कूलों की बड़ी भूमिका

बच्चों के सांस्कृतिक विकास में स्कूल बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। स्कूलों को संस्कृति का वाहक बनना चाहिए। सुबह की सभा में बच्चों के सांस्कृतिक कौशल को निखारा जा सकता है। स्कूलों में आयोजित पंजाबी लोकगीत, संगीत और खेलकूद प्रतियोगिताएं निःसंदेह बच्चों को संस्कृति से जोड़ रही हैं। प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को खेलों से जोड़ने के लिए अभी भी और प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। शिक्षकों को बच्चों को अपने बड़ों से पुरानी लोककथाएं, कहानियां, कहावतें और मुहावरे सुनने तथा उन्हें अपनी स्क्रैपबुक में लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इन्हें स्कूल द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका में भी प्रकाशित किया जाना चाहिए।

मोबाइल शोर मचा रहा है

स्कूलों में हर वर्ष आयोजित होने वाली शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं बच्चों की कलात्मक प्रतिभा को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। बच्चों की कविता लेखन और कविता वाचन प्रतियोगिताएं, भांगड़ा-गिद्दा प्रतियोगिताएं और हाल ही में मार्शल आर्ट में शामिल की गई गतका प्रतियोगिताएं इसके प्रमुख उदाहरण हैं। पंजाब शिक्षा विभाग द्वारा शुरू की गई 'खेदं वतन पंजाब दियां' मुहिम ने पंजाब के विरासती खेलों को पुनर्जीवित करने में सराहनीय कार्य किया है। मोबाइल फोन बच्चों के लिए खिलौना बन गया है, जिससे वे चिड़चिड़े हो रहे हैं। इसका मुख्य कारण पारंपरिक खेलों और साहित्य से नाता टूटना है। बच्चों का विरासत खेल गांव

राज्य स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक प्रतियोगिताएं होनी चाहिए। पंजाब के विरासती खेलों को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए तथा नियमित रूप से आयोजित किया जाना चाहिए।

आइये अपनी मातृभाषा का सम्मान करें।

भाषा संस्कृति की जननी है. यदि भाषा जीवित रहती है तो संस्कृति भी जीवित रहती है। विश्व प्रसिद्ध रूसी लेखक रसूल हमजातोव अपनी पुस्तक माई दागेस्तान में लिखते हैं कि यदि आप किसी को श्राप देना चाहते हैं तो उससे कहिए, ₹जाओ, अपनी मातृभाषा भूल जाओ।₹ जो लोग अपनी मूल भाषा से अनभिज्ञ हैं, वे अपनी संस्कृति से भी अनभिज्ञ हैं। बच्चों को अपनी मातृभाषा से गहरा लगाव होना चाहिए। बेशक, अन्य भाषाएं सीखें, लेकिन आपको पंजाबी बोलने, पढ़ने और लिखने में गर्व होना चाहिए। माता-पिता को घर पर पंजाबी बोलना चाहिए। घरों में पंजाबी अखबार या बच्चों की पत्रिका भी रखनी चाहिए। इससे निश्चित रूप से बच्चों को मोबाइल गेम्स से दूर रहने और घर पर अखबार या पत्रिका पढ़ने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

बच्चों के मित्र बनें.

बच्चे हमारी पूंजी हैं। उनके मुस्कुराते चेहरे दिलों को गर्म कर देते हैं। हर माता-पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा बड़ा होकर एक सफल व्यक्ति बने। वह धार्मिक जीवन के ढांचे में ढलकर एक अच्छा इंसान बन गया। यह तभी संभव है जब हम अपने बच्चों के बचपन को संरक्षित करने का प्रयास करें। आइए, जितना संभव हो सके, मासूम बच्चों के साथ समय बिताएं। आइये उनके साथ हंसें, खेलें और बातें करें। आइये हम स्वयं को बुरी संगत से बचायें। उनके दोस्तों के बारे में जानकारी रखते हैं। माता-पिता को स्वयं अपने बच्चों का मित्र बनना चाहिए। आइये हम उनके आदर्श रोल मॉडल बनें। तब बच्चे की आत्मा खिलेगी, बचपन खिलेगा। हमारा घरेलू और सामाजिक-सांस्कृतिक ताना-बाना स्वतः ही उनकी जीवन-शैली को संस्कृति से जोड़ देगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक

12 वीं विज्ञान के बाद उच्च वेतन पाठ्यक्रम

विजय गर्ग

अभी विज्ञान के साथ 12 वीं कक्षा समाप्त हुई और सोच रही थी कि आगे क्या होगा? आप शायद एक ऐसे करियर का सपना देख रहे हैं जो अच्छा भुगतान करता है और रोमांचक लगता है। बहुत सारे छात्र एक ही नाव में हैं, यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि 12 वीं विज्ञान के बाद कौन से उच्च वेतन पाठ्यक्रम अपनी प्रतिभा और लक्ष्यों को फिट करते हैं।

यह सब तनख्वाह के बारे में नहीं है - हालांकि यह अच्छा है! यह कुछ ऐसा चुनने के बारे में है जो आपको अच्छा पैसा भी देता है। जब से आपने विज्ञान का अध्ययन किया है, आप इंजीनियरिंग, स्वास्थ्य सेवा और तकनीक जैसे क्षेत्रों में पहले से ही आगे हैं, 2030 तक विशाल बढ़ने के लिए तैयार हैं। आइए कूदते हैं और देखते हैं कि 12 वीं विज्ञान के बाद उच्च वेतन पाठ्यक्रम आपको एक महान कैरियर की ओर ले जा सकते हैं।

विज्ञान नौकरियों के लिए एक सुनहरे टिकट की तरह है जो मायने रखता है। टेक और हेल्थकेयर लें- वे तेजी से विस्तार कर रहे हैं। स्टेटिस्टा का कहना है कि टेक वर्ल्ड 2030 तक $ 5.3 ट्रिलियन तक पहुंच सकता है, जो आप जैसे प्रशिक्षित लोगों के लिए टन स्पॉट खोल सकता है। दूसरी तरफ, हेल्थकेयर जॉब्स - डॉक्टरों या फार्मासिस्टों के बारे में सोचें - महत्वपूर्ण रहें क्योंकि अधिक लोगों को देखभाल की आवश्यकता होती है। इन क्षेत्रों से बंधा एक कोर्स चुनना आपको एक स्थिर, बढ़ते भविष्य के लिए सेट करता है।

आपके लिए एक उच्च कमाई वाला रास्ता मिला। हमारा व्यावहारिक प्रशिक्षण आपको काम में सही कदम रखने के लिए तैयार करता है, कोई पसीना नहीं।

यहां हमारे द्वारा प्रदान किए जाने वाले कुछ भयानक विकल्पों का एक आधार है। हर एक अपने विज्ञान कौशल पर बनाता है और आप बड़े पुरस्कार के साथ एक कैरियर की ओर अंक।

1.। इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में बीटेक 12 वीं विज्ञान के बाद उच्च वेतन पाठ्यक्रमों के बीच इंजीनियरिंग का भारी हिटर। हमारे बी टेक विकल्प- जैसे कंप्यूटर साइंस, मैकेनिकल या सिविल - आपको वास्तविक समस्याओं को बनाने और हल करने के लिए सिखाते हैं। Iईईई का कहना है कि कंप्यूटर विज्ञान की नौकरियां 2030 तक 25% कूद सकती हैं, एआई जैसे सामान के लिए धन्यवाद। आप भारत में एक वर्ष में ₹ 6-10 लाख की कमाई शुरू कर सकते हैं, और भी अधिक विदेशों में।

उदाहरण के लिए, हमारा कंप्यूटर साइंस क्रू वास्तविक ऐप बनाता है और सिस्टम को सुरक्षित करता है - कौशल प्यार को बॉस करता है। यह सीख रहा है कि आप तुरंत उपयोग कर सकते हैं।

2.। फार्मेसी में वी फारम यदि जीव विज्ञान या रसायन विज्ञान आपको रोशनी देता है, तो हमारे वी फारम की कोशिश करें। फार्मासिस्ट स्वास्थ्य देखभाल को गुनगुना रखते हैं, और गार्टनर 2030 तक फार्मा नौकरियों में 15% की वृद्धि की भविष्यवाणी करते हैं, जिसमें नई दवाएं पॉप अप होती हैं। जल्दी भुगतान? लगभग 4-8 लाख वार्षिक, प्रयोगशालाओं या अस्पतालों में काम करना।

छात्र प्रयोगशालाओं में गड़बड़ करते हैं, यौगिकों का सम्मिश्रण करते हैं और दवाओं का परीक्षण करते हैं, इसलिए वे स्नातक से रोल करने के लिए तैयार हैं।

3। बीएससी बेसिक और एप्लाइड साइंसेज में शुद्ध विज्ञान पर बड़ा? हमारे बी.एससी। भौतिकी, रसायन विज्ञान या जीव विज्ञान में अनुसंधान या तकनीकी गिग्स के लिए आधार देता है। स्टेटिस्टा विज्ञान की नौकरियों का आंकड़ा-जैसे प्रयोगशाला कार्यकर्ता या डेटा क्रंचर्स- 2030 तक 10% बढ़ सकते हैं, जो लाख 5-7 लाख से शुरू हो सकते हैं। आप हमारे शीर्ष पायदान प्रयोगशालाओं में काम करेंगे, नौकरियों या अधिक स्कूल के लिए तैयारी करेंगे।

4। कंप्यूटर अनुप्रयोगों में बीसीए इंजीनियरिंग फैन नहीं बल्कि टेक-क्यूरियस? वीसीए के सभी सॉफ्टवेयर और आईटी के बारे में। गार्टनर 2030 तक ऐप डेवलपर की मांग में 20% स्पाइक देखता है। आप शुरू करने के लिए ₹ 4-6 लाख में खींच सकते हैं। हमारे छात्र वेबसाइटों और ऐप्स को कोड़ा मारते हैं, कौशल प्राप्त करते हैं जो तेजी से काम करते हैं।

5.। बीबीए एलएलबी। कानून में हमारे बीबीए एलएलबी के माध्यम से रणनीति के साथ विज्ञान मिलाएं। पेटेंट या इको-लॉ जैसे क्षेत्रों के वकील 8-12 लाख जल्दी बना सकते हैं। स्टेटिस्टा का कहना है कि 2030 तक कारोबार बढ़ने पर कानूनी नौकरियां चढ़ेंगी। हम आपको नकली परीक्षणों और मामलों के साथ प्रशिक्षित करते हैं, इसलिए आप चमकने के लिए तैयार हैं।

उच्च वेतन के लिए कौन सा कोर्स सबसे अच्छा है? कई उपयोगकर्ता एक ही प्रश्न पूछते हैं: उच्च वेतन के लिए कौन सा पाठ्यक्रम सबसे अच्छा है? जवाब आप पर निर्भर करता है। कंप्यूटर साइंस में बीटेक अक्सर कुछ वर्षों में ₹ 10 लाख से अधिक होता है। स्वास्थ्य की परवाह है? फार्मेसी या बी.एससी। अनुसंधान में स्थिर नकदी लाता है। हमारे बीटेक टीसीएस या इंफोसिस में जमीन पकड़ते हैं, जबकि फार्मेसी के लोग सिप्ला में शामिल होते हैं-सबूत यह काम करता है।

उच्च वेतन के साथ 12 वीं विज्ञान के बाद सर्वश्रेष्ठ कैरियर विकल्प विज्ञान हमारी डिग्री से परे शांत करियर को अनलॉक करता है।

सॉफ्टवेयर डेवलपर: बीसीए या बीटेक ग्रेड 2030 तक ₹ 6-15 लाख मार सकते हैं फार्मासिस्ट: . बी फारम हेल्थकेयर बूम के रूप में ₹ 5-10 लाख की ओर जाता है। रिसर्च साइंटिस्ट: बी.एससी। लैब या स्कूलों में लाख 7-12 लाख खुलता है। कॉर्पोरेट वकील: बीबीए एलएलबी। बड़ी फर्मों में लाख 10-20 लाख का मतलब हो सकता है। ये विज्ञान की लचीलापन दिखाते हैं। हम आपको लिंगया में इंटर्नशिप और नौकरी की घटनाओं के साथ हुक करते हैं, इसलिए आप कूदने के लिए तैयार हैं।

हम यहां दिखाने के लिए नहीं हैं। हम चाहते हैं कि आप जीतें। हमारे बीटेक ले लो: छात्रों को हरी मशीनों का निर्माण, कार्रवाई के साथ किताबें मिश्रण। इसलिए 12 वीं विज्ञान के बाद हमारे उच्च वेतन पाठ्यक्रम बाहर खड़े हैं

अपना कोर्स कैसे चुनें चुनना बड़ा लगता है, लेकिन इसे सरल रखें। आप क्या खोदते हैं- संख्या, लोग, प्रयोगशालाएं? 2030 के माध्यम से नौकरी के रुझान-तकनीक और स्वास्थ्य की जांच करें। उन लोगों से बात करें जो वहां गए हैं। हमें मुफ्त सलाह सत्र मिले हैं

कहते हैं कि आप बी टेक और बीसीए के बीच फंस गए हैं - हम टूट जाएंगे कि प्रत्येक आपको कैसे फिट बैठता है। यह आपकी कॉल है, और हम इसे बनाने में आपकी सहायता करेंगे।

12 वीं विज्ञान के बाद क्या है? एक कोर्स चुनें, और आप बंद कर रहे हैं! हमारे कार्यक्रम- जैसे बी एस सी, बी फारम, या कानून- आपको अधिक अध्ययन या काम के लिए तैयार करते हैं। 2030 तक, ऐआई, बायोटेक और कानून को लोगों की आवश्यकता होगी, और हमें आपको वहां लाने का प्रशिक्षण मिल गया है

एग्रीकल्चर एग्रीकल्चर फ्यूचर एआई आर्किटेक्चर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बीए इंग्लिश बीए साइकोलॉजी बीटेक सीएसई बीटेक इंजीनियरिंग बिजनेस मैनेजमेंट करियर करियर-स्पेसिफिक एजुकेशन करियर गाइड करियर अपॉर्चुनिटीज करियर ऑप्शन करियर स्कोप सिविल इंजीनियरिंग कॉमर्स एंड मैनेजमेंट कंप्यूटर साइंस कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग डाटा साइंस डिग्री एजुकेशन इंजीनियरिंग इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स इंग्लिश लिटरेचर इंग्लिश प्रोग्राम एग्जाम टिप्स फैशन डिजाइन फैशन डिजाइन कोर्स हायर एजुकेशन जर्नलिज्म जर्नलिज्म जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन लॉ लॉ करियर मशीन लर्निंग एमए साइकोलॉजी मास्टर डिग्री मैथमेटिक्स एमबीए मैकेनिकल इंजीनियरिंग फार्मेसी साइकोलॉजी रिसर्च एंड डेवलपमेंट स्टूडेंट्स।

कहानी: दुलहन पर लगा दांव

माया के प्रेम के चलते रवि राउत ने अपनी शादी से पहले ही होने वाली दुलहन सुलेखा की हत्या की योजना बना ली थी. शादी के बाद माया और उस ने सुलेखा को मारने की कोशिश भी की लेकिन.

सुर्ख जोड़े में सजी नईनवेली दुलहन सुलेखा दोस्त जैसे पति रवि राउत को पा कर बहुत खुश थी. यौवन की दहलीज पर उस ने खुली आंखों से जो सपने देखे थे, वे साकार हो गए थे. सुलेखा 15 जुलाई, 2018 को ब्याह कर खुशीखुशी ससुराल आई थी. शादी के 6 दिन बीत जाने के बावजूद उस के हाथों पर पति के नाम की मेहंदी का रंग अभी भी ताजा था.

रवि राउत बिहार के जिला गया के थाना मुफस्सिल क्षेत्र में आने वाले शहीद ईश्वर चौधरी हाल्ट स्थित मोहल्ला कुर्मी टोला के रहने वाला था. उस के पिता श्यामसुंदर कपड़े के व्यापारी थे. गया में उन का कपड़े का काफी बड़ा कारोबार था, जो अच्छा चल रहा था. इस से अच्छी कमाई होती थी. श्यामसुंदर राउत के 3 बेटे थे, रवि, विक्की और शुक्कर. विक्की और शुक्कर पिता के व्यापार में सहयोग करते थे.

सुबह दोनों नाश्ता कर के पिता के साथ दुकान पर चले जाते थे और रात में दुकान बढ़ा कर उन्हीं के साथ घर लौटते थे. जबकि यारदोस्तों की संगत में रह कर रवि की आदतें बिगड़ गई थीं. उस की आदतें सुधारने के लिए श्यामसुंदर ने उस की शादी कर दी थी ताकि बहू के आने पर अपनी जिम्मेदारियों को समझ सके.

बात 21 जुलाई, 2018 की रात की है. पढ़ीलिखी, समझदार सुलेखा ससुराल वालों को रात का भोजन करा कर पति के साथ फर्स्ट फ्लोर पर सोने चली गई. दिन भर की थकीहारी सुलेखा को बिस्तर पर लेटते ही नींद आ गई. रवि भी सो गया.

रवि तब अचानक नींद से उठ बैठा, जब उस के कानों में सुलेखा की दर्दनाक चीख पड़ी. नींद से जाग कर रवि ने पत्नी की ओर देखा तो सन्न रह गया. सुलेखा के गले से तेजी से खून बह रहा था. लगा जैसे किसी ने तेजधार हथियार से गला रेत कर उस की हत्या की कोशिश की हो. खून देख कर रवि बुरी तरह घबरा गया. जब उस की समझ में कुछ नहीं आया तो उस ने चादर से सुलेखा का गला लपेट दिया, ताकि खून बहना बंद हो जाए.

तभी अचानक रवि की नजर एक महिला पर पड़ी. वह अपना चेहरा कपड़े से ढंके हुए थी और उसी कमरे से निकल कर बाहर की ओर भाग रही थी. उस महिला से थोड़ी दूर आगे 2 और महिलाएं तेजी से भागी जा रही थीं.

इस से पहले कि नकाबपोश महिला भागने में सफल हो पाती, सुलेखा की चीख सुन कर उस के देवर विक्की और शुक्कर कमरे में आ गए थे.

रवि और उस के दोनों भाइयों ने दौड़ कर नकाबपोश महिला को पकड़ लिया और लातघूसों से उस की जम कर पिटाई की. नकाबपोश महिला जब बेसुध हो गई तो विक्की ने उस के चेहरे से नकाब उतार दिया. नकाब हटते ही रवि, विक्की और शुक्कर तीनों दंग रह गए. वह महिला रवि के जानने वालों में थी, जिस का नाम माया था. वह सूढ़ीटोला में रहती थी.

उधर ज्यादा खून बहने से सुलेखा की हालत बिगड़ती जा रही थी. इस बीच रवि के भाई विक्की ने 100 नंबर पर फोन कर के इस घटना की सूचना पुलिस कंट्रोलरूम को दे दी थी. कंट्रोलरूम से सूचना मिलते ही थाना मुफस्सिल के थानेदार कमलेश शर्मा अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंच गए. घटनास्थल पर पहुंच कर उन्होंने हत्या की कोशिश करने वाली माया को आलाकत्ल ब्लेड के साथ गिरफ्तार कर लिया.

सुलेखा की हालत बिगड़ती जा रही थी. रवि उसे इलाज के लिए मगध मैडिकल अस्पताल ले गया और इमरजेंसी वार्ड में भरती करा दिया. डाक्टरों ने उस का इलाज शुरू कर दिया. समय पर इलाज मिल जाने से सुलेखा बच गई. यह 15/16 जुलाई, 2018 की रात ढाई बजे की बात थी.

अगले दिन रवि राउत की नामजद लिखित तहरीर पर मुफस्सिल थाने में माया के खिलाफ 307 आईपीसी के अंतर्गत केस दर्ज कर लिया गया. मुकदमा दर्ज होने के बाद थानेदार कमलेश शर्मा सुलेखा का बयान लेने मगध मैडिकल अस्पताल पहुंचे.

सुलेखा ने कमलेश शर्मा को बताया कि रात एकडेढ़ बजे के करीब उस का पति रवि दरवाजा खोल कर बाहर चला गया था, तभी एक नकाबपोश औरत ने कमरे में घुस कर मुझ पर हमला बोल दिया. एक औरत कमरे के अंदर थी, जबकि दूसरी कमरे के दरवाजे के पास खड़ी थी.

वह वहीं से पूछ रही थी कि सुलेखा मरी या नहीं. मुझ पर नकाबपोश औरत ने न केवल हमला किया बल्कि मुझे तेजाब पिलाने की भी कोशिश की. लेकिन मेरी चीख सुन कर ऊपर आए मेरे देवरों ने मुझे बचा लिया.

पकड़ी गई औरत ने अपना नाम माया बताया. जांच अधिकारी ने जब उस से हमले की वजह पूछी तो वह वजह बताने में असमर्थ रही. वह खुद हैरान थी कि माया ने उस की हत्या करने का प्रयास क्यों किया, जबकि वह उसे जानती तक नहीं थी. सुलेखा की बात सुन कर एसओ कमलेश शर्मा हैरान रह गए.

कमलेश शर्मा को सुलेखा के बयान ने परेशानी में डाल दिया था. इस का जवाब सिर्फ माया ही दे सकती थी या फिर सुलेखा का पति रवि राउत. माया महिला थाने के हवालात में बंद थी. कमलेश शर्मा ने थाने लौट कर आरोपी माया को महिला थाने से बुलवाया, फिर उस से पूछताछ की. माया का बयान सुन कर विवेचक शर्मा अवाक रह गए.

माया ने पुलिस को बताया कि रवि और उस के बीच करीब 3 साल से प्रेम संबंध थे. दोनों एकदूसरे को प्यार करते थे, रवि उस से शादी करना चाहता था. लेकिन अपने घर वालों की वजह से वह ऐसा नहीं कर पाया. अपने बयान में माया एकएक राज से परदा उठाती गई माया के बयान से इस मामले में एक दिलचस्प मोड़ आ गया. उस के बयान पर विश्वास कर के पुलिस जब रवि से पूछताछ करने मगध मैडिकल अस्पताल पहुंची तो रवि वहां नहीं था. उस की जगह सुलेखा के पास उस का छोटा भाई विक्की बैठा था. पुलिस ने जब विक्की से रवि के बारे में पूछताछ की तो उस ने बताया कि रवि घर पर होगा.

एसओ कमलेश शर्मा ने रवि को अस्पताल बुलाने के लिए एक सिपाही उस के घर भेजा. सिपाही रवि के घर पहुंचा तो वह वहां भी नहीं था.

पूछने पर घर वालों ने बताया कि वह रात से अस्पताल से घर नहीं लौटा है. सिपाही ने लौट कर यह बात एसओ को बता दी. कमलेश शर्मा सोच में पड़ गए कि जब रवि न अस्पताल में है और न ही घर पर, तो वह कहां गया?

इस का मतलब वह फरार हो चुका था. निस्संदेह पत्नी की हत्या के प्रयास के पीछे उस का भी हाथ था. उस के फरार होने से यह बात साफ हो गई कि माया ने जो बयान दिया था, वह सच था. अब इस गुत्थी को सुलझाने के लिए रवि की गिरफ्तारी जरूरी थी. हकीकत जानने के लिए पुलिस ने रवि के मोबाइल फोन की काल डिटेल्स निकलवाई.

काल डिटेल्स से पता चला कि रवि और माया के बीच बातें होती रहती थीं. घटना वाले दिन भी रवि और माया के बीच काफी देर तक बात हुई थी. इस डिटेल्स से पुलिस इस नतीजे पर पहुंची कि रवि ने अपनी प्रेमिका माया के साथ मिल कर पत्नी की हत्या का षडयंत्र रचा था. लेकिन वह अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पाया था.

बहरहाल, सुलेखा ठीक हो कर अस्पताल से घर आ गई, लेकिन तमाम कोशिशों के बाद भी रवि पुलिस के हत्थे नहीं चढ़ा. इस बीच पुलिस ने माया को अदालत में पेश कर के जेल भेज दिया था. आखिरकार घटना के एक महीने बाद रवि उस वक्त पुलिस के हत्थे चढ़ गया, जब वह गया रेलवे स्टेशन से कहीं भागने के लिए ट्रेन के इंतजार में वेटिंग रूम में बैठा था.

पुलिस रवि को गिरफ्तार कर के थाने ले आई और सुलेखा की हत्या की योजना जानने के लिए उस से पूछताछ की. चाह कर भी रवि हकीकत को छिपा नहीं सका. उस ने पुलिस के सामने सच उगल दिया. पूछताछ में रवि ने अपनी और माया की प्रेम कहानी सिलसिलेवार बतानी शुरू की.

माया मुफस्सिल थाना क्षेत्र के सूढ़ीटोला की रहने वाली थी. वह शादीशुदा और 3 बच्चों की मां थी. उस का पति मनोहर बाहर रह कर नौकरी करता था. वह 6 महीने या साल भर में एकाध बार ही घर आ कर कुछ दिन बिता पाता था.

माया भले ही 3 बच्चों की मां थी, लेकिन उस का शारीरिक आकर्षण खत्म नहीं हुआ था. उस का कसा हुआ शरीर और गोरा रंग पुरुषों को आकर्षित करने के लिए काफी था. सजसंवर कर माया जब घर से बाहर निकलती थी तो अनचाहे में लोगों की नजरें उस की ओर उठ ही जाती थीं.

कभीकभी रवि माया के घर के सामने से हो कर घाटबाजार स्थित अपनी दुकान पर जाया करता था. एकदो बार का आमनासामना हुआ तो दोनों की नजरें टकरा गईं. धीरेधीरे दोनों एकदूसरे की ओर आकर्षित होने लगे. जल्दी ही वह समय भी आ गया, जब दोनों ने आकर्षण को प्यार का नाम दे दिया. इस प्यार को शारीरिक संबंधों में बदलते देर नहीं लगी. इस की एक वजह यह भी थी कि माया का पति परदेस में था और वह शारीरिक रूप से प्यार की प्यासी थी.

धीरेधीरे रवि और माया के प्यार के चर्चे पूरे सूढ़ीटोला में होने लगे. रवि घर से दुकान पर जाने की कह कर निकलता और पहुंच जाता माया के पास. जब तक वह दुकान पर पहुंचता, तब तक उस के दोनों भाई विक्की और शुक्कर दुकान पर पहुंच कर पिता के साथ काम में लग जाते.

रवि देर से पहुंचता तो पिता श्यामसुंदर राउत उस से देर से आने की वजह पूछते, लेकिन वह चुप्पी साध लेता था. इस से श्यामसुंदर और भी परेशान हो जाते थे. उन की समझ में नहीं आ रहा था कि रवि को आखिर हो क्या गया. उन्होंने उस के देर से आने का रहस्य पता लगाने का फैसला किया.

आखिरकार श्यामसुंदर ने जल्द ही सच का पता लगा लिया. पता चला उन का बड़ा बेटा रवि एक शादीशुदा और 3 बच्चों की मां माया के प्रेमजाल में फंसा है. बेटे की सच्चाई जान कर वह परेशान हो गए.

उन्होंने रवि को माया से दूर रखने के बारे में सोचना शुरू किया. सोचविचार कर वह इस नतीजे पर पहुंचे कि रवि की शादी कर दी जाए तो वह माया को भूल जाएगा. उन्होंने रवि की शादी की बात चलाई तो बात बन गई. फलस्वरूप सुलेखा से रवि का रिश्ता तय हो गया.

रिश्ता तय हो जाने के बाद रवि जब कभी माया के घर के सामने से गुजरता तो उस से नजरें मिलाने के बजाय चुपचाप निकल जाता. रवि में अचानक आए बदलाव से माया परेशान हो गई. उस की समझ में नहीं आ रहा था कि अचानक रवि को क्या हो गया, जो उस ने मुंह फेर लिया.

माया से रवि की जुदाई बरदाश्त नहीं हो पा रही थी. एक दिन वह रवि का रास्ता रोक कर उसे अपने घर ले आई. फिर उस ने रवि से पूछा, "तुम्हें अचानक ऐसा क्या हो गया जो मुझ से मुंह फेर लिया."

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है माया." रवि ने सहज भाव से कहा.

"ऐसी कोई बात नहीं है तो अचानक मुझ से मुंह क्यों मोड़ लिया?"

"माया, अब हमारा मिलना संभव नहीं है." रवि ने नजरें झुका कर कहा.

"क्यों, संभव नहीं है हमारा मिलना? मैं तुम से कितना प्यार करती हूं, जानते तो हो. फिर हमारा मिलना क्यों नहीं संभव है?"

""क्योंकि मेरे घर वालों ने मेरी शादी करने का फैसला कर लिया है."

रवि का जवाब सुन कर माया के होश उड़ गए. माथे पर हाथ रख कर वह बिस्तर पर जा बैठी. कुछ देर दोनों के बीच खामोशी छाई रही.

उस खामोशी को माया ने ही तोड़ा, "आखिर क्या समझ रखा है तुम ने मुझे? मैं कोई खिलौना नहीं हूं कि जब चाहा, खेला और जब चाहा छोड़ दिया. मेरी जिंदगी बरबाद कर के तुम किसी और के साथ शादी रचाओगे? तुम ने यह कैसे सोच लिया कि मैं ऐसा होने दूंगी? मेरे जीते जी ऐसा हरगिज नहीं हो सकता."

"मेरी बात समझने की कोशिश करो, माया." माया के सामने रवि हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाने लगा, "मैं घर वालों के सामने बेबस हूं. मुझे उन के सामने झुकना ही पड़ा."

रवि ने माया को समझाने की कोशिश की, "तुम तो जानती हो, मैं भी तुम से कितना प्यार करता हूं. तुम्हारे बिना जीने की कल्पना तक नहीं कर सकता."

"मैं कुछ नहीं सुनना चाहती. तुम्हें जो भी करना हो करो, लेकिन मैं तुम्हारी शादी नहीं होने दूंगी." माया ने रवि को धमकाया. रवि माया को काफी देर तक समझाता रहा. लेकिन माया ने रवि की शादी की बात स्वीकार नहीं की. उस ने खुल कर धमकी दी कि अगर उस ने किसी और से शादी की तो इस का अंजाम उसे भुगतना पड़ेगा.

उस दिन के बाद से रवि ने न तो माया से बात की और न ही मिला. माया ने सपने में भी नहीं सोचा था कि रवि उसे धोखा देगा और किसी दूसरी लड़की से शादी रचा लेगा. उस की बेवफाई से माया घायल नागिन सी बन गई. उस के सीने में बदले की आग धधकने लगी. यह मई 2018 की बात थी.

माया रवि से बदला लेने के लिए भले ही घायल नागिन बन गई थी, लेकिन उस की जुदाई में उस से कहीं ज्यादा तड़प रही थी. रवि भी माया से मिलने के लिए विरह की आग में जल रहा था. अंततः उस से रहा नहीं गया और एक महीने बाद वह माया के पास लौट आया. सारे गिलेशिकवे भुला कर माया ने उसे प्यार के आंचल में छिपा लिया ताकि उन के प्यार को जमाने की नजर न लग जाए.

रवि ने माया से कहा कि मांबाप की खुशी के लिए वह सुलेखा से शादी तो जरूर करेगा, लेकिन उसे कभी पत्नी का दर्जा नहीं देगा और मौका मिलते ही उसे सदा के लिए अपने रास्ते से हटा देगा. रवि की बात पर माया ने सहमति जता दी. रवि की शादी के बाद सुलेखा को रास्ते से हटाने के लिए माया शादी से पहले ही योजना बनाने में जुट गई.

बहरहाल, वह दिन भी आ गया जिस का रवि और माया को इंतजार था. 15 जुलाई, 2018 को रवि की शादी सुलेखा के साथ हो गई. सुलेखा मायके से विदा हो कर ससुराल आ गई. दूसरी ओर माया का आनाजाना बंद हो जाने से ईर्ष्या की आग में जल रही थी. रवि भले ही माया के पास नहीं जा रहा था, लेकिन फोन से दोनों की अकसर बातें हो जाती थीं. माया उसे बारबार उस का वादा याद दिलाती रहती थी. रवि उस से कह देता था कि जल्द ही अपना वादा पूरा करेगा.

शादी के 4-5 दिन बाद रवि के घर से सब मेहमान चले गए. घर पूरी तरह खाली हो गया. 21 जुलाई, 2018 की दोपहर रवि चुपके से माया से मिलने उस के घर जा पहुंचा. उस वक्त घर में माया के अलावा कोई नहीं था. उस के तीनों बच्चे स्कूल गए हुए थे.

पहले तो दोनों ने मौके का भरपूर फायदा उठाया. फिर रवि और माया अपनी पहले से तैयार योजना पर बात की. रवि ने माया से कहा कि आज रात सुलेखा को हमेशा के लिए रास्ते से हटा दिया जाएगा. मेरे फोन का इंतजार करना. जैसे ही मैं फोन करूं, धारदार हथियार ले कर मेरे घर आ जाना. घर का दरवाजा खुला रहेगा.

रात 10 बजे के करीब सुलेखा पति, सास, ससुर और देवरों को खाना खिला कर पति के साथ पहली मंजिल पर सोने चली गई. उसे क्या पता था कि आज की रात उस पर भारी पड़ने वाली है. खैर, पतिपत्नी बातें करतेकरते कब सो गए, पता ही नहीं चला.

रात 1 बजे के करीब रवि की आंखें खुल गईं. उस ने देखा, सुलेखा गहरी नींद में सो रही थी. रवि मोबाइल ले कर आहिस्ता से बिस्तर से नीचे उतरा और दरवाजा खोल कर बाहर चला गया. तभी सुलेखा की आंखें खुल गईं. उस ने पति से इतनी रात गए बाहर जाने के बारे में पूछा तो रवि ने कहा कि बाथरूम जाना है, अभी आता हूं.

रवि घर से बाहर निकल आया और फोन कर के माया को बता दिया कि रास्ता साफ है, आ जाओ. थोड़ी देर बाद रवि बाहर से लौट आया और फिर सोने का नाटक करने लगा. करीब 30 मिनट बाद माया 2 महिलाओं के साथ रवि के घर पहुंच गई. माया इन महिलाओं को सुरक्षा के लिए लाई थी. उन्हें उस ने बाहर ही रोक दिया था. माया स्वयं चुपके से सीढ़ियों के सहारे रवि के कमरे में दाखिल हो गई. उसे रवि के घर का कोनाकोना पता था.

सुलेखा रवि के बगल में सोई हुई थी. माया ने साथ लाए धारदार ब्लेड से सुलेखा के गले, चेहरे और आंख पर वार किए. साथ ही उस का गला दबाने का भी प्रयास किया. अचानक हुए हमले से सुलेखा के मुंह से दर्दनाक चीख निकल गई.

पत्नी की चीख सुन कर सोने का बहाना कर रहा रवि उठ बैठा. तब तक नीचे से रवि के दोनों भाई विक्की और शुक्कर ऊपर कमरे में पहुंच गए. विक्की और शुक्कर को देख माया डर गई, क्योंकि रवि का पूरा गेम ही उलटा पड़ गया था.

जैसे ही माया वहां से भागी, विक्की और शुक्कर ने उसे दौड़ा कर पकड़ लिया और उसे मारनेपीटने लगे. किसी को शक न हो, सोच कर रवि भी भाइयों के साथ जा मिला और मौका देख कर माया को लातथप्पड़ मारने लगा.

माया के गिरफ्तार हो जाने के बाद उस से महिला थाने में एसओ विमला ने पूछताछ की. माया ने सुलेखा की हत्या की योजना का खुलासा कर दिया कि कैसे उस ने अपने प्रेमी रवि के साथ मिल कर सुलेखा की हत्या की योजना बनाई थी. उस के बयान पर पुलिस ने उस के प्रेमी और सुलेखा के पति रवि को पत्नी की हत्या की कोशिश करने का मुकदमा दर्ज कर के गिरफ्तार कर लिया.

कथा लिखे जाने तक दोनों प्रेमीप्रेमिका रवि राउत और माया जेल में बंद थे. बेटे की करतूत पर मांबाप को काफी दुख पहुंचा. स्वस्थ हो चुकी सुलेखा ससुराल से मायके लौट गई. उस रात माया के साथ आई 2 महिलाओं का पता नहीं चल सका.

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

जंगलों पर छाया इंसानों का आतंक: एक अनदेखा संकट

हाल ही में एक प्रमुख अखबार की हेडलाइन ने ध्यान खींचा–"शहर में बंदरों और कुत्तों का आतंक।" यह वाक्य पढ़ते ही एक गहरी असहजता महसूस हुई। शायद इसलिए नहीं कि खबर गलत थी, बल्कि इसलिए कि वह अधूरी थी। सवाल यह नहीं है कि जानवर शहरों में क्यों आ गए, बल्कि यह है कि वे जंगलों से क्यों चले आए? हम जिस ₹आतंक₹ की बात कर रहे हैं, वह वास्तव में प्रकृति का प्रतिवाद है–उस दोहरी मार का नतीजा जो हमने जंगलों और वन्यजीवों पर एक लंबे अरसे से चलाया है। विकास के नाम पर हमने जंगलों को काटा, नदियों को मोड़ा, और पहाड़ों को तोड़ा। वन्यजीवों के लिए न तो रहने की जगह छोड़ी, न भोजन का साधन। जब उनका प्राकृतिक निवास उजड़ गया, तब वे हमारी बस्तियों की ओर बढ़े। और अब, जब वे हमारी छतों, गलियों और पार्कों में दिखते हैं, तो हम उन्हें 'आतंकी' करार देते हैं। यह नजरिया न केवल नैतिक दृष्टि से अनुचित है, बल्कि हमारी नीति और प्राथमिकताओं में गहरी खामी को भी उजागर करता है। विकास और संरक्षण को एक-दूसरे के विरोधी खेमों में खड़ा कर देने का नतीजा यह है कि न तो सही मायनों में विकास हो पा रहा है, न ही प्रकृति का संतुलन बच पा रहा है।

प्रियंका सौरभ

हाल ही में एक अखबार की प्रमुख हेडलाइन पढ़ी–₹शहर में बंदरों और कुत्तों का आतंक₹। यह वाक्य महज एक खबर नहीं, बल्कि हमारे सोचने के तरीके का प्रतिबिंब था। हमने जानवरों के शहर में आने को ₹आतंक₹ करार दिया, लेकिन कभी यह सवाल नहीं पूछा कि वो शहर में आए ही क्यों? जब कोई बंदर किसी कॉलोनी की छत पर उछलता है, या कोई कुत्ता कूड़े के ढेर में भोजन तलाशता है, तो वह कोई स्वाभाविक प्रक्रिया नहीं होती। यह उस संकट का संकेत होता है जिसे हम—मनुष्य—ने स्वयं गढ़ा है। जंगल, जो कभी इन जीवों का घर थे, अब रियल एस्टेट की परियोजनाओं, खनन कार्यों, सड़कों और डैमों की बलि चढ़ चुके हैं। आज अगर कोई सच में आतंक फैला रहा है, तो वह है इंसानी लालच और विकास का अंधा मॉडल।

प्राकृतिक आवासों पर हमला

भारत दुनिया के उन चुनिंदा देशों में है जहाँ जैव विविधता की अद्भुत संपदा है। लेकिन यही भारत आज अपने ही जंगलों को खा रहा है। 2021 की Forest Survey of India रिपोर्ट बताती है कि भारत ने पिछले चार वर्षों में 1,100 वर्ग किलोमीटर से अधिक वनक्षेत्र खो दिया है। हरियाणा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा जैसे राज्यों में यह गिरावट विशेष रूप से चिंताजनक रही है। वन कटान केवल पेड़ों का नुकसान नहीं है। यह पूरी एक पारिस्थितिकी व्यवस्था का ध्वंस है। जब हम पेड़ काटते हैं, हम न सिर्फ ऑक्सीजन के स्रोत मिटाते हैं, बल्कि हजारों पशु-पक्षियों के घर उजाड़ देते हैं। यही कारण है कि आज हमें गाँवों और शहरों के आसपास बाघ, हाथी, भालू और यहाँ तक कि तेंदुए भी दिखने लगे हैं।

शहरों में जानवरों की बढ़ती उपस्थिति: एक चेतावनी

बंदरों का शहरों में आना आज एक आम दृश्य बन गया है। दिल्ली, वाराणसी, जयपुर, और देहरादून जैसे शहरों में बंदरों की आबादी तेज़ी से बढ़ी है। कारण स्पष्ट हैं—कम होती हरियाली, अधिक होता कूड़ा, और बिगड़ता पारिस्थितिक संतुलन। इसी तरह, आवारा कुत्तों की संख्या भी शहरों में नियंत्रण से बाहर हो चुकी है। World Health Organization के अनुसार भारत में लगभग 3.5 करोड़ आवारा कुत्ते हैं, और हर साल हजारों लोग कुत्तों के काटने के शिकार होते हैं। मगर यह समस्या केवल स्वास्थ्य या सुरक्षा की नहीं है; यह समस्या हमारे कुप्रबंधन और लापरवाह विकास की है। हमने कूड़ा फेंकने के तरीकों को सुधारा नहीं, सार्वजनिक पशु-नियंत्रण कार्यक्रमों को प्राथमिकता नहीं दी, और अब जब जानवर हमारी बस्तियों में दिखते हैं, तो उन्हें ₹संकट₹ कह कर खुद को निर्दोष साबित करने की कोशिश करते हैं।

मीडिया की भूमिका और भाषा का प्रभाव

जब कोई अखबार लिखता है कि ₹बंदरों का आतंक₹, तो वह केवल सूचना नहीं दे रहा होता, बल्कि एक धारणा गढ़ रहा होता है। यह धारणा कि जानवर आक्रमणकारी हैं, और हम पीड़ित। मीडिया की यही भाषा यह छिपा लेती है कि असल में हम ही उनके घरों में घुसे थे, उनकी ज़मीन छीनी, और अब जब वो अपनी जगह पाने की कोशिश करते हैं, तो उन्हें दोषी ठहराते हैं। यह भाषा केवल संवेदनहीन नहीं, बल्कि खतरनाक भी है, क्योंकि इससे संरक्षण के प्रति समाज की समझ और सहानुभूति दोनों कमजोर पड़ती हैं।

वन्यजीव संघर्ष: क्यों बढ़ रहा है?

एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में हर साल औसतन 100 से अधिक लोग हाथियों के हमलों में मारे जाते हैं, और दर्जनों बाघ-मानव संघर्ष की घटनाएँ सामने आती हैं। मगर इन घटनाओं के पीछे की सच्चाई यह है कि वन्यजीवों का घर सिकुड़ता जा रहा है। जंगलों में भोजन और पानी की कमी उन्हें मानव बस्तियों की ओर खींचती है। कभी-कभी वे रास्ता भटक जाते हैं, तो कभी उन्हें मजबूरी में खेतों और घरों में घुसना पड़ता है। यह संघर्ष उनके लिए भी घातक है—हर साल सैकड़ों जानवर इंसानी जवाबी हिंसा में मारे जाते हैं।

क्या हो सकता है समाधान?

भारत में Wildlife Protection Act 1972 और Forest Conservation Act 1980 जैसे सशक्त कानून हैं, लेकिन उनके लागू करने में अनेक समस्याएँ हैं। वन विभाग अक्सर संसाधनों और जनबल की कमी से जूझता है। इसके अलावा, जब विकास परियोजनाओं और वन्यजीव संरक्षण में टकराव होता है, तो अक्सर विकास को तरजीह दी जाती है, भले ही उसके दीर्घकालिक परिणाम विनाशकारी हों। इस संकट से उबरने के लिए केवल नीतियाँ नहीं, बल्कि सोच का परिवर्तन ज़रूरी है। कुछ संभावित उपाय इस प्रकार हैं: शहरी नियोजन में हरित क्षेत्र सुनिश्चित किया जाए — पार्क, बाग़-बगिचे, और वृक्षारोपण को केवल सजावटी पहलू नहीं, बल्कि पारिस्थितिकी के हिस्से के रूप में देखा जाए। वन्यजीव गलियारे (wildlife corridors) विकसित किए जाएँ — जिससे जानवरों को सुरक्षित आवागमन का रास्ता मिले। कचरा प्रबंधन को प्राथमिकता दी जाए — ताकि जानवर शहरी कूड़े पर निर्भर न हों। मीडिया और शिक्षा में संवेदनशीलता लाई जाए — जानवरों को 'आतंकवादी' बताने के बजाय उनके संघर्ष को समझने और सहानुभूति की भाषा अपनाई जाए। स्थानीय समुदायों को शामिल किया जाए — उन्हें संरक्षण के साझेदार बनाना होगा, विरोधी नहीं।

अंतिम बात: इंसान अकेला नहीं है इस धरती पर

हमें यह स्वीकार करना होगा कि यह धरती केवल हमारी नहीं है। जंगलों, नदियों, पहाड़ों, और समंदरों के साथ-साथ हर जीव-जंतु का इस पर उतना ही अधिकार है जितना हमारा। जब हम शहरों का विस्तार करते हैं, जब हम मॉल और एक्सप्रेसवे बनाते हैं, तब हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि किसी न किसी की ज़मीन छीनी जा रही है—कभी किसी हिरन की, कभी किसी हाथी की। हम अगर प्रकृति से लड़ते रहेंगे, तो अंततः हार हमारी ही होगी—क्योंकि प्रकृति को हराया नहीं जा सकता, बस अस्थायी रूप से दबाया जा सकता है। ₹बंदरों का आतंक₹ एक समाचार की हेडलाइन हो सकती है, लेकिन असल हेडलाइन यह होनी चाहिए थी—₹जंगलों पर इंसानों का आतंक₹। इस सच्चाई को स्वीकार करना कठिन है, लेकिन जरूरी है। अगर हम वास्तव में एक संतुलित, सुरक्षित और संवेदनशील समाज की ओर बढ़ना चाहते हैं, तो हमें प्रकृति से नहीं, अपने अहंकार से संघर्ष करना होगा।

यमराज का दूसरा नाम धर्मराज क्यों?

प्राणी की मृत्यु या अंत को लाने वाले देवता यम हैं। यमलोक के स्वामी होने के कारण ये यमराज कहलाए। चूंकि मृत्यु से सब डरते हैं, इसलिए यमराज से भी सब डरने लगे जीवित प्राणी का जब अपना काम पूरा हो जाता है, तब मृत्यु के समय शरीर में से प्राण खींच लिए जाते हैं, ताकि प्राणी फिर नया शरीर प्राप्त कर नए सिरे से जीवन प्रारंभ कर सके। यमराज सूर्य के पुत्र हैं और उनकी माता का नाम संज्ञा है। उनका वाहन भैंसा और संदेशवाहक पक्षी कबूतर, उल्लू और कौवा भी माना जाता है। उनका अचूक हथियार गदा है। यमराज अपने हाथ के कालसूत्र या कालपाश की बदौलत जीव के शरीर से प्राण निकाल लेते हैं। यमपुरी यमराज की नगरी है, जिसके दो महाभयंकर चार आंखों वाले कुत्ते पहरेदार हैं। यमराज अपने सिंहासन पर न्यायमूर्ति की तरह बैठकर विचार भवन कालीची में मृतात्माओं को एक-एक कर बुलवाते हैं, जहां चित्रगुप्त सब प्राणियों की बही खोलकर लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हैं। कर्मों को ध्यान में रखकर यमराज अपना फैसला देते हैं, क्योंकि वे जीवों के शुभाशुभ कर्मों के निर्णायक हैं।

यमराज की यूं तो कई पत्नियां थीं, लेकिन उनमें सुशीला, विजया और हेमनाल अधिक जानी जाती हैं। उनके पुत्रों में धर्मराज युधिष्ठिर को सभी जानते हैं। न्याय के पक्ष में फैसला देने के गुणों के कारण ही यमराज और युधिष्ठिर जगत में धर्मराज के नाम से जाने जाते हैं यम द्वितीया के अवसर पर जिस दिन भाई-बहन का त्योहार भैया-दूज मनाया जाता है। यम और यमुना की पूजा का विधान बनाया गया हैं। उल्लेखनीय है कि यमुना नदी को यमराज की बहन माना जाता है। भौमवारी चतुर्दशी को यमतीर्थ के दर्शन कर सब पापों से छुटकारा मिल जाए, उसके लिए प्राचीन काल में यमराज ने यमतीर्थ में (संकटाघाट) कठोर तपस्या करके भक्तों को सिद्धि

प्रदान करने वाले यमेश्वर और यमादित्य मंदिरों की स्थापना की थी। यम द्वितीया को यहां मेला लगता है। इन मंदिरों को प्रणाम करने वाले एवं यमतीर्थ में स्नान करने वाले मनुष्यों को नारकीय यातनाओं को न तो भोगना पड़ता है और न ही यमलोक देखना पड़ता है। इसके अलावा मान्यता तो यहां तक है कि यमतीर्थ में श्राद्ध करके, यमेश्वर 1. का पूजन करने और यमादित्य को प्रणाम करके व्यक्ति अपने पितृ-ऋण से भी उऋण हो सकता है।

श्राद्धं कृत्वा यमे तीर्थे पूजयित्वा यमेश्वरम्।
यमादित्यं नमस्कृत्य पितृणामनृणो भवेत॥

दीपावली से पूर्व दिन यमदीप देकर तथा दूसरे पर्वों पर यमराज की आराधना करके मनुष्य उनकी कृपा प्राप्त करने के उपाय करता है। पुराणों में ऐसा उल्लेख मिलता है कि किसी समय माण्डव ऋषि ने कुपित होकर यमराज को मनुष्य के रूप में जन्म लेने का शाप दिया। इसके कारण यमराज ने ही दासी पुत्र के रूप में धृतराष्ट्र तथा पाण्डु के भाई होकर जन्म लिया। यूं तो यमराज परम धार्मिक और भगवद् भक्त है। मनुष्य जन्म लेकर भी वे भगवान्‌के परम भक्त तथा धर्म-परायण ही बने रहे।

यमराज की मृत्यु कैसे_हुई?

यमराज को मृत्यु का देवता माना जाता है यदि यमराज स्वयं मृत्यु के देवता हैं तो इनकी मृत्यु कैसे संभव है? यह बात हास्यप्रद सी लगती है परंतु वेद और पुराण में इनकी मृत्यु की एक कथा बताई गई है. इसको बताने से पहले यमराज के बारे में कुछ जान लेना बहुत जरूरी है. यमराज की एक जुड़वा बहन थी जिसे यमुना भी कहा जाता है. यमराज भैंसे की सवारी करते हैं और यमराज की आराधना विभिन्न नामों से की जाती है जैसे कि यम, धर्मराज मृत्यु, आतंक, वैवस्वत और काल. बहुत समय पहले एक श्वेत मुनि थे जो भगवान शिव के परम भक्त थे और गोदावरी नदी के तट पर निवास करते थे जब उनकी मृत्यु का समय आया तो यम देव ने उनके प्राण लेने के लिए मृत्यु पास को भेजा लेकिन श्वेतमुनि अभी प्राण नहीं त्यागना चाहते थे तो उन्होंने महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना शुरू कर दिया. जब मृत्यु पाश श्वेत मुनि के आश्रम में पहुंचे तो देखा कि आश्रम के बाहर भैरो बाबा पहरा दे रहे हैं. धर्म और दायित्व में बंधे होने के कारण जैसे ही मृत्यु पास ने मुनि के प्राण हरने की कोशिश की तभी भैरव बाबा ने प्रहार करके मृत्यु पास को मुर्छित कर दिया, वह जमीन पर गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई यह देखकर यमराज अत्यंत क्रोधित हो गए और स्वयं आकर भैरव बाबा को मृत्युपाश में बांध लिया फिर श्वेत मुनि के प्राण हरने के लिए उन पर भी में मृत्युपाश डाला पर श्वेत मुनि ने अपने इष्टदेव महादेव को पुकारा और महादेव ने तुरंत अपने पुत्र कार्तिकेय को भेजा. कार्तिकेय के पहुंचने पर कार्तिकेय और यम देव के बीच घमासान युद्ध हुआ, कार्तिकेय के सामने यमराज टिक नहीं पाए और कार्तिकेय के प्रहार से जमीन पर गिर गए और उनकी मृत्यु हो गई. भगवान सूर्य को जब यमराज की मृत्यु का समाचार लगा तो वह विचलित हो गए. ध्यान लगाने पर ज्ञात हुआ कि उन्होंने भगवान शिव की इच्छा के विपरीत श्वेत मुनि के प्राण हरने चाहे थे इस कारण यमराज को भगवान भोले के क्रोध को झेलना पड़ा. यमराज सूर्य देव के पुत्र हैं और इस समस्या के समाधान के लिए सूर्य देव भगवान विष्णु के पास गए, भगवान विष्णु ने भगवान शिव की तपस्या करके उन्हें प्रसन्न करने का सुझाव दिया. सूर्य देव ने भगवान शिव की घोर तपस्या की जिससे भोलेनाथ प्रसन्न हो गए और उन्हें दर्शन देकर वरदान मांगने को कहा तब सूर्य देव ने कहा कि "हे महादेव, यमराज की मृत्यु के बाद पृथ्वी पर भारी असंतुलन फैला हुआ है, पृथ्वी पर संतुलन बनाए रखने के लिए यमराज को पुनर्जीवित कर दें" भगवान शिव ने नंदी से यमुना का जल मंगवाकर यमदेव के पार्थिव शरीर पर छिड़का जिससे वो पुनः जीवित हो गए...!!

उत्तराधिकारी की समझ

शिवानंद मिश्रा

अभी कुछ दिन पहले संसद के दोनों सदनों से स्वीकृत किये गए वक्फ संशोधन बिल को राष्ट्रपति महोदया की मंजूरी मिलने के साथ ही अब ये कानून बन चुका है।

इस वक्फ बिल संशोधन बिल को पास करवाने के दौरान दो महत्वपूर्ण घटनाएं हुई जिसे काफी बारीकी से देखने पर ही देखने वालों को ही समझ आई...

पहली घटना,

इस बिल के आने से मुस्लिम संगठनों में दो फाड़ होता दिखा जिसमें एक धड़ा इस संशोधन के पक्ष में था और दूसरा इसके विरोध में।

संशोधन के पक्ष में मुसलिम राष्ट्रीय मंच....

और पसमांदा समाज के लोग थे,

जबकि विरोध में इन दोनों से अन्य आदि।

इससे एक बहुत बड़ा संदेश मिला कि मुस्लिम राष्ट्रीय मंच को और ज्यादा सशक्त किये जाने की जरूरत है और दूसरा संदेश ये मिला कि ऐसा नहीं है कि गट्ठर खोला ही नहीं जा सकता है...और, यह अभेद्य है.....

अब यह स्पष्ट हो गया है कि गट्ठर खोला भी जा सकता है और बंधन काटा भी जा सकता है...

बशर्ते कि स्ट्रेटजी सही हो।

साथ ही, इस बिल के दौरान एक खास बात शायद बहुत कम लोगों ने नोटिस किया कि... मोदी जी संसद के किसी भी सदन में मौजूद नहीं थे बल्कि वे विदेशी दौरे पर थे।

कहने का आशय है कि...इस टास्क को पूरा करने की पूरी जिम्मेवारी उनके सेनापति ने ले रखी थी..और धारा 370 रिमूवल की तरह इस बार भी उनके सेनापति ने इस बार भी संगठनात्मक क्षमता के साथ साथ अन्य राजनैतिक पार्टियों से सामंजस्य एवं फ्लोर मैनेजमेंट की क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

लोग क्या सोचते हैं या कितना समझते हैं... लेकिन, यह साफ-साफ दिख रहा है कि ये सिर्फ संशोधन बिल नहीं था बल्कि एक अग्नि परीक्षा थी जो अपने उत्तराधिकारी को चुनने के लिए आयोजित की गई थी कि देखें, तुममें कितनी काबिलियत है.

बहुत से लोगों को शायद ये पसंद न आये लेकिन शायद अब इसी बिल के बाद इस यक्ष प्रश्न का पटाक्षेप भी हो गया है कि मोदी जी के बाद कौन..?

शायद इस बिल के जरिए मोदी जी ने बिना कुछ कहे ही सबको संदेश दे दिया है कि मोदी जी के बाद उनका उत्तराधिकारी कौन है ???

यहाँ यह स्पष्ट है कि कि बेशक महाराज जी बेहद कुशल प्रशासक हैं और वे प्रधानमंत्री पद के लिए योग्य उम्मीदवार हैं....

लेकिन......जहाँ तक राजनीति की समझ है तो शायद उनका नंबर अभी के उत्तराधिकारी के बाद ही आएगा क्योंकि, सारी की सारी परिस्थितियां इसी ओर इशारा कर रही हैं।

ये सिर्फ़ एक बिल नहीं था बल्कि उत्तराधिकारी की परख थी। मोदी जी ने बिना बोले बहुत कुछ कह दिया है।

अब संकेत स्पष्ट हैं, बस समझने वाली नज़र चाहिए।

आपसी संवाद, जनता की जागरूकता से खत्म होगा नक्सलवाद!

हाल ही में 5 अप्रैल 2025 को दंतेवाड़ा में बस्तर पंडुम महोत्सव में समापन समारोह के दौरान हमारे देश के केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने यह बात कही है कि अगली चैत्र नवरात्रि तक बस्तर से लाल आतंक समाप्त हो जाएगा।इस दौरान उन्होंने बस्तर की खुशहाली की कामना की। पाठकों को बताता चलूं कि उन्होंने उन्होंने कहा कि 'बस्तर से नक्सलवाद खत्म होने की कगार पर है। नक्सलियों से अपील है कि वे आत्मसमर्पण करें। नक्सलियों को सरेंडर कराकर गांवों को नक्सल मुक्त कराइये। हर गांव को एक करोड़ मिलेगा।' कार्यक्रम के दौरान उन्होंने यह भी कहा कि 'बस्तर पंडुम को अंतरराष्ट्रीय दर्जा देने के लिए दुनियाभर के राजदूत जो राजधानी में हैं, उनको बस्तर में लाकर हमारी परंपराओं को, संस्कृति को और आदिवासी बच्चों की कला को पूरे विश्व में पहुंचाने का काम सरकार करेगी।' वास्तव में, गृह मंत्री अमित शाह ने नक्सलियों से यह कहा है कि 'आप सब हमारे अपने हैं और आप हथियार डाल कर समाज की मुख्यधारा में शामिल हों। जब कोई नक्सली मारा जाता है, तो कोई भी खुश नहीं होता।'बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज नक्सलवाद हमारे देश और समाज के लिए एक बड़ी समस्या है, लेकिन अच्छी बात यह है कि मार्च, 2026 तक नक्सल समस्या को खत्म करने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। केंद्रीय मंत्री श्री अमित शाह द्वारा नक्सलमुक्त घोषित गांवों को एक करोड़ रुपये की विकास निधि देने तथा नक्सलियों की सुरक्षा और पुनर्वास की व्यवस्था सरकार द्वारा सुनिश्चित करने की बात यह स्पष्ट दर्शाती है कि सरकार विकास को तवज्जो देकर नक्सलवाद को खत्म करने की ओर लगातार अग्रसर है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि कुछ समय पहले ही मार्च के अंतिम सप्ताह में ही छत्तीसगढ़ में 50 नक्सलियों ने सरेंडर किया था, उसके बाद सुरक्षाबलों ने एक साथ 13 नक्सलियों को गिरफ्तार किया। जानकारी के अनुसार कुल दो जगहों से नक्सलियों की गिरफ्तारी हुई। जिले के उसूर थाना क्षेत्र के टेकमेटला गांव के पास जंगल से सात नक्सलियों को पकड़ा गया, जबकि बासागुड़ा थाना क्षेत्र से छह नक्सलियों को पकड़ा गया था। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि कुछ समय पहले ही केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर एक एक्स पोस्ट में यह बात कही थी कि, 'नक्सलवाद पर एक और प्रहार! हमारी सुरक्षा एजेंसियों ने सुकमा में एक अभियान के दौरान 16 नक्सलियों को ढेर कर दिया और स्वचालित हथियारों का एक बड़ा जखीरा बरामद किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमने 31 मार्च 2026 से पहले नक्सलवाद को खत्म करने का संकल्प लिया है। हथियार रखने वालों से मेरी अपील है कि हथियार और हिंसा से बदलाव नहीं आ सकता; केवल शांति और विकास ही बदलाव ला सकता है।' वास्तव में नक्सलवाद का समूह नाश करने के पीछे सरकार का मुख्य उद्देश्य नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। कितनी अच्छी बात है कि आज सरकार आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को मुख्यधारा के समाज में वापस लौटने में सहायता के लिये वित्तीय सहायता, व्यावसायिक प्रशिक्षण और सामाजिक पुनर्एकीकरण कार्यक्रम प्रदान कर रही है। यदि हम यहां आंकड़ों की बात करें तो वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित ज़िलों की संख्या 126 (वर्ष 2014) से घटकर मात्र 12 (वर्ष 2024) रह गई है। आंकड़े बताते हैं कि नक्सल-संबंधी घटनाएँ 16,463 (वर्ष 2004-2014) से घटकर 7,700 (वर्ष 2014-2024) हो गई हैं तथा नक्सलवाद के कारण सुरक्षा बलों की हताहतों की संख्या में 73% की कमी आई है, जबकि नागरिक हताहतों की संख्या में 70% की कमी आई है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि नक्सलवाद, माओवादी विचारधारा से प्रेरित वामपंथी उग्रवाद का एक रूप है, जो सशस्त्र विद्रोह (हिंसा और गुरिल्ला युद्ध) के माध्यम से राज्य को समाप्त करने का प्रयास करता है। यदि हम नक्सलवाद की उत्पत्ति की बात करें तो नक्सलवाद शब्द की उत्पत्ति पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी गाँव से हुई है, जहाँ वर्ष 1967 में शोषक ज़मींदारों के खिलाफ किसानों का विद्रोह हुआ था। नक्सलवाद के कारणों की बात करें तो यह असमान भूमि वितरण और ज़मींदारों, साहूकारों एवं बिचौलियों द्वारा शोषणकारी प्रथाओं के कारण बढ़ा।नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और रोज़गार के अवसर जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव भी कहीं न कहीं नक्सलवाद का कारण बना। नक्सलवाद के पीछे जनजातीय अलगाव भी एक प्रमुख कारण रहा है। इतना ही नहीं, सरकारी तंत्र

अनुपस्थिति, बुनियादी सेवाओं की कमी, तथा हिरासत में मृत्यु सहित पुलिस की ज्यादतियों के मामलों ने शिकायतों को और बढ़ा दिया है, जिससे नक्सली विद्रोह को मज़बूती मिली। पाठकों को बताता चलूं कि माओवाद का आदर्श वाक्य, 'शक्ति बंदूक की नली से निकलती है' रहा है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज सरकार द्वारा नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में आर्थिक असमानता को दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं। सामाजिक न्याय, बुनियादी ढांचे के विकास के लिए काम किया जा रहा है, बेरोजगारी, गरीबी को दूर किया गया है। नक्सलवाद की समाप्ति के लिए ऑपरेशन ग्रीन हंट (वर्ष 2009-10), ऑपरेशन समाधान (वर्ष 2017) चलाए गए और वर्तमान में भी अनेक अभियान जारी हैं।सरकार ने नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) और सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) जैसे केंद्रीय अर्धसैनिक बलों को तैनात किया गया है। इतना ही नहीं, सलवा जुडूम की शुरुआत छत्तीसगढ़ में वर्ष 2005 में माओवादियों के खिलाफ़ सरकार द्वारा समर्थित 'लोगों के प्रतिरोध आंदोलन' के रूप में हुई थी। यहां पाठकों को बताता चलूं कि दंतेवाड़ा और बस्तर के आदिवासियों की गोंडी भाषा में, सलवा जुडूम का मतलब शांति मार्च होता है। लेकिन असल में, इसमें माओवादियों से लड़ने के लिए अधिकारियों द्वारा आदिवासी ग्रामीणों को हथियार दिए गए थे। बहरहाल, गौरतलब है कि श्री शाह के बस्तर प्रवास के दरम्यान छत्तीसगढ़ के 86 नक्सलियों ने हैदराबाद में सामूहिक समर्पण किया है ,जिनमें बीस नक्सल महिलाएं भी शामिल हैं। ऊपर जानकारी दे चुका हूं कि पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी गांव से वर्ष 1967 में शुरू किसानों के विद्रोह को नक्सलवाद कहा गया था और इसमें शामिल लोगों को नक्सलवादी या नक्सल कहा जाने लगा। कहना ग़लत नहीं होगा कि वास्तव में इनको मुख्यतया वामपंथी आंदोलनों से जोड़ा जाता रहा है, जो कि माओवादी राजनीतिक विचारधारा का पालन करते हैं। यहां पाठकों को यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि सरकार के अनुसार देश में नक्सल प्रभावित जिले सत्रह से घट कर छह रह गए हैं और छत्तीसगढ़, तेलंगाना, झारखंड और ओडिशा में इनकी (नक्सलवाद) की जड़ें फैली हुई हैं। गौरतलब है कि बिहार के दो जिले बांका और पश्चिमी चंपारण (बगहा) को नक्सल प्रभाव से मुक्त जिला घोषित कर दिया गया है।अब राज्य के आठ जिले ही उनके (नक्सलवाद) प्रभाव वाले रह गए हैं, जिनमें क्रमशः औरंगाबाद, गया, मुंगेर, जमुई, कैमूर, नवादा, लखीसराय और रोहतास शामिल हैं। पाठकों को बताता चलूं कि गया का इमामगंज बिहार का अति नक्सल प्रभावित क्षेत्र माना जाता था। दरअसल, नक्सली समय-समय पर सरकार के प्रति नाराजगी और बुनियादी जरूरतों की विभिन्न मांगों को लेकर उग्र प्रदर्शन करते रहे हैं। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि नक्सलवाद आज धीरे-धीरे समाप्ति की ओर है और आने वाले समय में देश इस समस्या से छुटकारा पा लेगा। कहना ग़लत नहीं होगा कि नक्सली घटनाओं को रोकने के लिए नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं को प्राथमिकता देकर विकास को बढ़ावा देना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहना ग़लत नहीं होगा कि नक्सली प्रभावित क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाएं जैसे बिजली, पानी, शिक्षा और रोजगार के अवसरों को बढ़ाना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियां शिक्षित और सक्षम हो सकें। इतना ही नहीं, जनजातीय समुदायों के अधिकारों की रक्षा के साथ ही साथ उनके साथ संवाद (बातचीत का रास्ता) स्थापित करना बहुत ही आवश्यक है। इसके साथ ही, सुरक्षा बलों को सुदृढ़ करते हुए मानवीय दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए। पारदर्शी शासन और स्थानीय भागीदारी के माध्यम से नक्सलवाद पर स्थायी नियंत्रण संभव है। हिंसक गतिविधियों को रोकने के लिए विशेष टास्क फोर्स का गठन आवश्यक है। नक्सलियों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना अति आवश्यक है। रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और भ्रष्टाचार पर प्रभावी नियंत्रण होगा तो कोई दोराय नहीं कि नक्सलवाद की समस्या पर लगाम नहीं लगाई जा सके। नक्सलियों का पुनर्वास, भूमि सुधार और सामूहिक प्रयास भी जरूरी है।गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी खत्म होगी तो नक्सलवाद अपने आप समाप्त हो जाएगा। इतना ही नहीं नक्सलियों को स्थानीय मदद को रोकने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए। सबसे बड़ी बात नक्सली घटनाओं को पूरी तरह से रोकने के लिए सरकार को सख्त से सख्त कदम उठाने होंगे। इसके साथ ही जनता को भी जागरूक होना होगा।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

हीटवेव: भारत के लिए बढ़ता हुआ सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट

भारत में हीटवेव अब केवल मौसमी असुविधा नहीं, बल्कि एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट बन चुकी है। वर्ष 2024 में हीटवेव की आवृत्ति और तीव्रता रिकॉर्ड स्तर पर पहुँची, विशेषकर उत्तर–पश्चिम भारत में। अत्यधिक तापमान के कारण डिहाइड्रेशन, हीट स्ट्रोक, श्वसन व हृदय संबंधी बीमारियों में वृद्धि हुई है, जिससे बुजुर्गों, बच्चों, निम्न आय वर्ग और बाहरी श्रमिकों पर असमान रूप से प्रभाव पड़ा है। शहरी ताप द्वीप प्रभाव, जल संकट, बिजली कटौती और कार्य उत्पादकता में गिरावट जैसे मुद्दे स्थिति को और जटिल बना रहे हैं। श्रमिकों और महिलाओं को भारी गर्मी में काम करना पड़ता है जिससे स्वास्थ्य और आजीविका दोनों पर असर पड़ता है।

डॉ० सत्यवान सौरभ

गर्मी का मौसम भारत में नया नहीं है, लेकिन हाल के वर्षों में इसकी प्रकृति खतरनाक होती जा रही है। कभी मौसमी बदलाव माने जाने वाली हीटवेव अब हमारे शहरों और गांवों में एक नियमित आपदा का रूप ले चुकी है। वर्ष 2024 में उत्तर-पश्चिम भारत में 181 हीटवेव दिन दर्ज किए गए — जो अब तक का सबसे ऊंचा आँकड़ा है। यह संख्या केवल मौसम के आंकड़े नहीं हैं; यह जीवन, स्वास्थ्य और आजीविका पर मंडराते खतरे की स्पष्ट चेतावनी है। हीटवेव, सामान्य तापमान सीमा से अधिक अत्यधिक गर्मी की लंबी अवधि है, जो जलवायु परिवर्तन के कारण भारत में और भी भीषण हो गई है। वर्ष 2024 में भारत में कई राज्यों में 554 हीटवेव के दिन दर्ज किए जिसमें अधिकतम तापमान 47 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चला गया। इस वृद्धि ने गर्मी से संबंधित बीमारियों को बढ़ा दिया है, जो बुजुर्गों, मजदूरों और कम आय वाले समुदायों को असमान रूप से प्रभावित कर रहा है।

हीटवेव और स्वास्थ्य: छाया की कमी, संकट की अधिकता

अत्यधिक गर्मी का सीधा प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है। डिहाईड्रेशन, हीट-स्ट्रोक, हृदयगति का तेज़ हो जाना, और सांस लेने में तकलीफ — ये सब हीटवेव के साथ आने वाली आम समस्याएं हैं। बच्चे, बुजुर्ग और बीमार लोग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। झारखंड में इस साल बाल चिकित्सा वार्ड में डिहाईड्रेशन के मामलों में असामान्य वृद्धि दर्ज की गई। तेज शहरीकरण और हरियाली की कटौती ने शहरों को ताप द्वीप में बदल दिया है। दिल्ली जैसे शहरों में रात का तापमान भी सामान्य से 4-5 डिग्री अधिक बना रहता है। झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले परिवारों के लिए यह स्थिति कष्टदायक से जानलेवा तक हो सकती है।

हीटवेव और जीवन व्यवस्था पर असर

गर्मी के कारण स्कूल बंद होते हैं, पानी की सप्लाई बाधित होती है, बिजली कटौती आम हो जाती है। गरीब और मेहनतकश वर्ग, जिनके पास न ठंडी जगह होती है, न संसाधन, सबसे अधिक संकट में होते हैं। हीटवेव केवल सेहत का नहीं, आर्थिक उत्पादन का भी सवाल बन गई है। निर्माण श्रमिक, किसान और सड़क विक्रेता जैसी बाहरी कामकाज से जुड़े लोगों की उत्पादकता गिर रही है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार, हीटवेव के कारण भारत में कार्य घंटों में 2.2% की गिरावट आ सकती है, जो GDP में 2.8% तक की हानि बन सकती है।

सब पर असर एक जैसा नहीं होता

हीटवेव की मार सभी पर एक समान नहीं होती। जिनके पास एयर कंडीशनर, स्वच्छ जल और स्वास्थ्य सेवाएं नहीं हैं, वे अधिक सुभेद्य होते हैं। ग्रामीण महिलाएं जो जल लाने या खेतों में काम करती हैं, उन्हें दोगुना खतरा होता है। शहरों के गरीब बस्तियों में रहने वाले परिवारों के लिए हीटवेव असमानता का सबसे तेज़ रूप बन जाती है। हीटवेव से लड़ाई सिर्फ एक मौसमीय अलर्ट से नहीं लड़ी जा सकती। इसके लिए पूर्व चेतावनी प्रणाली, शहरी नियोजन, स्वास्थ्य सेवा का विस्तार और सामुदायिक भागीदारी जरूरी है। अहमदाबाद, सूरत और भुवनेश्वर जैसे शहरों ने हीट एक्शन प्लान अपनाकर यह दिखाया है कि नियोजित प्रयासों से मृत्यु दर में कमी लाई जा सकती है। सूरत में 'कूल रूफ' योजना ने झुग्गियों में तापमान को 3–4 डिग्री कम किया। भुवनेश्वर में भीड़ वाले बाज़ारों में पेयजल स्टॉल और छाया ढांचे लगाए गए।

हीट गवर्नेंस: अब ज़रूरत है कानूनी और नीतिगत ढाँचे की

सटीक ताप पूर्वानुमान और सार्वजनिक चेतावनियाँ स्वास्थ्य जोखिमों को कम करने में मदद करती हैं। अहमदाबाद हीट एक्शन प्लान (2013) ने कलर–कोडेड अलर्ट पेश किए जिससे निवासियों और अस्पतालों को अत्यधिक तापमान वाली स्थिति के लिए तैयार होने में मदद मिली। अस्पतालों में कूलिंग स्पेस बनाना, स्वास्थ्य पेशेवरों को प्रशिक्षित करना और पर्याप्त चिकित्सा आपूर्ति सुनिश्चित करना गर्मी से संबंधित मृत्यु दर को कम कर सकता है। ठाणे में हीटस्ट्रोक के मामलों पर नजर रखने और तत्काल चिकित्सा मध्यक्षेप प्रदान करने के लिए रियलटाइम निगरानी शामिल है। कूलिंग सेन्टर्स बनाना, ओरस पैकेट वितरित करना, और जल की उपलब्धता सुनिश्चित करना, निम्न आय वाले समुदायों की सुरक्षा में मदद करता है। भुवनेश्वर में गर्मी से होने वाली थकावट को रोकने के लिए भीड़भाड़ वाले बाजारों में अस्थायी छाया संरचनाएँ और जलयोजन स्टेशन स्थापित किए गए थे। हरित आवरण का विस्तार, रिफ्लेक्टिव रूफ्स को बढ़ावा देना, और जलाशयों का निर्माण करके शहरी तापमान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। सूरत ने झुग्गी-झोपड़ियों में कूल-रूफ पहल शुरू की, जिससे घर के अंदर का तापमान 3-4 डिग्री सेल्सियस कम हो गया, जिससे हजारों निवासियों को लाभ हुआ। जिस तरह दिल्ली-NCR में वायु प्रदूषण के लिए GRAP (Graded Response Action Plan) लागू होता है, वैसे ही हीटवेव के लिए भी स्वचालित, डेटा-आधारित नीति ढाँचे की जरूरत है।

भविष्य की गर्मी से मुकाबला आज की नीति से

हीटवेव केवल गर्मी नहीं है, यह एक चेतावनी है — हमारे शहरों की संरचना, हमारी आर्थिक नीतियों और हमारे स्वास्थ्य सिस्टम की परीक्षा। भारत को अब हीटवेव को 'प्राकृतिक आपदा' मानकर, उसके अनुसार तैयारी करनी होगी। जलवायु परिवर्तन अब भविष्य की चिंता नहीं है — यह वर्तमान की हकीकत है। और इस हकीकत से लड़ने के लिए हमें चाहिए नीति, नवाचार और न्याय। तभी हम उस गर्म भविष्य को थोड़ा और सहनीय बना सकेंगे, और शायद थोड़ा ठंडा भी। हीटवेव के बढ़ते खतरे को कम करने के लिए हीट हेल्थ गवर्नेंस को मजबूत करना महत्त्वपूर्ण है। एक सक्रिय दृष्टिकोण, प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली, शहरी ताप कार्रवाई योजनाओं, प्रत्यास्थ बुनियादी ढाँचे और सामुदायिक भागीदारी को एकीकृत करके जीवन की रक्षा की जा सकती है। जलवायु परिवर्तन के कारण अत्यधिक गर्मी बढ़ रही है, इसलिए सहयोगात्मक नीति निर्माण, वैज्ञानिक नवाचार और संधारणीय शहरी नियोजन के माध्यम से दीर्घकालिक प्रत्यास्थता का निर्माण किया जा सकता है।

पुलिस यूनियन ने बीजेपी बरिष्ठ बिधायक जयनारायण मिश्रा की गिरफ्तारी की मांग की

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राज्य पुलिस एसोसिएशन ने भाजपा विधायक जयनारायण मिश्रा की गिरफ्तारी की मांग की है। संघ के कार्यकारी सचिव उमेश चंद्र साहू ने कहा कि संघ ने जयनारायण द्वारा पुलिस अधिकारी को धमकाने की घटना की निंदा की है और कहा है कि इस घटना के लिए उन्हें गिरफ्तार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि विधायक का ऐसा व्यवहार अस्वीकार्य है। अगर ऐसा हुआ तो जनता के मन में कानून का कोई डर नहीं रहेगा। विधायक की धमकियां शर्मनाक और दुर्भाग्यपूर्ण हैं। यूनियन ने डीजीपी से मांग की है। हम इंतजार कर रहे हैं कि डीजीपी क्या कदम उठाते हैं। डीजीपी की पहल के आधार पर यूनियन आगे का निर्णय लेगी। दूसरी ओर, वरिष्ठ कांग्रेस नेता सुर राउतराय ने जयनारायण की धमकी पर प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्होंने कहा, जय नारायण मंत्री न बन पाने से व्यथित हैं। हालाँकि, इस मुद्दे पर जयनारायण की राय नहीं मिल सकी।

ढेंकानाल में बरा दिवस बड़ी धूमधाम से पलित हुआ

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : 7 अप्रैल बरा दिवस है। ढेंकनाल जिला अपने बरा के लिए प्रसिद्ध है। लेकिन यह ढेंकनाल बरा अब सभी जिलों में फैल गया है। ट्विन सिटी की सभी नाश्ते की दुकानों पर पहला भोजन। यहां तक कि हर घर में टिन के डिब्बों ने अपनी जगह ले ली है। शादी की तैयारी करना इतना मुश्किल नहीं है। इसे बीजों को पीसकर और उसमें थोड़ी सूजी मिलाकर तैयार किया जाता है। कुछ लोग बीरा बाटम में चावल भी मिलाते हैं। मक्खन पिघलने के बाद, प्याज, मिर्च और अदरक को मिलाकर अधिक स्वादिष्ट घोल तैयार किया जाता है। बरा का स्थान रोजमर्रा के खाद्य पदार्थों की सूची में है। हालाँकि, बारा की पहचान ढेंकनाल से है। बारा इस जिले में 150 वर्षों से अधिक समय से प्रसिद्ध है। ढेंकनाल शहर में छोटे से लेकर बड़े होटलों तक विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्रकार के बरा तैयार किए जाते हैं। लोग नाश्ते से लेकर शाम तक बारा का आनंद लेते हैं। हालांकि, जीरा और अदरक मिलाकर बनाए गए बरा का स्वाद नियमित बरा से थोड़ा अलग होता है। अभी भी इस उत्पाद की मांग बहुत अधिक है। इससे न केवल भोजन उपलब्ध हुआ है, बल्कि कई लोगों को अच्छा रोजगार भी मिला है। आज बरा दिवस पर सभी ने जगह-जगह बरा खाकर इस दिन को मनाया।

केंद्रीय गृह सचिव पोस्तो-अफीम खेती, विपणन पर भी जायजा लेगे ?

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, केंद्रीय गृहसचिव कल झारखंड आयेगे वे पदार्थों का अवैध व्यापार रोकने के लिए किये गये विशेष पहल और जागरूकता अभियान सहित अन्य बिंदुओं पर चर्चा कर सकते हैं. इसके लिए झारखंड गृह विभाग की ओर से सभी जिलों के डीसी और एसपी को पत्र लिखा गया है.

पत्र में बताया गया है कि जिला स्तर पर मादक पदार्थों के अवैध व्यापार को लेकर की गयी कार्रवाई पर परिचर्चा की जायेगी. इसके लिए जिला स्तर पर एक जनवरी 2024 से लेकर अभी तक की गयी कार्रवाई के संबंध में गृह विभाग ने रिपोर्ट मांगी है. पुलिस के रिकॉर्ड के अनुसार वर्ष 2024-25 में पुलिस ने बड़े पैमाने पर अफीम की खेती को नष्ट करने की कार्रवाई की. 2025 में फरवरी माह तक करीब 20 हजार एकड़ में अफीम की फसल नष्ट की गयी.लेकिन पिछले चार वर्षों के दौरान की गयी खेती और इसके नष्ट करने के आंकड़ों से स्पष्ट है कि राज्य के आठ जिलों में अफीम की खेती का क्षेत्रफल कार्रवाई होने के बाद भी बढ़ा है तो किसके सह पर ?

झारखंड के वनों मे अगर अफीम खेती होती है तो वन विभाग का क्रिया कलाप पर सरकार मौन क्यों रही, कौन पदाधिकारी किसके सिफारिश से पदस्थापित किये जाते इन इलाकों में ? सरायकेला खरसावां जिले में जंगलों से बड़े पैमाने पर 70 चोरी की मोटरसाइकिल अगर बरामद की जाती एवं कुछ गांव में अचानक खपडेल के मकान पक्के बन जाते है वे तो साधारण व्यापारी हैं पर मिडिल मैन जो राष्ट्रीय - अन्तर्राष्ट्रीय पैडलरों को जोड़ देता तो क्यो विपणनकारी के पास पुलिस नहीं पहुंच पाई आज तक ? संबंधित पुलिस थानों की भूमिका कैसी रही होगी क्या इसकी जानकारी भी केंद्रीय गृह सचिव लेंगे ?सबसे बड़ी बात विगत कुछ वर्षों से आदित्यपुर इलाका नार्कोटिक्स पदार्थ विक्रय का झारखंड में सर्वाधिक चर्चित स्थल रहा है । जिसे स्वयं केन्द्रीय गृह मंत्री इस दिशा में सख्त है एवं संबंधित केन्द्रीय विभागों को भी पता है तो सचिव को भी जानकारी हो सकती है !

कोरेमुला स्थित सीरवी समाज मंदिर (बडेर) के तत्वावधान में आयोजित चैत्र नवरात्रि महोत्सव के तहत रविवार को हवन का आयोजन किया गया। शुभ मुहूर्त में पूजा–अर्चना कर श्रद्धालुओं ने मंत्रोच्चार के साथ हवन में पूर्णाहुति दी। अवसर पर उपस्थित अध्यक्ष कालूराम काग , पोकरराम काग,राजुराम लचेटा,नगाराम काग, महिला मंडल कंचन देवी काग , विमला देवी लचेटा,भीकी देवी काग सुनीता काग व पंडित बाबूलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे।

गाजुलारामराम स्थित भोलेनाथ ग्रुप द्वारा श्रीराम नवमी गाजुलारामराम सर्कल के समीप छांछ का वितरण किया गया, जिसमें भोलाराम गेहलोत, सेसाराम पंवार, मंगलराम पंवार, बंशीलाल प्रजापति, हरिसिंह राठौड़, दुर्गाराम मुलेवा , अशोक हाम्बड़, भुराराम सैणचा , ओमप्रकाश सैणचा , धर्माराम माली, जोराराम सोलंकी, मोहनलाल बर्फा,सेसाराम परिहारिया, दिनेश सेपटा का विशेष सहयोग रहा। अवसर पर भोलेनाथ ग्रुप व अन्य उपस्थित थे।

विश्वप्रसिद्ध सरायकेला छऊ आध्यात्मिक पूजन के साथ आरंभ

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला। विश्वप्रसिद्ध सरायकेला छऊ नृत्य आयोजन पूर्व आध्यात्मिक अनुष्ठान अखाड़ा साल पूर्व दिशा श्मशान समीप भैरव पूजन का श्री गणेश हुआ साथ ही सरायकेला मांजना घाट में आज शाम पवित्र शुभघट का आगमन हुआ । वैसाख मास आरंभ ओड़िया नव वर्ष हेतु यथा बार-नक्षत्र , ऋतु , दिन , सभी तिथियों, राशियों का पूजन ओड़िया जनमानस नववर्ष संक्रांति जिसे जगन्नाथ संस्कृति में पणा संक्रांति कहा जाता उस निमित्त चार युगों को प्रदर्शित करता चार घट शेष दिन का का शुभारंभ पूजन आरंभ हुआ ।

रविवार को विधिवत पूर्व दिशा अखाड़ा साल मे भैरव जी का पूजन संपन्न हुआ । जहां कार्यकारी एस डी ओ सरायकेला निवेदिता नियती तथा सत्येन्द्र कुमार उपस्थित रहे तथा सत्येन्द्र कुमार पूजन कर्ता के रूप में पूजा अर्चना की । यह पूजन एक सांकेतिक उत्सव होता है ओडिया पाइक संस्कृति का । जब कलिंग की पाइक सेनाऐं अपने खंडायत सैन्य नायको के अगुवाई में युद्ध में जाया करते थे तब अपने तलवारों में शत्रुओं को समन करने हेतु इन्ही श्मशान में तलवारों में भैरव -भैरवी आदि उग्र देवता को स्थान देने हुए आवाहन किया करते थे । आज युद्ध तो नहीं होते पर कभी यहां की तलवारों की पूजन सदैव विदेशों में चर्चित रहा । आज से तीन दशक पूर्व तक अनेक देश, एम्बेसी , मंत्रालय समेत प्रधानमंत्री गण भी नृत्य के साथ इन पूजन के विषय में जानने हेतु लालयित रहते थे । तब सरायकेला कला के मामले में सुर्खियों में होता था । इधर सोमवार शाम मांजना घाट से छऊ आरंभ हो कर शुभघट का आगमन के साथ लोगों ने दर्शन किया । यह आगामी चार घटों एवं वर्ष का शुभारंभ का प्रतीक है ।

आत्म-रक्षा के संस्कार दीजिए...!

कन्याओं को ऐसे ही न पूजिए।
आत्म–रक्षा के संस्कार दीजिए।
बेटियों साथ हो कभी छेड़छाड़,
चेतना जगाने की ले लो आड।
शिक्षा का स्तर बढ़ा यू बढ़ाओ,
न हो यौन शोषण साथ आओ।

कन्याओं को ऐसे ही न पूजिए।
आत्म–रक्षा के संस्कार दीजिए।
खूब जिमाओ, वस्त्रादि दो भेंट,
मानसिक व शारीरिक करों सेट।
कराओ अवगत उन्हें गुड–बेडटच,
पापी व बलात्कारी न जाये बच।

कन्याओं को ऐसे ही न पूजिए।
आत्म–रक्षा के संस्कार दीजिए।
कन्याओं में ऐसी शक्ति जगाएँ,
अधर्मी चाहकर भी छू ना पाएँ।
पेरेंट्स पुत्रों को ये सबक सिखाएँ,
शीलभंग का उन्हें भी डर बैठ जाएँ।

संजय एम तराणेकर

वक्फ संशोधन अधिनियम का क्रमबद्ध विकास

गजेंद्र सिंह

2 अप्रैल 2025 को, केंद्र सरकार ने वक्फ संपत्ति प्रबंधन और शासन में सुधार की आवश्यकता पर एक वर्ष की गहन बहस और चर्चाओं के बाद संसद में वक्फ संशोधन अधिनियम पेश किया। 12 घंटे से अधिक के गहन विचार-विमर्श के बाद, विधेयक 288 मतों के पक्ष में और 232 मतों के विरुद्ध पारित हुआ।

भारत में वक्फ शासन का विकास विभिन्न कानूनी लड़ाइयों और प्रणालीगत चुनौतियों से प्रभावित रहा है। वक्फ संपत्ति प्रबंधन से जुड़े दो महत्वपूर्ण मामले इस प्रणाली की समस्याओं को उजागर करते हैं। इमरान कुरैशी बनाम उत्तर प्रदेश वक्फ बोर्ड (2016) मामले में, एक सामाजिक कार्यकर्ता ने लखनऊ में मस्जिद संपत्तियों की निजी डेवलपर्स को अवैध बिक्री का खुलासा किया। इसी प्रकार, फातिमा बी बनाम कर्नाटक वक्फ बोर्ड (2022) मामले में, एक 70 वर्षीय महिला को वक्फ संपत्ति पर स्थित किराए के घर से बेदखल कर दिया गया क्योंकि संपत्ति को बिना किसी पूर्व सूचना के नीलाम कर दिया गया था।

ये घटनाएं वक्फ संपत्तियों से जुड़े व्यापक मुद्दों को दर्शाती हैं जिनमें अतिक्रमण, भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन शामिल हैं। इन समस्याओं के समाधान और वक्फ संपत्तियों के मूल उद्देश्य की सुरक्षा हेतु कई विधायी संशोधनों की आवश्यकता महसूस की गई जिसके परिणामस्वरूप वक्फ संशोधन अधिनियम पारित किया गया।

भारत में वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन और जवाबदेही को मजबूत करने के लिए कानूनी ढांचा दशकों से कई संशोधनों के माध्यम से विकसित हुआ है। वक्फ अधिनियम, 1954 पहला कानून था जिसने संपत्तियों के प्रशासन के लिए राज्य वक्फ बोर्डों की स्थापना की, लेकिन प्रशासनिक अक्षमताओं के कारण इसकी प्रभावशीलता सीमित रही। 1964 के संशोधन का उद्देश्य वक्फ संपत्तियों के दुरुपयोग को रोकने के लिए वक्फ बोर्डों की शक्तियों को बढ़ाना था। इसके बाद, 1995 के महत्वपूर्ण संशोधन ने वक्फ बोर्डों की भूमिकाओं को अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित किया, राष्ट्रीय निगरानी के लिए केंद्रीय वक्फ परिषद (CWC) की स्थापना की और वक्फ संपत्तियों के दस्तावेज़ीकरण को अनिवार्य बनाया। 2013 के संशोधन ने इस ढांचे को और मजबूत करते हुए वक्फ संपत्तियों को राजस्व रिकॉर्ड में पंजीकृत करना अनिवार्य कर दिया, अतिक्रमण के खिलाफ सख्त प्रावधान जोड़े, और वक्फ बोर्डों को नियमों को अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सशक्त बनाया।

सबसे हालिया और व्यापक सुधार, वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2025, ने कानून को UMEED अधिनियम के रूप में पुनःब्रांड किया। यह कानून वक्फ संपत्ति रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण, प्रशासन में पारदर्शिता बढ़ाने, अतिक्रमण मामलों के लिए विशेष न्यायाधिकरण स्थापित करने और यह सुनिश्चित करने पर केंद्रित है कि वक्फ से उत्पन्न आय मुस्लिम समुदाय के सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए उपयोग हो। ये संशोधन वक्फ संपत्तियों के कुशल प्रबंधन और उनके मूल उद्देश्य की रक्षा के लिए एक ठोस आधार प्रदान करते हैं।

कई महत्वपूर्ण मामलों ने वक्फ शासन में कमियों को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिससे महत्वपूर्ण संशोधनों का मार्ग प्रशस्त हुआ है। तमिलनाडु वक्फ बोर्ड बनाम निजी डेवलपर्स (2016) में, एक जांच से पता चला कि चेन्नई में प्रमुख वक्फ भूमि को निजी डेवलपर्स को बहुत कम मूल्य पर पट्टे पर दिया गया था जिससे समुदाय को वित्तीय नुकसान हुआ। । हैदराबाद वक्फ भूमि घोटाला (2017) में 800 एकड़ से अधिक वक्फ भूमि से जुड़े एक बड़े धोखाधड़ी का खुलासा हुआ, जहां भूमि माफिया और भ्रष्ट वक्फ बोर्ड सदस्यों के बीच मिलीभगत का पता चला। इस घोटाले के कारण स्वतंत्र ऑडिट और ऑनलाइन रिकॉर्ड रखने की मांग हुई । पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय वक्फ संपत्ति निर्णय (2020) में, अदालत ने ऐतिहासिक साक्ष्य के आधार पर कई विवादित संपत्तियों को वक्फ भूमि घोषित करते हुए वक्फ बोर्ड के पक्ष में फैसला सुनाया। इससे विवाद समाधान के लिए विशेष न्यायाधिकरणों की आवश्यकता उजागर हुई ।

न्यायिक हस्तक्षेपों ने भी वक्फ संपत्ति शासन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। वक्फ भूमि अतिक्रमण पर सुप्रीम कोर्ट का निर्देश (2021) कई याचिकाओं के जवाब में आया और राज्य सरकारों को वक्फ भूमि पर अवैध अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई करने का निर्देश दिया। फैसले ने इस बात पर जोर दिया कि वक्फ संपत्तियों का उपयोग समुदाय के कल्याण के लिए किया जाना चाहिए । एक अन्य प्रभावशाली मामला, हाजी अली दरगाह केस (मुंबई, 2016) में एक वक्फ संपत्ति पर लिंग-आधारित प्रतिबंध शामिल थे, जहां महिलाओं को दरगाह के में प्रवेश से मना किया गया था। एक जनहित याचिका (PIL) ने इस प्रतिबंध को चुनौती दी जिससे बॉम्बे हाई कोर्ट ने लिंग समावेशिता के पक्ष में फैसला सुनाया।

ऐतिहासिक मामलों ने भी वर्षों से वक्फ शासन नीतियों को आकार दिया है। डॉ. सैयदना ताहिर सैफुद्दीन बनाम बॉम्बे राज्य (1962) में, सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि धार्मिक नेता मनमाने ढंग से व्यक्तियों को समुदाय-प्रबंधित वक्फ संपत्तियों तक पहुंचने से इनकार नहीं कर सकते, जिससे सामुदायिक अधिकारों की कानूनी सुरक्षा मजबूत हुई। बेगम नसीम बानो बनाम वक्फ न्यायाधिकरण (1999, उत्तर प्रदेश) में एक विधवा को वक्फ भूमि पर उसके पैतृक घर से बेदखल कर दिया गया था और न्यायाधिकरण ने वक्फ बोर्ड के पक्ष में फैसला सुनाया जिससे समुदाय-प्रथम पट्टा नीतियों की आवश्यकता पर चिंता बढ़ी।

UMEED अधिनियम पारदर्शिता, जवाबदेही और समुदाय सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। दशकों के कुप्रबंधन, कानूनी जटिलताओं और सरकारी हस्तक्षेपों से सीखे गए सबक इस नए ढांचे को और अधिक प्रभावी बनाते हैं, जिससे वक्फ संपत्तियों की सुरक्षा और मुस्लिम समुदाय के सामाजिक-आर्थिक उत्थान को सुनिश्चित किया जा सके। डिजिटलीकरण, सख्त ऑडिट, न्यायिक सुधार और समावेशी नीतियों के माध्यम से, यह अधिनियम वक्फ संपत्तियों के सही उपयोग, सतत विकास और व्यापक सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।

सामाजिक चिंतक एवं सामाजिक निवेश

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी–18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए–4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली– 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023